नवदुर्गा शक्ति विशेषांक

फरवरी 2010

मूल्य : 24/-

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान



कैसे करें त्राटक

तांत्रीक उपकरण

पापनाशिनी - पापांकुशा

कुण्डलिनी जागरण - इबोपी

नवरात्रि विस्तृत पूजन

A Monthly Journal

॥ ऐं ह्रीं क्लीं चा मुं डा यै वि च्चे ॥

एक विलक्षण साधना जो वर्ष में चार बार कर सकते हैं

नवार्ण मंत्र साधना

क्योंकि नवार्ण मंत्र तो मंत्र-महाधिराज है

शक्ति-साधना का तीव्रतम तेजस्वी मंत्र

यह मंत्र मात्र अपने भीतर विराट शक्तियों को समेटे हुए है। जिस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु, शिव के मुख से निकली अग्नि एकाकार होकर विराट शक्ति पुंज बन गई और उसने दुर्गा महाकाली का स्वरूप धारण कर दिया, इसी प्रकार शक्ति के सभी मंत्रों का पुंजीभूत स्वरूप 'नवार्ण मंत्र' है, इसके प्रत्येक अक्षर में शक्ति के एक-एक रूप का विवेचन है। नवार्ण मंत्र जपने मात्र से शक्ति जाग्रत होती है, शरीर में ऊष्मा व्याप्त होने लगती है, रोम-रोम जाग्रत होने लगता है। ऐसे महामंत्र की साधना कभी भी करें, शक्ति का आह्वान होगा ही -

॥ ऐं ह्रीं क्लीं चा मुं डा यै वि च्चे ॥

भगवती मां, काली का स्वरूप, देखने में भंयकर हैं लेकिन यह भंयकर स्वरूप अपने भक्तों को भयभीत करने के लिये नहीं है। उनका काला स्वरूप अज्ञान, अंधकार को मिटाकर प्रकाश देने वाला है। मां काली सारे दुःख, दर्द, पीड़ा, अभाव को दूर कर प्रसन्नता एवम् अमृत्यु को प्रदान करने वाली देवी हैं जो सारे दुःखों का नाश कर सुख को उत्पन्न करती हैं, अविद्या का नाश कर परब्रह्म से साक्षात्कार कराती हैं, ज्ञान का निरन्तर प्रकाश देती हैं। इसीलिये महाकाली साधना शीघ्र प्रभावकारी साधना है और उसके लिए नवार्ण मंत्र साधना सर्वश्रेष्ठ कही गयी है।

इसीलिये विद्वानों ने कहा है, कि चाहे व्यक्ति शिव-उपासक हो या विष्णु-उपासक, वह चाहे किसी भी धर्म का मानने वाला हो, नवार्ण साधना तो उसके जीवन की उन्नति के लिए अनुकूल एवं सुखदायक है ही। इसके नवार्ण अर्थात् नवअक्षर अपने आप में विराट शक्ति पुञ्ज लिये हुए हैं। '**गुप्त चामुण्डा तंत्र**' में बताया गया है, कि नवार्ण मंत्र के नव अक्षरों को सिद्ध करने पर नौ लाभ तुरन्त अनुभव किये जा सकते हैं।

'**गुप्त चामुण्डा तंत्र**' के अनुसार नवार्ण मंत्र के ये अक्षर या नौ बीज तथा उनसे सम्बन्धित फल-प्राप्ति इस प्रकार से है-

१. ऐं - यह बीज नवार्ण मंत्र का पहला और **सरस्वती बीज** है, इसको सिद्ध करने पर स्मरण शक्ति तीव्र होती है।

२. ह्रीं - यह **लक्ष्मी बीज** है, जो कि सम्पूर्ण विश्व में प्रचलित है। इस बीज की साधना करने से या इसका मंत्र-जप करने से दरिद्रता दूर होती है, निरन्तर आर्थिक उन्नति होने लगती है।

३. क्लीं - यह **काली बीज** है, शत्रुओं का संहार करने, शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने, मुकदमे में सफलता प्राप्त करने और मन के विकारों, काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए यह महत्वपूर्ण बीज है।

४. चा - यह **सौभाग्य बीज** है। सौभाग्य की रक्षा, पति की उन्नति, पति के स्वास्थ्य और पति की पूर्ण आयु के लिए यह अपने आप में अद्वितीय बीज है।

५. मुं - यह **आत्म मंत्र** है। आत्मा की उन्नति, कुण्डलिनी जागरण, जीवन की पूर्णता और अन्त में ब्रह्म से पूर्ण साक्षात्कार के लिए यह मंत्र सर्वाधिक उपयुक्त एवं अद्वितीय है।

६. डा - यह **सन्तान सुख बीज** है। संतान के स्वास्थ्य और उसकी दीर्घायु के लिए इसी बीज मंत्र का सहारा लिया जाता है।

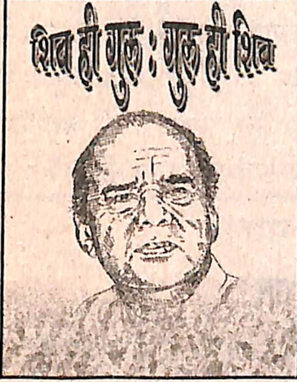
७. यै - यह **भाग्योदय बीज** है, जो साधक निरन्तर इस बीज मंत्र का जप करता रहता है, उसका शीघ्र भाग्योदय हो जाता है और वह अपने जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण सफलता प्राप्त कर लेता है।

आनो भ्रदाः क्रतवो यन्तु विश्वतः
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति, प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक पत्रिका

आत्म - प्रकाश

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥





सद्गुरुदेव

स्तम्भ

वर्ष 30 अंक 02
फरवरी 2010 पृष्ठ 88



साधना





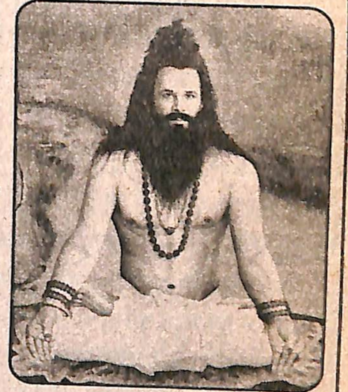
विशेष

पूजन

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

प्रधान सम्पादक
श्री नन्द किशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक
श्री कैलाशचन्द्र श्रीमाली
श्री अरविन्द श्रीमाली



प्रकाशक एवं स्वामित्व
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
द्वारा
सुदर्शन प्रिन्टर्स
487/505, पीरागढ़ी,
रोहतक रोड़, नई दिल्ली-87
से मुद्रित तथा
सिद्धाश्रम 306 कोहाट एन्क्लेव,
पीतमपुरा, नई दिल्ली से प्रकाशित

मूल्य (भारत में)
एक प्रतिः 24/-
वार्षिकः 258/-

:: सम्पर्क ::

सिद्धाश्रम, 306 कोहाट एन्क्लेव, पीतमपुरा, दिल्ली-110034, फोनः 011-27352248, टेली फैक्सः 011-27356700
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342031 (राज.) फोनः 0291-2432209, टेली फैक्सः 0291-2432010
WWW address – **http:/www.siddhashram.org** E-mail add. – **mtyv@siddhashram.org**

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'मंत्र–तंत्र–यंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क–कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायं, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु–संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद–विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी सम्पादक को किसी भी प्रकार का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकार के वाद–विवाद में जोधपुर–न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय से मंगवाने पर हम अपनी तरफ से प्रामाणिक और सही सामग्री अथवा यंत्र भेजते हैं, पर फिर भी उसके बाद में, असली या नकली के बारे में अथवा प्रभाव होने या न होने के बारे में हमारी जिम्मेवारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मंगवायें। सामग्री के मूल्य पर तर्क या वाद–विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 258/– है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता–असफलता, हानि–लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकार की कोई भी आपत्ति या आलोचना स्वीकार्य नहीं होगी। गुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की जिम्मेवारी वहन नहीं करेंगे।

☆ प्रार्थना ☆

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतिधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्॥

'जो पुण्यात्माओं के घरों में स्वयं ही लक्ष्मी रूप से, पापियों के यहाँ दरिद्रता रूप से, शुद्धान्तःकरण वाले पुरुषों के हृदयों में बुद्धि रूप से, सत्पुरुषों में श्रद्धारूप से तथा कुलीन मनुष्य में लज्जा रूप से निवास करती हैं, उन भगवती को हमलोग नमस्कार करते हैं। देवि! विश्व का सर्वथा पालन कीजिये।



गुरु आज्ञा पालन परमो धर्म



विद्यालय सत्र पूरा होने पर आचार्य ने शिष्यों की परीक्षा लेनी चाही। सभी शिष्यों के हाथ में बांस की टोकरियां थमाते हुए आचार्य ने कहा, ''इन में नदी का जल भर कर लाना है, और उस से विद्यालय भवन की सफाई करनी है''।

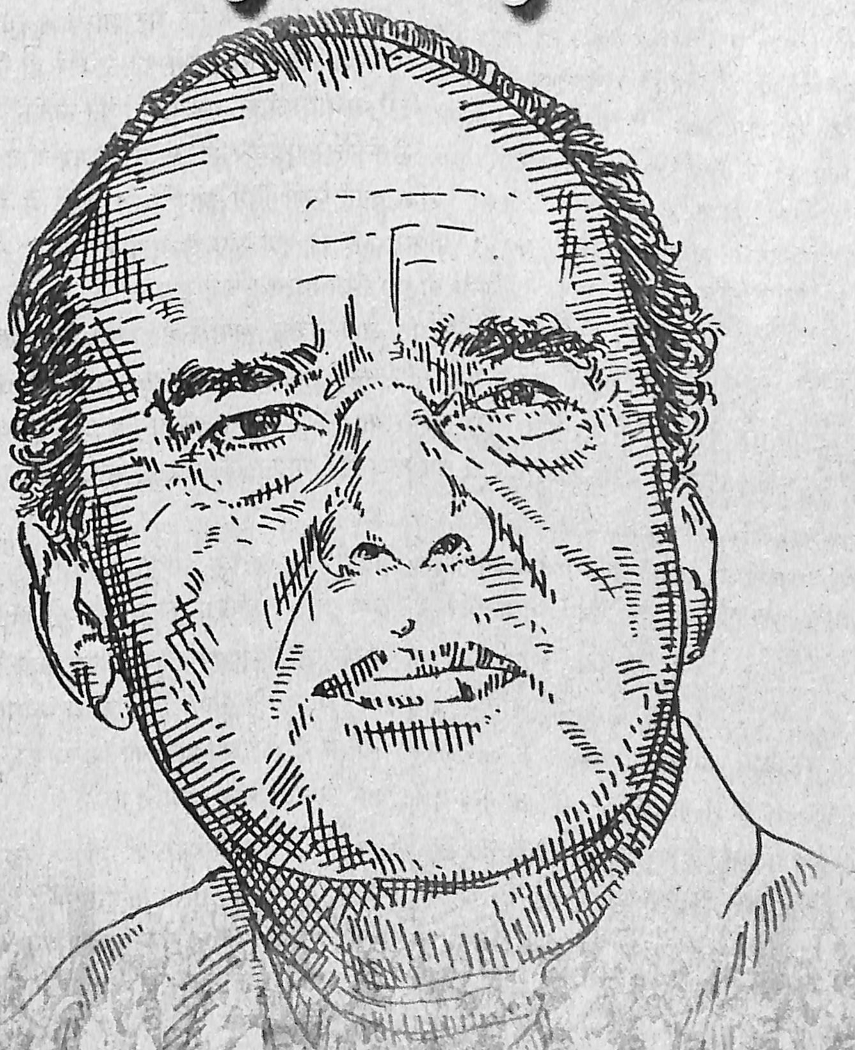
शिष्य आचार्य की आज्ञा सुन कर चकरा गए कि बांस की टोकरी में जल लाना कैसे संभव होगा, लेकिन सभी ने टोकरियां उठाई, नदी पर गए, प्रयास किया, किन्तु बांस की टोकरियों के छिद्रों में से जल रिस जाता।

हताश शिष्यों ने लौट कर गुरुदेव को वस्तुस्थिति बताई, किन्तु एक छात्र अपने कर्त्तव्य के प्रति गंभीर था। उस के मन में गुरु के प्रति पूर्ण निष्ठा और आस्था थी। वह यह सोच बारबार जल भरता कि गुरुदेव ने ऐसी आज्ञा दी है तो यों ही नहीं दी होगी, उन के कहे के पीछे जरूर कोई अर्थ होगा। प्रातः से सायं तक वह जल ही भरता रहा।

जल में बांस की टोकरी के रहने से बांस की तीलियां फूल चुकी थी और छिद्र बंद हो चुके थे, अतः शाम को वह टोकरी में जल ले कर विद्यालय पहुंचा ।

अब गुरु ने शिष्यों को इकट्ठा किया और परिश्रम का महत्व बतलाते हुए कहा, ''कार्य तो मैं ने तुम्हें अकल्पनीय और दुरूह ही सौंपा था, किन्तु विवेक, धैर्य, लगन, निष्ठा तथा निरंतर प्रयास से कठिन कार्य भी संभव हो सकता है''।

शिष्य ही गुरु : गुरु ही शिष्य





गुरु ही साक्षात् शिव का रूप होते हैं, गुरु के माध्यम से आत्मसाक्षात्कार एवं साधनाओं में पूर्णता तथा जीवन में पूर्ण आनन्द संभव है, शिवरात्रि पर आपके जीवन को नयी दिशा देते हुए आने वाला जीवन किस प्रकार जिएं, इन्हीं तथ्यों को स्पष्ट करता सद्गुरुदेव का यह प्रेरणात्मक प्रवचन -

आनंद रूप चिंत्यं महितं वदेयं।
नृत्योंन्वतायं परमं स्वरूपं
ज्ञानार्थ चिंत्यमपरंमहितान् विहंस
शिवत्व रूपं परमं पदेयं।

भृर्तहरि ने इस श्लोक के माध्यम से अपना चिंतन स्पष्ट किया है कि मेरे भाग्य में तो विधाता ने बाधाएं, परेशानियां, अड़चनों की लकीरें ही लिखी हैं। मेरे जीवन में अभाव और समस्याओं की लकीरें ही लिखी हैं जिनको मैं निरंतर पढ़ता जा रहा हूं, मगर जीवन का सौभाग्य होगा कि कोई ऐसा दिन आए जिन क्षणों में मैं पूर्ण तन्मय होकर अपनी देह को पूर्ण रूप से भुलाकर अपने गुरु के चरणों में पूर्ण रूप से समर्पित होता हुआ, उस आनंद को नृत्य के साथ प्राप्त कर सकूं, जहां पर सारे बंधन समाप्त हो जाते हैं, जहां पर सारे व्यामोह समाप्त हो जाते हैं, जहां पर एक आनंद का प्रवाह, एक मस्ती का प्रवाह बहता है जब मेरे सामने गुरु उपस्थित हों, मैं उनकी वाणी को निरंतर सुनता हुआ उस अमृत का निरंतर पान करता रहूं और साधना की उस स्थिति तक पहुंचूं जिसे अखंड समाधि कहा है और जब वह क्षण मेरे जीवन में आएगा, मेरे जीवन को एक जगमगाहट, एक रोशनी, एक प्रकाश देगा।

और मैं भी भतृहरि के शब्दों के साथ आपको आशीर्वाद देता हूं कि आपके जीवन में वह क्षण तुरंत आए जिससे जीवन प्रकाशवान हो सके, जगमगाहट से भर सके और संपूर्णता का बोधक हो सके।

मेरे शब्द आप तक पहुंचने के लिए माइक की या किसी और साधन की जरूरत नहीं है। आप तक बात पहुंचने के लिए मेरे ह्रदय के तार झंझनाने चाहिए और उस संगीत को आप अपने ह्रदय के माध्यम से सुन सकें, अपने प्राणों के माध्यम से अनुभव कर सकें और अपने जीवन में उस उत्साह को, नृत्य को, उस तन्मयता को, जीवन की पूर्णता को प्राप्त कर सकें, जो कि जीवन का एक आनंददायक क्षण है।

आज शिवरात्रि का पर्व है, और इस शिवरात्रि के पर्व पर मैं आपसे कहना चाहूंगा कि समाज का जहर पीना अत्यंत दुःख दायक होता है क्योंकि समाज निरंतर अपने व्यंग्य बाणों से अपनी कटूक्तियों से और अपने जले कटे शब्दों से आदमी को और साधक को जहर देता ही रहता है और जहर की स्वाभाविक परिणिति मृत्यु है। ...परंतु कुछ विशिष्ट साधक ऐसे होते हैं, जो उस जहर को अपने कंठ में उतार कर रख लेते हैं और वह जहर भी अपने आप में अमृतमय बन जाता है।

यदि समाज में जहर नहीं हो तो अमृत का आनंद भी अनुभव नहीं हो सकेगा। अमृत का आनंद तभी अनुभव हो सकता है जब हम जहर को अनुभव कर सकें। छाया का अनुभव तब होगा जब हम धूप को अनुभव कर सकें। जब धूप में गर्मी में तपते हुए हम चलते हैं और छाया मिलती है तो एहसास होता है कि धूप क्या चीज है, छाया क्या चीज है।

सड़ी गली व्यवस्थाओं में समाज अपने छोटे-छोटे कटघरों में कैद हो गया है, उनके पास कोई नवीन ध्यान, कोई नवीन चिंतन, कोई नवीन धारणा नहीं है। उनके पास या तो गीता की पोथी है, या पुराण है, या वेद शास्त्र हैं बस, और उनको समेटते हुए वह एक जगह रुक गया है। नवीनतम प्रवाह उनके पास नहीं है और जो नदी बहती नहीं है या रुक जाती है, उसका पानी गंदला हो जाता है, सड़ जाता है, उसमें निर्मलता नहीं रह पाती।

समाज का जहर केवल तुम ही नहीं पी रहे हो। समाज का जहर मैंने तुमसे सौ गुना ज्यादा पिया है। पिया है और अनुभव किया है और अनुभव करने के बाद भी जीवित हूं। और समाज जब मुझे जरूरत से ज्यादा जहर दे देता है तो मैं इस बात का एहसास करने लग जाता हूं कि अब मेरे शब्दों में कुछ और पैनापन आया है, कुछ और धारदार शब्द बने हैं जो उन पर सीधा हमला कर रहे है, जों उनको झकझोर रहे हैं।

और जब झकझोरा जाता है आदमी को तो वह गाली देता है, तब वह जली कटी सुनाता है, तब बीच में बाधा बनकर खड़ा हो जाता है। उन बाधाओं के बीच साधक नहीं रुक सकता। आपके रुकने के लिए वह कोई स्थान नहीं है क्योंकि इस समाज ने तो सैकड़ों लोगों को रोका है।

इसी वाराणसी में सन्यस्त जीवन में, इसी वाराणसी के मंच पर जब मैं साधना की बारीकियों को और वेद मंत्रों को स्पष्ट कर रहा था, मैं उद्बोधन कर रहा था कि मंत्र अपने आप में घोषमय हैं और अगर मंत्र हैं तो उनका प्रभाव होना चाहिए। यदि हम सूर्य का आह्वान एक आसन पर करें तो यह कपड़ा जलना चाहिए, सूर्य की आंच महसूस होनी चाहिए। और यदि आंच नहीं है तो सूर्य यहां उपस्थित नहीं है और अगर सूर्य उपस्थित नहीं हुआ तो फिर आपके मंत्र गलत हैं। ...और यदि हम नवग्रह को स्थापित करते हैं तो जहां सूर्य का आह्वान कर उसे बिठाते हैं तो अगर वहां ऊंगली लगाने पर ऊंगली झुलसती नहीं तो फिर सूर्य उपस्थित नहीं है और अगर उपस्थित नहीं है तो मंत्र में कहीं न कहीं गलती है या मंत्र में त्रुटि है या बोलने वाले में त्रुटि है।



मगर मेरे ये शब्द बहुत धारदार थे, पैने थे, कड़वे थे जिन्हें गले में उतारना बहुत डिफिकल्ट था, कठिन था और यहां के उन विद्वानों ने लाठियों से प्रहार करके मुझे शायद सौ डेढ़ सौ तो लाठियां मारी ही होंगी कम से कम और जब बेहोश हो गया तो गंगा के किनारे फेंक दिया, आधा शरीर पानी में था, आधा शरीर किनारे पर था।

मगर दूसरे दिन मैं वापस उसी मंच पर खड़ा था क्योंकि अगर जीवन में दृढ़ता नहीं है, निश्चय नहीं है, दो टूक कहने की क्षमता नहीं है तो फिर जीवन का कोई अर्थ, कोई मूल्य नहीं है। ...और मैंने कहा - लाठियों के प्रहार से शरीर को तोड़ा जा सकता है, मेरी आत्मा को, मेरी भावना को तुम नहीं तोड़

सकते, मेरे शब्दों को तुम नहीं तोड़ सकते। जो मैं कह रहा हूं वह सत्य है, कड़वा तो जरूर है, कड़वा तो इसलिए है कि मैं सत्य बात कहने की क्षमता रखता हूं, चापलूसी नहीं कर सकता और यदि प्रभु को इस शरीर को नहीं रखना है तो एक बार और लाठियां पड़ जाएंगी और यह चला जाएगा। इस बात का मुझे गम नहीं है। प्रभु को इस शरीर से अगर काम लेना है तो अवश्य मुझे जीवित रखेगा।

सत्य और स्पष्ट बात गले उतारना बहुत कठिन होता है मगर जो उतार लेते हैं वे शिवमय बन जाते हैं, वे शिव होते हैं, वे छोटे मोटे देवता नहीं बनते, देवता ही नहीं बनते महादेव बन जाते हैं जो देवताओं के भी देवता होते हैं, जो अपने कंठ में उस जहर को रख देते हैं, और अमृतमय बना देते हैं।

...और आपको भी जीवन में ऐसी ही विष पीने की क्षमता प्राप्त हो क्योंकि यह जहर तो तुम्हें समाज से प्राप्त होगा ही। तुममें उस जहर को पीने की ताकत नहीं है तो तुम साधक नहीं बन सकते। यदि उसे धारण कर तुम जीवित नहीं रह सकते, यदि उन आलोचनाओं से घबरा जाते हो, विचलित हो जाते हो तो मेरे शिष्य बनने कि क्षमता तुममें नहीं है। तुमने शायद वह कड़वाहट नहीं देखी होगी, वे गालियां नहीं देखी होंगी, वे पत्थरों के ढोंके नहीं खाए होंगे जो तुम्हारे गुरु ने खाए हैं। आज भी और आज से पांच हजार साल पहले भी, आज से दस हजार साल पहले भी।

तुम इतनी दूरी तक नहीं देख सकते। आज से दस हजार साल पहले जाकर तुम्हारी दृष्टि नहीं देख सकती, पर मेरी दृष्टि देख सकती है क्योंकि मैंने उस जीवन को देखा है, उस जीवन को अनुभव किया है।

साधना का जो रास्ता है, क्षमतावान रास्ता है, उसके लिए पौरुष चाहिए, अपने आप में क्षमता होनी चाहिए, समर्पण भावना पूर्ण रूप से होनी चाहिए। आप में वह क्षमता आने लगी है और मुझे इस बात की प्रसन्नता होने लगी है। गुरु की विशेषता इस बात में होती है कि वह चाहता है सब कुछ अपने शिष्य में उतार दे, पूर्ण रूप से दे दे। मगर उतारने के लिए आवश्यक है कि समाज के सामने दृढ़ता के साथ खड़े होने की हिम्मत भी हो। साधना करना कोई बाजार में आटा दाल लाने जैसी बात नहीं है। साधना के लिए अत्यंत पैनापन होना चाहिए, धारदार व्यक्तित्व होना चाहिए।

और जैसा मैंने पहले कहा कि जब मेरी ज्यादा आलोचना होने लग जाती है, ज्यादा गालियां मिलने लग जाती हैं तो मुझे प्रसन्नता होती है कि मेरे शब्दों में पहले से ज्यादा ताकत आई है, पहले से ज्यादा झंझोरने की ताकत आई है। भगवान विश्वनाथ की इस नगरी में हम एकत्र हुए हैं तो यह बहुत बड़ा सौभाग्य है। काशी किसी व्यक्ति विशेष की नगरी नहीं है। काशी तो भगवान शिव के त्रिशूल पर टंगी एक ऐसी नगरी है जिसके ऊपर अत्यंत सामान्य व्यक्तित्व रहते हैं और इस काशी के नीचे जो दूसरी काशी है वह अपने आप में सिद्धों की काशी है, संन्यासियों की काशी है, योगियों की काशी है और जिस प्रकार ऊपर हलचल है ठीक उसी प्रकार से काशी के

नीचे भी काशी है। उस काशी को देखना जीवन का एक महत्वपूर्ण आनंद है और जब आप उस काशी को देखेंगे, तो अहसास करेंगे कि साधनात्मक जीवन क्या है; तब अहसास होगा कि शिव के त्रिशूल पर टंगी काशी का महत्व और मूल्य क्या है।

मगर भगवान शिव की नगरी में आने से ही साधनाओं में सिद्धियां नहीं मिल जातीं।

पुष्पदंत ने पूछा भगवान शिव से -

किं पूर्वतां पूर्ण सदैव रूपं।

आप किस प्रकार से मुझे प्राप्त हो सकते हैं?

तो भगवान शिव ने कहा कि केवल मात्र समर्पण के माध्यम से।

न तंत्रं, न मंत्रं, न योगं, न ध्यानं,
न पूजा, न जानं तमःपूरो सदेवं

यंत्र और मंत्र, तंत्र, योग, मीमांसा और दर्शन के माध्यम से मैं प्राप्त नहीं हो सकता क्योंकि शब्दों के माध्यम से मुझको समेटा नहीं जा सकता।

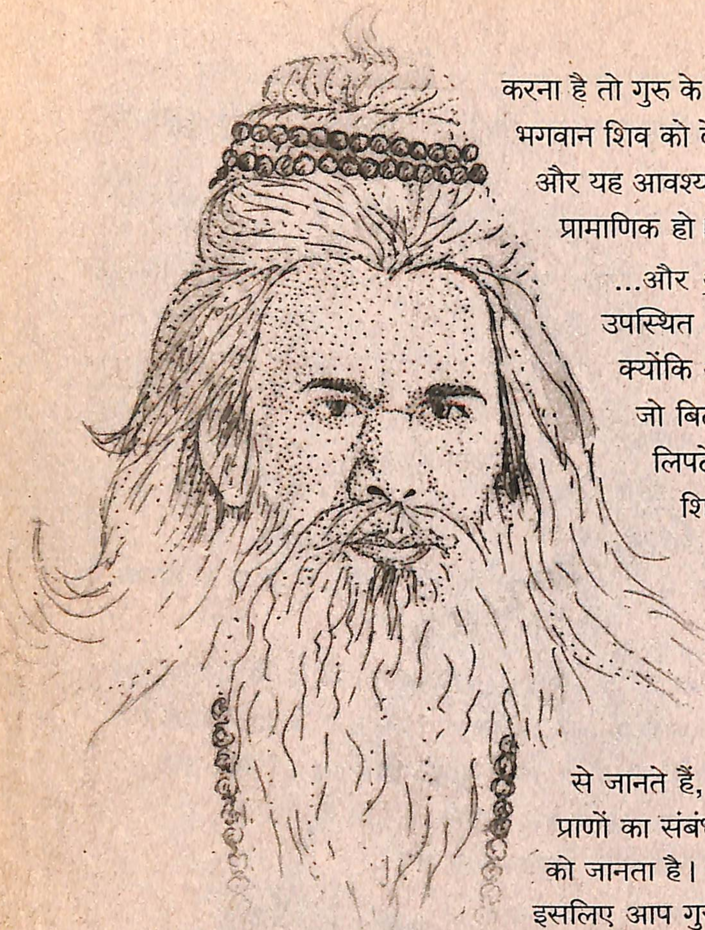
जब तक हम मन पर नियंत्रण न करें तब तक मंत्र बन ही नहीं सकता। मंत्र का तात्पर्य है कि मन पर पूर्ण नियंत्रण करके हम कुछ उच्चरित करें और मन पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम पूर्ण रूप से समर्पण करें। या तो आपमें क्षमता हो कि आप भगवान विश्वनाथ को अपने सामने उपस्थित करें आप उस काशी में जा सकें जिसकी मैं चर्चा कर रहा हूं या फिर आप अपना हाथ सामने वाले के हाथ में सौंप दें कि वह आपको वहां ले जा सके, वह आपको दिखा सके, अनुभव करा सके।



और निखिलेश्वरानंद कोई दो साल, चार साल, छःसाल से आपके साथ नहीं है। वह तो कई जन्मों से, कई वर्षों से आपके साथ है क्योंकि अब वह समय, वह क्षण आ गया है कि व्यामोह और मूढ़ता के बीच उस ज्ञान की चिंगारी को प्रकाशित किया जाए। आपमें शिष्यत्व तो है, आपने दीक्षा तो ली है मगर शिष्य की जो समर्पण भावना होनी चाहिए, गुरु में डूबने की क्रिया होनी चाहिए उसका अभाव है और अभाव इसलिए है कि आपमें कई-कई पीढ़ियों का वह रक्त है जो बहुत चालाक, धूर्त और सावधान है। उसमें आपका कोई दोष नहीं है।

आपका जन्म अपने आप में कोई विशेष घटना नहीं है। आपका जन्म एक संयोग है कि आपने जन्म ले लिया। मगर जन्म लेने के बाद आपने जीवन में क्या महत्ता प्राप्त की वह जीवन की विशेषता है। उस विशेषता को प्राप्त करने का केवल मात्र एक रास्ता है, उसे साधना कहा जाता है और साधना पूर्ण रूप से गुरु में समाहित होना है।

यदि मुझे भगवान शिव के दर्शन प्राप्त करने हैं और यदि शिवत्व को अनुभव



करना है तो गुरु के पथ पर चलकर ही मैं उन्हें प्राप्त कर सकता हूं। आपने भगवान शिव को देखा नहीं है। आपने देखा है केवल चित्रों के माध्यम से और यह आवश्यक नहीं कि जो चित्र में भगवान शिव का स्वरूप है वही प्रामाणिक हो। वह तो चित्रकार की एक कल्पना है।

...और आपने देखा नहीं है तो आपके सामने भगवान शिव उपस्थित भी हो जाएंगे तो आप उनसे परिचित नहीं हो पाएंगे। क्योंकि आपके सामने तो भगवान शिव का एक ऐसा स्वरूप है जो बिल्कुल नंग धड़ंग है, लंगोट लगाए है, और गले में सर्प लिपटे हैं। अगर ऐसा है तो शिव हैं, अगर ऐसा नहीं है तो शिव नहीं हैं।

यह कोई आवश्यक नहीं है कि भगवान शिव हरदम सर्प लपेटे ही आपके सामने हों। इसलिए अगर भगवान शिव आपके सामने साक्षात् उपस्थित हो भी जाएंगे तो भी आप उनके विग्रह को पहचान नहीं सकेंगे। मगर आप गुरु को पहचानते हैं, गुरु को अच्छी तरह से जानते हैं, उनके साथ आपने कुछ क्षण बिताए हैं; आपका उनका प्राणों का संबंध है और आप गुरु को जानते तो हैं ही और गुरु शिव को जानता है। वह आपसे भी परिचित है तथा शिव से भी परिचित है। इसलिए आप गुरु के माध्यम से शिव तक पहुंच सकते हैं।

अर्जुन ने पूछा कृष्ण से कि इस महान महाभारत के युद्ध को जीतने के लिए मुझे क्या करना पड़ेगा?

और महाभारत का युद्ध केवल द्वापर युग में ही नहीं था महाभारत तो आपके हृदय में, आपके चित्त में हर क्षण चल रहा है। निरंतर आपके चित्त में दुर्गुण रूपी कौरव हैं और सद्गुण रूपी पांडव हैं और निरंतर उनमें युद्ध होता रहता है। कभी कौरव हार जाते हैं, कभी पांडव हार जाते हैं आप का चित्त युद्ध स्थली है, और चौबीसों घंटे युद्ध होता ही रहता है। उस युद्ध के माध्यम से निरंतर तनाव, कष्ट, पीडाएं भोग रहे हैं।

गांडीव को नीचे रखकर उस हारे हुए, थके हुए, अर्जुन ने पूछा- मैं इस महाभारत युद्ध को कैसे जीता पाऊंगा?

तो श्री कृष्ण ने कहा - उसके लिए तुम्हें पूर्ण रूप से समर्पित होना पड़ेगा, पूर्ण रूप से शिष्य होना पड़ेगा, पूर्ण रूप से डूबने की क्रिया करनी पड़ेगी।

अर्जुन ने पूछा - मैं किस तरह ऐसा करूं? क्या करूं? मुझे तो डूबने की क्रिया नहीं आती है। मुझे समर्पण की भावना नहीं आती है, मुझे इतना ज्ञान और चिंतन नहीं है।

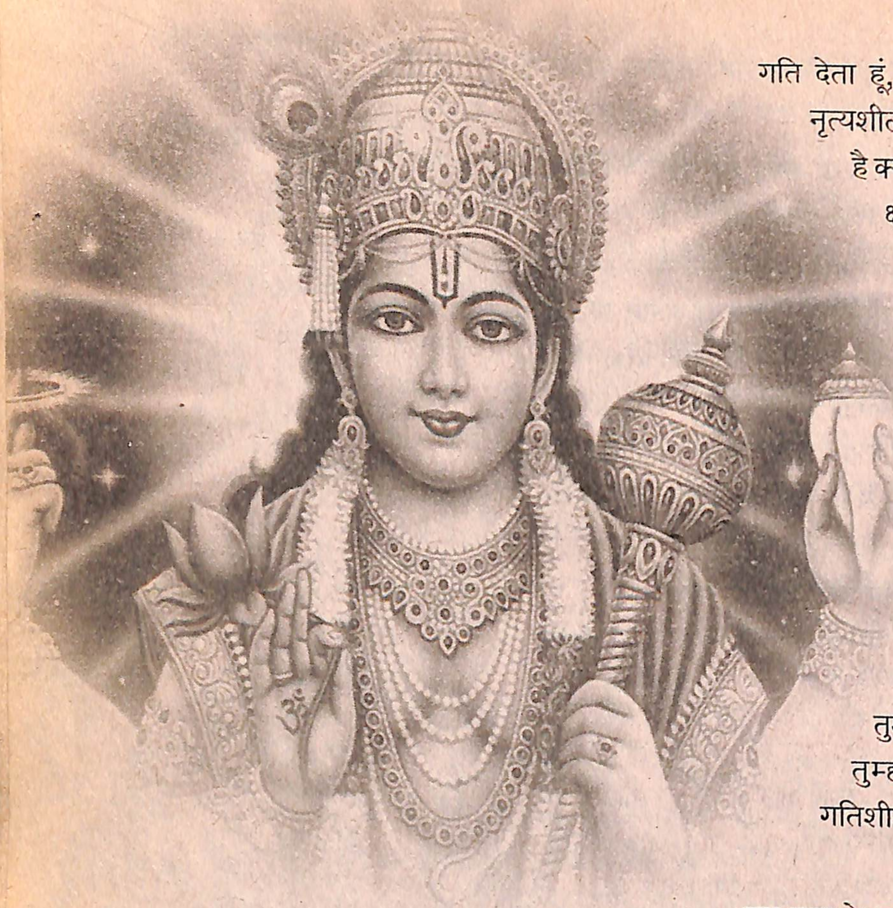
तो कृष्ण कह रहे हैं - तुम्हें ज्ञान और चिंतन नहीं है तो तुम उस भगवान पाशुपत् का प्रयोग करके भी पाशुपतास्त्रेय को नहीं प्राप्त कर सकोगे। क्योंकि तुम शिव को जानते ही नहीं हो। अगर तुम्हारे सामने उपस्थित होंगे भी तो नहीं जान पाओगे और तुमने अपने जीवन में शिव को देखा नहीं है। परंतु तुमने मुझे देखा है। अर्जुन तू मुझे जानते हो, मगर तुम मुझे जानते हो केवल सारथी के रूप में क्योंकि मैं पीला पीताम्बर पहन कर घोड़ों को संभाल कर बैठ गया हूं। तू मुझे सारथी समझ रहा है ज्यादा से ज्यादा तू मुझे मित्र समझ रहा है। मगर इस मित्रता के आवरण को हटाकर जब तुम्हारी पैनी दृष्टि होगी तो तुम मेरे वास्तविक स्वरूप को देख सकोगे।

और अर्जुन को दीक्षा दी कृष्ण ने, शिष्यत्व दिया, साधना का पथ बताया। अर्जुन को साधना की वजह से पाशुपतास्त्रेय प्राप्त नहीं हो पाया, वह कृष्ण की साधना के माध्यम से उस अनुभूति को, उस पाशुपतास्त्रेय को प्राप्त कर सका।

और वह पाशुपतास्त्रेय क्यों जरूरी है?

इसलिए जरूरी है कि हम अपने जीवन के इस महाभारत के युद्ध को जीत सकें, हमारे जीवन की कोई बाधाएं हमें परास्त न कर सकें। ...और बाधाएं तो सैकड़ों हैं ...पत्नी की बाधा है, धन की बाधा हैं, व्यापार की बाधा है, समस्याएं हैं, कठिनाइयां हैं। इसके अलावा हमारे पास पूंजी कुछ नहीं है। और इसी प्रकार हम जीवन के संघर्षों से जूझते रहे तो तुम जीवन का आनंद अनुभव नहीं कर सकोगे। एक क्षण विशेष में आप नृत्यमय तो होते हैं मगर फिर वापस उन चिंताओं में घिर जाते हैं और फिर आवाज देता हूं तो तुम दौड़ कर आते हो। फिर मैं तुम्हें गतिशील करता हूं, पांवों में





गति देता हूं, हाथों में एक चंचलता देता हूं, तुम फिर नृत्यशील तो बनते हो, पर वह कुछ क्षण ही होता है क्योंकि तुम्हारा जीवन बेजान है, उसमें ताकत, क्षमता नहीं है, चेतना नहीं है।

कोई मरे हुए को ही मुर्दा नहीं कहते हैं। जो अपने मन से हार गया है, जो समाज से हार गया है, जो जीवन से टूट गया है, वह भी मुर्दा है। मगर वह ऐसा मुर्दा है जो अपनी लाश अपने कंधे पर उठाकर श्मशान की ओर गतिशील है। शायद तुम ऐसे ही हो क्योंकि तुम्हें अपने आपका बोध नहीं है।

कुछ क्षणों के लिए मैं तुम्हारी लाश को तुम्हारे कंधे से उतारता हूं और बताता हूं कि तुम्हारा जीवन ऐसा नहीं है जिस पर तुम गतिशील हो रहे हो।

मृत्योर्माअमृत गमय!

इस मृत्यु के रास्ते को छोड़ कर तुम्हें अमृत्यु के रास्ते पर बढ़ना है; और उस अमृत के रास्ते पर जब तुम चलोगे, जिस क्षण तुम उस पगडंडी पर पांव रखोगे उस क्षण तुम मुझे पहचान सकोगे, उस समय तुम पहचान सकोगे कि सामने धोती पहने एक साधारण व्यक्तित्व नहीं है, यह कुछ और अधिक है। जिस दिन तुम उस कुछ और अधिक को पहचान लोगे तुम्हें साधना में पूर्णता प्राप्त हो जाएगी।

जब यशोदा ने कृष्ण को माटी खाते हुए देखा और डांटा, छड़ी लगाई और कान पकड़ कर कहा - तू क्या कर रहा है? मिट्टी खा रहा है? मिट्टी से बहुत नुकसान हो जाएगा। मुंह खोल!

और कृष्ण मुंह खोलता है तो यशोदा को पूरा ब्रह्माण्ड दिखाई देजाता है। यशोदा को ब्रह्माण्ड दिखाई देता है तो हाथ जोड़ कर खड़ी हो जाती है। वह भूल जाती है कि मेरा लड़का है वह, जिसे कृष्ण कहते हैं, ब्रह्म कहते हैं उसके आगे हाथ जोड़ कर खड़ी हो जाती है।

कृष्ण ने सोचा- यह बहुत गड़बड़ हो गया, यह तो मातृत्व खत्म हो जाएगा। जो लीला करनी है वह सब समाप्त हो जाएगी। जो आनंद की अनुभूति मां बेटे के बीच में होती है वह समाप्त हो जाएगी।

और कृष्ण कहते हैं - तू तो मेरी मां है तू समझती नहीं है, देख मिट्टी कहां है?

और यशोदा वापस उनकी माया में आबद्ध हो जाती है। यह खेल तो कई बार खेला गया है, कोई पहली बार नहीं। जहां भी तुम साधनाओं में थोड़ा सफल होते हो तो माया फैलानी पड़ती है और माया फैलाते ही तुम सोचते हो ये कह तो रहे हैं मगर ऐसा हो नहीं सकता। ऐसा कैसे हो सकता है, ये शिव के स्वरूप कैसे हो सकते हैं, ये तो कभी-कभी उदास भी हो जाते हैं।

अगर ऐसा मैं न करूं, माया न फैलाऊं तो हजारों-हजारों शिष्य मुझे तोड़-ताड़ कर खा लेंगे। शिष्य गुरु के बीच भी कई बार माया के आवरण को रखना पड़ता है। मगर जो इस आवरण को भेदकर आगे बढ़ जाते हैं वे

जीवन में पूर्णता प्राप्त कर लेते हैं।

मैं बार-बार तुम्हें संकेत दे रहा हूं। संकेत देना मेरी नियति है, मेरी आवश्यकता बन गई है। मैं जो कह रहा हूं उसके पीछे कोई अर्थ है, गुण है, चेतना है। समय से पहले मैं कोई शब्द मुंह से नहीं निकालता हूं। मैं काल को पहचानता हूं और काल के साथ अपने शब्दों को आपके सामने रखता हूं। मैं जानता हूं मुझे कब क्या और कितना बोलना है। उतना ही बोलता हूं जितना तुम्हें सतर्क-सावधान करने की जरूरत है। इसमें मेरी कोई अहमन्यता नहीं है, घमण्ड और गर्व नहीं है।

तुम मेरे पुत्र हो, मेरे आत्मीय हो, मेरे प्राणों के अंश हो। अपने प्राणों के अंश के सामने सत्य बोलने में कोई संकोच नहीं है। असत्य का आसरा मैं लेता भी नहीं हूं।

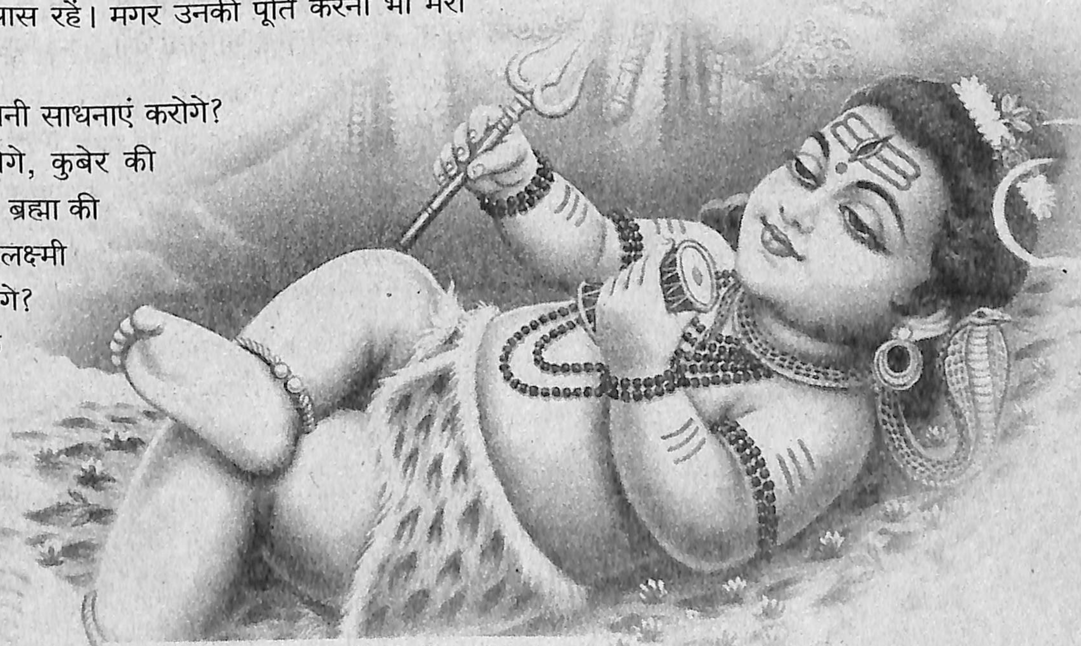
जब अर्जुन नहीं समझा तो कृष्ण को अपना विराट स्वरूप दिखाना ही पड़ा और कहना पड़ा-तुम देखो मुझे। जिस क्षण तुम मुझे पहचान लोगे, उस क्षण तुम युद्ध में विजयी हो जाओगे। उस युद्ध को जीतने के लिए तुम्हें कुछ करना नहीं है।

...और मैं भी तुम्हें कह रहा हूं कि समाज के युद्ध को जीतने के लिए और साधना के युद्ध को जीतने के लिए तुम्हें कुछ करना नहीं है। तुम्हें तो केवल गुरु से जुड़ना है, केवल समर्पण की भावना रखनी है, तुम्हें केवल गुरु में लीन हो जाने की क्रिया करनी है।

और यदि गुरु क्षमतावान है तो तुम्हें हाथ पकड़कर ले जाकर उस जगह खड़ा कर देगा जहां तुम्हें खड़ा करना है। मगर उसके लिए जरूरी है कि तुम उन प्राणों के साथ स्वयं को जोड़ सको जो गुरु के प्राण हैं। एक एक मानव के प्राणों के साथ अपने संबंध जोड़ने से प्यार शब्द बनता है, प्राणात्मक संबंध नहीं बन पाता और तुमसे मुझे कोई प्यार करने की जरूरत नहीं है। प्राणात्मक संबंध बनाने की जरूरत है। प्राणों की धड़कन सुनने की जरूरत है। तुम्हारी धड़कन को मैं सुन सकूं और मेरी धड़कन को तुम अहसास कर सको। यह जीवन का एक आवश्यक तत्व और अंग है।

इसीलिए तीव्रता के साथ इस युद्ध में, समाज के साथ युद्ध में, तर्क-कुतर्क के युद्ध में जीतने के लिए जरूरी है कि तुम उस पाशुपतास्त्रेय साधना को सम्पन्न करो जिससे कि तुम्हारे जीवन के सारे अभाव दूर हो सकें। यह जरूरी है क्योंकि जब तुम उन अभावों को दूर कर सकोगे तब साधना के पथ पर तेजी से बढ़ सकोगे। तुम्हारे साथ पत्नी है, पुत्र है, बंधु है, बांधव हैं, नौकर हैं, चाकर हैं और तुम्हारे जीवन की इच्छाएं और तृष्णाएं हैं और तुम्हारे पास रहें। मगर उनकी पूर्ति करना भी मेरा कर्त्तव्य और धर्म है।

और तुम कितनी कितनी साधनाएं करोगे? लक्ष्मी की साधना करोगे, कुबेर की साधना करोगे, शिव की, ब्रह्मा की साधना, कितनी करोगे? लक्ष्मी की साधना कितनी करोगे? केवल एक साधना के माध्यम से जीवन में पूर्णता प्राप्त होनी चाहिए और मैं तुम्हें सीधा उसी रास्ते पर गतिशील कर रहा हूँ। उस रास्ते पर जहां



पूर्णता की ओर बढ़ सकते हैं। उस पाशुपतास्त्रेय साधना से हम जीवन के युद्ध में पूर्णता से सफलता प्राप्त कर सकते हैं। वह जरूरी है तुम्हारे लिए। वह तुम प्राप्त करोगे तो तुम अपने गुरु को सही ढंग से पहचान सकोगे।

तुम सामान्य व्यक्तित्व नहीं हो, केवल तुम्हें अपने आप को अहसास करना पड़ेगा। तुम्हें सोचना पड़ेगा तुम कौन हो?

मैं सोचता हूं कि तुम भी इन संसारी सियारों के बीच बड़े होकर के अपने स्वरूप को भूल गए हो। तुम्हारा मेरा केवल इस जीवन का साथ नहीं। कई जन्मों से मैं तुम्हारे साथ हूं और साफ दो टूक शब्दों में मैं तुम्हें बता देना चाहता हूं कि तुम सियार नहीं हो। उन सियारों के बीच जरूर हो और इसलिए तुम अपने आत्म को भूल चुके हो, अपने स्वरूप, चिंतन और विचारों को भूल चुके हो और सियारों के बीच मुझे प्रवचन करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि सियार कभी झपट्टा नहीं मार सकता, हुंकार नहीं भर सकता। उसमें तरंग नहीं आ सकती, वह उछल नहीं सकता, नाच नहीं सकता।

नाचने के लिए एक क्षमता होनी चाहिए। पृथ्वी से ऊपर उठने की एक क्रिया और भावना होनी चाहिए। यदि तुममें यह क्षमता और भावना है तो तुम सियार नहीं हो। मैं तुम्हें तुम्हारे स्वरूप से परिचित कराने के लिए बैठा हूं। और जिस दिन तुम अपने स्वरूप को जान लोगे उस दिन तुम मेरे स्वरूप को भी जान लोगे क्योंकि तुम मेरे ही कुल के हो, मेरे वंश के हो, मेरी ही प्राणों की धड़कन हो और मेरे रक्त के प्रवाह में गतिशील हो।

मगर मैं समझ नहीं पा रहा हूं मैं कितनी बार हुंकार मारुंगा कितनी बार तुम्हें आवाज दूंगा, कितनी बार तुम्हें अपने स्वरूप से परिचित कराने की कोशिश करूंगा। बार-बार तुम जाकर उन सियारों के बीच खड़े हो जाते हो, वहां खड़े होना तुम्हारी नियति हो गई है। वे बार-बार तुम्हें कहेंगे - यह सब गड़बड़ है, तुम शेर के बच्चे नहीं हो, तुम गीदड़ हो। मैं तुम्हारी पत्नी हूं, ये तुम्हारे बच्चे हैं, तुम्हें यहीं इस खोह में रहना है और आंखें बद करके तुम्हें अपनी जिदंगी व्यतीत करनी है और जैसे तुम्हारे पिताजी मर गए वैसे ही तुम्हें भी मरना है। तुम्हें कमा के लाना, मुझे खिलाना है, बच्चे बड़े करना है, बच्चे तुम्हें गालियां देंगे, तुम्हें बस सुनना है, क्योंकि तुम सियार हो।

मेरी ललकार सुनकर तुम कान बंद कर लेते हो कि गुरुजी ने कहा तो था मगर मैं शेर हूं कैसे? ये सब जो मेरे आस-पास भाई बंधु रिश्तेदार हैं इनकी तरह मैं भी गीदड़ हूं। मैं समझ नहीं पा रहा हूं कि मैं अपने गुरुत्व पद

का किस तरह निर्वाह करूं? किस प्रकार बार-बार तुम पर प्रहार करूं, किस प्रकार तुम्हें समझाऊं, किस तरह तुम्हे चेतना दूं, किस तरह तुम्हारे हृदय में एक आग भरूं, यह समझ नहीं पा रहा कि बार-बार उनके बीच खड़े होकर तुम अपने स्वरूप को क्यों भुला देते हो, ऐसा जीवन कब तक रहेगा। ऐसे कितने जीवन और जिओगे मेरे सामने? कौन सा क्षण आएगा जब तुम इन सबका हाथ झटक कर खड़े हो सकोगे और जीवन की पूर्णता को प्राप्त कर लोगे?

फिर तुम वापस पैदा होओगे, वापस मैं तुम्हारे सामने खड़ा होऊंगा, वापस तुम्हें गालियां दूंगा, तुम्हें फटकारूंगा, तुम्हारा हाथ पकडूंगा और तुम वापस उनके बीच जाकर खड़े हो जाओगे। आखिर कोई न कोई निर्णय लेना पड़ेगा, कभी न कभी निर्णय लेना ही पड़ेगा, या तो निरंतर उन सियारों के बीच तुम्हें जिंदगी व्यतीत करनी है या फिर शेर बनकर के गर्जना करके, जंगल के राजा बनकर के समाज के बीच खड़े होकर कह सको कि मैं निखिलेश्वरानंद का शिष्य हूं। उस लेवल पर तुम्हें खड़ा होना पड़ेगा। आज की पीढ़ी यह बात समझ नहीं सकेगी और आने वाली पीढ़ियां तुम पर और मुझ पर गर्व अवश्य करेंगी।

तुम्हें मंत्र जपने की जरूरत नहीं है, अगर तुम्हें साधना की विधि नहीं आती तो उसकी भी तुम्हें जरूरत नहीं है। अभी तक मैं तुम्हें मंत्र साधना और तंत्र साधना देता रहा हूं। अभी तक साधनाओं में अग्रसर करता रहा हूं। मगर वह नहीं हो पा रही हैं तो तुम्हें समर्पण की भावना की ओर अग्रसर होना पड़ेगा। कोई न कोई एक चीज तो तुम्हें पकड़नी ही पड़ेगी।

इसीलिए आज भगवान शिव की रात्रि के अवसर पर मैं तुम्हें यह ज्ञान दे रहा हूं। भगवान शिव पूर्ण रूप से गृहस्थ हैं। भगवान शिव अपने आप में पूर्णता के प्रतीक हैं जो अपने पास कुछ नहीं रखते हुए भी संपूर्ण संपत्ति के मालिक हैं, कुबेर के भी स्वामी हैं, जिनके अनुचर और सहचर हजारों क्षमताओं के व्यक्तित्व हैं, वीर भद्र जैसे गण हैं और जो यम के सामने खड़े होकर मृत्यु के पंजे से उस मार्कण्डेय को छुड़ा सके।

मर्कण्ड ऋषि ने भगवान शिव की आराधना करके कहा-मेरे पुत्र नहीं है, मैं क्या करूं?

तो भगवान शिव ने कहा - पुत्र तुम्हें मिल तो सकता है मगर अल्पजीवी होगा, बारह साल की आयु में उसकी मृत्यु हो जाएगी।

यहां काशी से केवल चालीस किलोमीटर दूर स्थान है मार्कण्डेय, वहां शिवलिंग है जहां मार्कण्डेय ने साधना सम्पन्न की और मृत्यु उसके सामने आकर खड़ी हुई तो उसके पिता मर्कण्ड बहुत घबराए। उसने कहा - मेरा इकलौता पुत्र समाप्त हो जाएगा।

तो मार्कण्डेय ने कहा -

चंद्रशेखर आश्रय मम किं करिष्यति वै यमः।

यम मेरा क्या करेगा? यम कर भी क्या सकता है जब चंद्रशेखर मेरे साथ में हैं। भगवान शिव मेरे साथ हैं। मैं उनके पास

बैठा हूं तो मेरे पास कैसे आ सकती है, मृत्यु मेरे साथ कैसे खिलवाड कर सकती है?

और मैं तुम्हें कहता हूं - जीवन की बाधाएं, परेशानियां तुम्हारा क्या नुकसान कर सकती हैं, मृत्यु तुम्हारा क्या बिगाड़ सकती है। कोई समस्या या कठिनाई तुम्हारा क्या अहित कर सकती है। जब मैं तुम्हारे साथ हूं तो तुम्हे चिंता करने की जरूरत नहीं है।

मैं निरंतर और हर क्षण तुम्हारे साथ हूं, पूर्णता के साथ, आनंद और मस्ती के साथ। मैं तुम्हें आनंद का पाठ पढ़ाने के लिए आया हूं, काव्य का पाठ पढ़ाने के लिए आया हूं, गतिशील करने के लिए आया हूं, तुम्हें जीवन का उत्थान करने की क्रिया बताने आया हूं, तुम्हें साधनाओं की पृष्ठभूमि समझाने आया हूं जिसके माध्यम से भगवान शिव के साक्षात् दर्शन कर सकें। चाहे भगवान शिव हों, ब्रह्मा हों, विष्णु हों, इन्द्र हों या कोई भी देवता हों वे एक साधक से ऊंचाई पर खड़े नहीं हो सकते यदि आपमें तेजस्विता है, यदि आपमें पूर्णता है तो!

यदि आपमें क्षमता है तो आप अवश्य गुरु से पाशुपतास्त्रेय साधना प्राप्त करेंगे और यदि क्षमता है तो अवश्य आप स्वयं अपने सामने उन भगवान शिव को देख सकेंगे और निश्चित रूप से देख सकेंगे।

तुम्हारे और मेरा जो संबंध है उसे तुम ठीक से पहचान लो। और मैं तुम्हें सावधान कर रहा हूं कि जो तुम्हारे आस-पास कौरव सेना है, वह चाहे पति या पत्नी के रूप में है, वह चाहे पुत्र या पिता के रूप में है उसके सामने ताकत और क्षमता के साथ खड़े होने की जरूरत है। इसीलिए मैं तुम्हें वह अस्त्र देना चाहता हूं जिस अस्त्र के माध्यम से उन सारी समस्याओं पर तुम विजय प्राप्त कर सको, लक्ष्मी तुम्हारे सामने खड़ी रह सके, और विजय माला तुम्हारे गले में पहना सके, कुबेर तुम्हारे सामने खड़े हो सकें, भगवान बुद्ध तुम्हारे सामने खड़े हो सकें क्योंकि वह साधना और क्षमता है ही वैसी जो एक तेजस्वी व्यक्तित्व तुम्हें दे सकता है और किसी में देने की क्षमता और हिम्मत भी नहीं है।

...और अगर हिम्मत और क्षमता होती तो महाभारत काल के बाद सैकड़ों बार ये साधनाएं होतीं। पाशुपतास्त्रेय साधना पिछले पांच हजार वर्षों में नहीं हो पाई। नहीं हो पाई क्योंकि तेजस्वी व्यक्तित्व के बिना यह संभव ही नहीं है।

शंकराचार्य ने स्वयं कहा है -

पूर्णत्वां पूर्ण मदैव तुल्यं
ज्ञानं च रूप चरितं वदेव
गोविदं मां परतं पुरुतं सदैवः
पाशुपतेयं पूर्व पूर्वे।

शंकराचार्य उन शास्त्रों का अध्ययन करने के बाद अपने गुरु गोविंदपादाचार्य को कह रहे हैं कि उस पाशुपत साधना को सम्पन्न करना चाहता हूं जिसके माध्यम से मैं मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकूं।

और गोविन्दपादाचार्य ने कहा - उसके लिए जिस क्षमता का तेजस्वी व्यक्तित्व चाहिए वह तेजस्वी व्यक्तित्व मेरे पास नहीं है।

और एक बहुत बड़ी साधना से शंकराचार्य वंचित रह गए और वंचित रह गए तो उन्हें अकाल मृत्यु का सामना करना पड़ा।

यह बहुत धारदार साधना है, तेजस्वी साधना

है, ताकतवान साधना है। इस साधना को स्वीकार करने में बहुत कठिनाई नहीं है, परंतु इसको देने की क्रिया बहुत कठिन है, कठोर है। इस के लिए बहुत तेजस्वी, क्षमतावान व्यतिक्त्व चाहिए। और मैं पांच हजार वर्ष के इतिहास को समेटकर आपके सामने खड़ा कर रहा हूं और यह साधना आपको देने के लिए अग्रसर हूं। और आप यह साधना प्राप्त करेंगे तो आप स्वयं अनुभव करेंगे कि यह साधना आपके जीवन को संवार सकेगी, सफलता दे सकेगी और जगमगाहट दे सकेगी।

मैं चाहता हूं कि तुम्हारा मेरा संबंध इतना प्रगाढ़ हो कि तुम घर बैठे मुझे देख सको, मैं अपने चित्त की ओर झाकूं तो तुम मुझे दिखाई दे सको। तुम्हें साधना के माध्यम से गुरु को अपने चित्त में स्थापित करना पड़ेगा। तुम्हारे मेरे बीच में दूरी संभव नहीं है, उचित नहीं है। मैं आपको आपके स्वरूप से भी परिचित कराना चाहता हूं। और आपको जीवन में किस जगह जाकर खड़ा होना है, उस ओर भी अग्रसर करना चाहता हूं और इसीलिए मैं आपको यह साधना देना चाहता हूं जो अपने आप में अद्वितीय है, तेजस्वी है, पूर्णता की ओर अग्रसर करने वाली है और जिस के माध्यम से आप अपने कई-कई जन्मों के पापों और मैल को धो सकोगे और वास्तव में गुरुत्व के, शिवत्व के दर्शन कर सकोगे। मैं आपको आशीर्वाद देता हूं कि तुम ऐसा कर सको।

जब हृदय में कोई भावना पैदा होती है तो आंतरिक संबंध बनते हैं और जो प्राणों के संबंध होते हैं, उन्हें पनपाने के लिए आंसुओं के पानी से उस पौधे को बड़ा करना पड़ता है, और किसी जल से वह पौधा बड़ा नहीं हो सकता। जो कुछ स्नेह तुम्हारा मेरे प्रति है शायद उससे ज्यादा स्नेह और अटैचमैंट मैं आप लोगों के प्रति रखता हूं और बहुत अधिक आप लोगों को प्यार करता हूं।

शिवरात्रि पूरा आनंद और मंगल का पर्व है, शिवरात्रि एक दूसरे से जुडने की क्रिया का दिन है, और पूरे वर्ष में तीन रात्रि अत्यंत महत्वपूर्ण मानी गई हैं - कालरात्रि, महारात्रि और मोहरात्रि... या लौकिक भाषा में कहूं तो दीपावली की रात्रि, नवरात्रि और शिवरात्रि। लक्ष्मी की साधना दीपावली को ही सम्पन्न होती है, ठीक उसी प्रकार से भगवती जगदंबा की साधना नवरात्रि में सम्पन्न की जाती है। शिवरात्रि में भी रात्रि को ही साधना सम्पन्न कर उन रहस्यों को, सिद्धियों को प्राप्त कर सकते हैं जिनके माध्यम से हम अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे जीवन में पूर्णता आवश्यक है और इस जीवन की पूर्णता के लिए हमें खुद क्षमता के साथ उन शक्तियों को प्राप्त करने की क्रिया करनी पड़ेगी। और उन शक्तियों को प्राप्त करने के लिए देवताओं ने भी साधनाएं सम्पन्न कीं। द्वापर युग में कौरवों और पांडवों ने भी साधनाएं सम्पन्न कीं, त्रेता युग में राम हनुमान आदि ने भी साधनाएं सम्पन्न की और कलियुग में भी ऋषियों, मुनियों, साधकों ने साधनाएं सम्पन्न कीं।



उन शक्तियों को जब तक हम अपने आप में नहीं समेटेंगे तब तक जीवन में श्रेष्ठता और अद्वितीयता नहीं आ सकती। हमारे जैसे केवल हम ही हों और हम अपने आप में पूर्ण हों। यह अपने आपमें एक तेजस्विता का चिन्ह है और बहुत बिरले लोगों के भाग्य में ऐसा ज्ञान लिखा होता है और ऐसी साधनाओं में बैठने का अवसर प्राप्त होता है ...और मेरी बात बिल्कुल सत्य है कि सौ करोड़ जनता में से केवल पांच सौ, सात सौ लोगों के भाग्य में ही इस प्रकार की साधना

सम्पन्न करने का अवसर लिखा हुआ है।

सौ करोड़ बहुत बड़ी संख्या है और पांच सौ बहुत छोटी संख्या हैं। कोई प्रतिशत इसमें नहीं बैठता परंतु श्रेष्ठ साधनाओं के लिए भाग्य में कुछ लकीरें लिखी होनी चाहिए। पाशुपतास्त्र साधना भी ऐसी ही साधना है।

मैं स्वयं संन्यस्त जीवन में साधनाओं को सम्पन्न कर रहा था और जब मैं तैयारी कर रहा था सिद्धाश्रम में जाने की तो उसी समय मुझे दो टूक स्पष्ट कह दिया गया कि जब तक पाशुपत साधना सिद्ध नहीं होती तब तक सिद्धाश्रम में पूर्ण रूप से प्रवेश संभव नहीं है।

जब आप उन साधनाओं को सम्पन्न कर उन शक्तियों को प्राप्त करेंगे तो आप अहसास कर सकेंगे कि जीवन का आनंद और मूल्य क्या है। आज आपने जीवन के आनंद और मूल्य के विषय में केवल सुना है, अनुभव नहीं किया। सुख तो अनुभव किया है, पुत्र-सुख, पत्नी-सुख, पति-सुख, मकान, धन, वैभव सुख तो प्राप्त किया है, आनंद अनुभव नहीं कर पाए। आनंद तो कुछ और होता है कि आप मस्ती में बैठे रहें और शक्तियां आपके सामने नृत्य करती रहें, और आप जिसको जो आज्ञा दें वह कार्य हो। ऐसा सौभाग्य प्राप्त करने के लिए मनुष्य जीवन अनिवार्य है। देवता उन साधनाओं को प्राप्त नहीं कर सकते। और जब देवताओं को उन शक्तियों को प्राप्त करने की आवश्यकता पड़ी तो उन्हें भी गर्भ से जन्म लेना ही पड़ा चाहे वे राम हों या कृष्ण हों क्योंकि मनुष्य राक्षस बन सकता है, देवता भी बन सकता है।

तुम्हारा जीवन इस दृष्टि से भी मूल्यवान है कि यदि तुम सही समय पर सावधान और सतर्क हो कर के अपने पथ पर अग्रसर हो सको और यदि तुम्हें जीवन में ऐसे गुरु मिल सकें जो तुम्हें इस प्रकार की साधनाएं कराने के लिए तैयार हों तो उस समय तुम्हें एक क्षण भी विलंब या हिचकिचाहट नहीं होनी चाहिए। तुम्हें कसकर के गुरु के पैरों को पकड़ लेना चाहिए, तुम्हें संकल्प शक्ति रखनी चाहिए कि मैं अपने जीवन में वह सब कुछ प्राप्त करके देखूंगा जिससे ज्ञात हो कि इस जीवन का मूल्य, मकसद, आनंद क्या है, श्रेष्ठता और प्रामाणिकता क्या है?

अभी तो तुम समेट नहीं सकते एक लाइट को भी अपनी आंखों में। दो मिनट या एक सौ बीस सैकेण्ड तुम्हारी आंखों के सामने लाइट हो तो तुम्हें आंखें बंद करनी पड़ती हैं। जब तुम पांच सौ वाट की रोशनी को तुम आंखों में नहीं समेट सकते तो करोड़ों करोड़ों सूर्य के समान उन शक्तियों को अपनी आंखों में कैसे समेट सकोगे?

उसके लिए तुम्हें उतनी ही प्राणश्चेतना चाहिए, प्राण चक्षु चाहिए, दिव्य चक्षु चाहिए, चेतना का अंगार चाहिए। उसके लिए तुम्हारे शरीर को तैयार करने की जरूरत है। इसलिए मैं आपको दीक्षा देता हूं आपके शरीर को दृढ़ करने की दृष्टि से भी, प्राणों को दृढ़ करने की दृष्टि से भी और तुम्हारे आत्म चक्षु जाग्रत करने की दृष्टि से भी और तुम्हें साधना भी प्रदान करता हूं जिसके माध्यम से मंत्र जप होता है, जिसके माध्यम से प्राणों का एक देह से संबंध बनता है। प्राणों को जाग्रत करना एक अलग बात हो गई और उसका देह पर उपयोग करना बिल्कुल एक अलग चीज है। देह तो जल सकती है, समाप्त हो सकती है, श्मशान में जाकर के प्राण नहीं समाप्त होते, प्राण जलते नहीं हैं। प्राण फिर कोई नया शरीर प्राप्त करके उसमें जाकर बैठ जाता है।

इसलिए प्राणों का देह से संबंध होना भी आवश्यक है। प्राण सुप्त हैं उन्हें जाग्रत करने की जरूरत है और उसका देहगत संबंध बनाने की भी अनिवार्यता है। और पाशुपतास्त्रेय साधना से यह संभव है। यह साधना कठिन तो है, मगर यदि आपके पास साधन है तो उस कठिनाई पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। असंभव कुछ नहीं है। और असंभव शब्द आपकी डिक्शनेरी में होना भी नहीं चाहिए। अगर तुममें क्षमता है तो ऐसी कोई चीज है ही नहीं जो तुम प्राप्त नहीं कर सको। और जो कायर बुजदिल होते हैं वे सोच कर रह जाते हैं। वे सोचते हैं यह कैसे होगा, कब होगा, किस प्रकार होगा। यह तर्क, कुतर्क तुम्हारे पूरे जीवन को झंझोड़ कर रख देते हैं क्योंकि तर्क तुम्हारी बुद्धि में विभ्रम पैदा करता है, वह तुम्हारी आस्था में विभ्रम पैदा करता है।

मैं विश्वनाथ के दर्शन करने गया था और मेरे साथ दो तीन साधक थे। तो उन्होंने पूछा - बस गुरुजी! इतना सा शिवलिंग।

उनकी नजर में शायद बहुत बड़ा शिवलिंग हो तो भगवान शिव काफी महत्वपूर्ण होंगे और छोटा शिवलिंग है तो महत्वपूर्ण नहीं होंगे। यह तुम्हारी बुद्धि है। अब बहुत बड़ा ही शिवलिंग देखना है तो द्वारका जाना चाहिए, वहां तो काफी बड़ा शिवलिंग है करीब तीन - साढे तीन फुट का है और इससे भी बड़ा देखना है तो श्री शैल पर्वत पर जाइए वहां ग्यारह फीट का शिवलिंग है। शिवलिंग छोटे और बड़े नहीं होते। तुम्हारी बुद्धि हमेशा भ्रम पैदा करती है और भ्रम जीवन को समाप्त कर देता है और पग-पग पर भ्रम पैदा होते हैं क्योंकि तुम्हारे पास पूंजी वही है। इसके अलावा तुम्हारे पास खर्च करने के लिए कुछ नहीं है। और जो कुछ तुम्हारे पास है वही तुम मुझे दे सकते हो।

अब तुम सोचोगे - यह गुरुजी ने मंत्र दिया। इसको बोलने से पाशुपत प्रयोग हो गया क्या? हम सिद्ध बन गए क्या? कैसे हो गए सिद्ध? अब क्या फर्क हो गया?

तुम्हारे घर में पच्चीस हजार, पचास हजार रुपये हैं तो उससे क्या हो गया, तुम्हारी जेब में तो नहीं हैं। मगर इसका मतलब यह नहीं है कि तुम पचास हजार के मालिक नहीं हो। और यह अपने आप में अहसास है, क्षमता है और जरूरत पड़े तो तुम पचास हजार रुपये खर्च कर सकते हो, उसका उपयोग कर सकते हो, उसके माध्यम से जो विनिमय हो सकता है वह कर सकते हो। मगर उससे तुम्हारे स्वास्थ्य में, चिंतन में, आंखों में, शरीर में कोई अंतर नहीं आएगा।

शास्त्रों में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि बुद्धि पूरे जीवन को तहस नहस कर डालती है। बुद्धि के माध्यम से निर्णय लिया जाता है कि मुझे यह कार्य करना चाहिए या नहीं करना चाहिए बस। उसके बाद तो श्रद्धा का प्रारंभ हो जाता है और जब श्रद्धा होती है तब ज्ञान प्राप्त होता है।

'श्रद्धावान लभते ज्ञानं'



और जब ज्ञान प्राप्त होता है तो पूर्णता प्राप्त होती है। मैं समझता हूं पाशुपत साधना जीवन की महत्वपूर्ण साधना है और जैसा मैंने पहले बताया, पिछले पांच हजार वर्षों में पहली बार पाशुपतास्त्रेय साधना को स्पष्ट किया जा रहा है। ऐसा कह कर मैं कोई अहमन्यता नहीं स्पष्ट कर रहा था, अहमन्यता स्पष्ट करनी होती तो मैं अखबारों में छपवाता, इंटरव्यू देता। उसके माध्यम से केवल पांच सौ लोगों की अपेक्षा पचास हजार लोगों को पढ़ा सकता था परंतु वह मेरे जीवन का कोई लक्ष्य नहीं है।

हां सत्य है तो उसे कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं है। उस पाशुपतास्त्रेय साधना से एक हजार आंखें जाग्रत होती हैं। शरीर में यों तो दो आंखे होती हैं मगर मनुष्य के शरीर को सहत्राक्षी कहा गया है कि हजार आंखें जाग्रत हों तो तुम उस दिव्य स्वरूप को देख सकोगे। और सहस्त्र या एक हजार कान हों तो उस दिव्य मंत्र को अपने शरीर में समाविष्ट कर सकोगे। दो आंखों से और दो कानों से न दिव्यता को देखा जा सकता है न सुना जा सकता है।

मगर यह सहस्त्राक्षी कैसे बनें? पाशुपतास्त्रेय साधना वही क्रिया है। मैंने कहा तुम्हारी देह का संबंध प्राणों से होना चाहिए क्योंकि एक या दो आंखों से तुम वह दिव्यता नहीं देख सकते, उससे तो केवल एक स्थूल चीज देख सकते हो।

और स्थूल भी तुम ठीक से नहीं देख सकते। तुम्हारी आंखें तुम्हारी कोई सहायता नहीं करती हैं। देखने की क्रिया तुममें है ही नहीं और अगर देखने की क्रिया है तो आप मुझे बताइए कि आप मुझसे मिलने के लिए आए तो गेट के पहले कितने खंभे लगे हैं बाहर? आपने देखा तो होगा ही बाहर और तुम्हें मालूम नहीं कितने खंभे हैं। वास्तव में तुमने देखा ही नहीं। मगर अब बाहर जाओगे तो गिन लोगे और कह दोगे आठ खंभे हैं। मगर अभी तक तुम अंधे की तरह आए या देखते हुए आए? हुआ क्या?

तुम्हारी आंखें कुछ देखती नहीं हैं, जो आप कहते हैं वही देखती हैं। जब स्थूल चीज देखने की तुम क्षमता नहीं प्राप्त कर सकते तो दिव्य स्वरूप को कैसे देख सकते हो?

इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है कि गुरु अपने शिष्य को सहस्त्राक्षी बनाए उनकी हजार आंखें खोले शरीर के अंग प्रत्यंग में। और वायु पुराण में उन हजार आंखों का चिंतन है, एक-एक आंख का वर्णन है, एक-एक आंख का विनियोग है, न्यास है, एक-एक आंख का मंत्र है। खैर वह तो बहुत सूक्ष्मता की बात है, तुम्हें उस प्रकार की साधना सम्पन्न करने की आवश्यकता नहीं है। मगर मैं तुम्हें समझा रहा था कि हम अपने जीवन का उदात्त कैसे बना सकते हैं। ये तो रत्न हैं, ये दिव्य स्वरूप,

जितना इनको देखने की कोशिश करोगे उतनी ही आनंद की स्थिति बनेगी और जब जीवन को चैलेंज के रूप में आगे बढ़ा सकोगे तो ही उच्चता और श्रेष्ठता तक पहुंच सकोगे।

अभी तक तो अपने ही तरीके से तुमने जीवन जिया है, बीस साल, पच्चीस साल, चालीस साल। अब साल भर मुझे देकर देखें तो सही कि यह साल आपके नाम है गुरुजी, जो कुछ आप करना चाहें करें। उसके बाद तुम्हारा मेरा गणित होगा कि तुम घाटे में रहे या नहीं। यह मैं तुम्हें गारंटी और विश्वास के साथ कह सकता हूं कि तुम किसी प्रकार से घाटे में नहीं रह सकते। मगर कहीं न कहीं तो तुम्हें चैलेंज को स्वीकार करना ही पड़ेगा और कहीं न कहीं तो कुछ छोड़ना ही पड़ेगा, त्याग करना ही पड़ेगा, तुम कुछ छोड़ो ही नहीं, त्याग करो ही नहीं, न समय का त्याग कर सको, न अपने जीवन के कुछ क्षणों का त्याग कर सको, तो फिर कुछ प्राप्त भी नहीं कर सकते और मैं कुछ दूं भी और तुम्हारी झोली फटी हुई होगी तो मैं चाहे कितना ही दूं वह नीचे निकलता रहेगा।

आप भावना और श्रद्धा के माध्यम से परिपूर्ण पुरुष बनने की कोशिश करें। वही पौरुष तुम्हारे जीवन में भी बने। आप दृढ़ बनें, क्षमतावान बनें, साहसी और शक्तिवान बनें और उन लोगों को जवाब दें जो आपके सामने तर्क करते हैं। चुपचाप सुनना मृत्यु है, कायरता है, बुजदिली है। मैं अपने शिष्यों को कायर और बुजदिल बनाना नहीं चाहता। मैं तो तुम्हें कहता हूं कि सामने वाला अगर तन के बात करे तो आंखें नोच लें, इतनी क्षमता रखें, जिससे दूसरी बार कोई आदमी इस तरह बात करने की हिम्मत न कर सके।



मगर उसके लिए तुम्हें एक तेजस्विता चाहिए, तुम्हारे पास कुछ होना चाहिए, एक क्षमता होनी चाहिए और मैं इस शिवरात्रि के अवसर पर भगवान शिव को साक्षी कर के ऐसी ही साधना आपको बता रहा हूं जिसे करके आप स्वयं क्षमतावान बन सकें।

आप गुरु चरणों में बैठकर गुरु से यह पाशुपत साधना प्राप्त कर सकें और उसे पूर्णता से सम्पन्न कर अपने जीवन में पौरुषवान, क्षमतावान और दिव्य बन सकें ऐसा ही मैं हृदय से आशीर्वाद देता हूं, कल्याण कामना करता हूं।

परमहंस सद्गुरुदेव स्वामी निखिलेश्वरानंद

वार्षिक सदस्यता

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अभिन्न अंग है। इसके साधनात्मक सत्य को समाज के सभी स्तरों में समान रूप से स्वीकार किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का हल सरल और सहज रूप में समाहित है।

इस पत्रिका की वार्षिक सदस्यता को प्राप्त कर आप पायेंगे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

राजेश्वरी यंत्र

जीवन में यदि विजय यात्रा प्रारम्भ करनी है, यदि सैकड़ों हजारों के दिल पर छा जाना है, राजनीति के क्षेत्र में शिखर को चूम लेना है या आकर्षण सम्मोहन की जगमगाहट से अपने आप को भर लेना है, यदि गृहस्थ सुख में न्यूनता है, और गृहस्थ जीवन को उल्लासमय बनाना है अथवा पूर्ण पौरुष प्राप्त कर जीवन में आनन्द का उपभोग करना है तो भगवती षोडशी की वरदान स्वरूप इस 'राजेश्वरी माला' को अवश्य धारण करें और आनन्द प्राप्त करें, जीवन का।

शुक्रवार की रात्रि को पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाएं। अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर पीले वस्त्र बिछा कर उस पर गुरु चित्र स्थापित कर, सर्वप्रथम संक्षिप्त गुरु पूजन करें तथा गुरु से साधना में सफलता की प्रार्थना करें। इसके पश्चात् गुरु चित्र के समक्ष किसी ताम्र पात्र में राजेश्वरी यंत्र का पूजन कुंकुम, अक्षत इत्यादि से करें और दूध का बना प्रसाद अर्पित करें। इसके पश्चात् राजेश्वरी के समक्ष निम्न मंत्र की 3 माला मंत्र जप सम्पन्न करें।

मंत्र : *॥ ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ॥*

सवा महीने तक पूजा स्थान में रखें इसके पश्चात् यंत्र को जल सरोवर में विसर्जित कर दें। जब भी अनुकूलता चाहें निम्न मंत्र का 15 मिनट तक जप करें।

यह दुर्लभ उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने किसी मित्र, रिश्तेदार या स्वजन को बनाकर ही प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. 4 स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 258/- + 45/- डाक खर्च = 303/-, Annual Subscription 258/- + 45/- postage = 303/-

Fill up and send post card no. 4 to us at :

-: सम्पर्क :-

[redacted]-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342031, (राजस्थान)

Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg. High Court Colony, Jodhpur-342031, (Raj.), India

फोन (Phone) .0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स (Telefax) . 0291-2432010

वर्ष का शुभारम्भ

विक्रम संवत् २०६७ का स्वागत

शक्ति साधना से





चैत्र नवरात्रि शाक्त साधना

सम्पूर्ण पूजन विधान

*नवरात्रि पर्व शक्ति प्राप्ति का पर्व है और मनुष्य जीवन का उद्देश्य ही शक्ति की उपासना कर उसे प्राप्त करना है। नवरात्रि में शक्ति पूजा जिसका समन्वित रूप दुर्गा है यह सब देवताओं की संघ शक्ति का प्रतीक है क्योंकि दुर्गा शक्ति की उत्पत्ति देवताओं की संगठन शक्ति से ही हुई है। अतः नवरात्रि में विधि-विधान सहित दुर्गा का पूजन एक प्रकार से सभी देवी-देवताओं का पूजन है। त्रिदेव ब्रह्म, विष्णु और शिव जिसकी इच्छा से शरीर धारण करते हैं वह शक्ति दुर्गा ही है। वह सगुण और निगुर्ण दोनों रूपों में है। कलियुग में दुर्गा पूजा का लाभ तत्काल प्राप्त होता है। भगवान वेद व्यास ने श्रीमद्भागवत में लिखा है कि ''**कलौ चण्डी विनायकौ**'' अर्थात् कलियुग में शक्ति और गणपति साधना ही तुरंत फल प्रदान करने वाली है। और आपके सामने आ रहा है शक्ति का महापर्व **नवरात्रि दिनांक १६ मार्च २०१० से २४ मार्च २०१०**। यदि आप शिष्य हैं, साधक हैं, शक्ति उपासक हैं, तंत्र-मंत्र की शक्ति अपने भीतर भरना चाहते हैं तो नवरात्रि की यह विशिष्ट शक्ति पूजन अवश्य सम्पन्न करें।*

*भगवती दुर्गा की तेजस्विता यदि साधक समाहित करने में सक्षम हो जाये, तो साधक के जीवन का सौभाग्योदय होता है और ऐसा सौभाग्यवर्द्धक क्षण उपस्थित हो रहा है इस बार '**चैत्र नवरात्रि**' (१६ मार्च २०१० से २४ मार्च २०१०) पर, जब साधक नवरात्रि के प्रत्येक दिन दुर्गा के प्रत्येक स्वरूप की साधना कर अपने जीवन को सभी दृष्टियों से पूर्णता प्रदान कर सकता है।*

नवरात्रिं का यह विशेष पर्व अपने भीतर से अज्ञानता, दोष, कमियां, निकाल बाहर कर अपने भीतर शक्ति भरने का पर्व है, यदि संसार विपत्ति सागर है, तो उसमें से पूर्ण रूप से बाहर निकलने के लिए शक्तिमान होना ही पड़ेगा, अपने भीतर शक्ति सामर्थ्य भरनी पड़ेगी, यह शक्ति ही अपने अलग-अलग रूपों में विद्यमान हो कर साधक के कार्य सम्पन्न करती है।

मां दुर्गा के तीनों महान स्वरूपों के बारे में ''**श्री देव्यथर्वशीर्ष**'' में लिखा है कि ''**हे देवी! आप चित्त स्वरूपिणी महासरस्वती हैं, सम्पूर्ण द्रव्य, धन-धान्य रूपिणी महालक्ष्मी हैं तथा आननदरूपिणी महाकाली हैं, पूर्णत्व पाने के लिए हम सब तुम्हारा ध्यान करते हैं, हे! महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी स्वरूपिणी चण्डिके, आपको बारम्बार नमस्कार है, मेरे अविद्या, अज्ञान, अवगुण रूपी रज्जु की दृढ़ ग्रन्थी काट कर मुझे शक्ति प्रदान करें।**''

शक्ति-प्राप्ति का तात्पर्य बल से नहीं लगाया जा सकता यद्यपि व्यवहार में शक्ति का प्रयोग इसी रूप में व्यवहृत किया जाता किन्तु शास्त्रीय व्याख्या के अनुसार '**शक्ति**' शब्द में '**श**' ऐश्वर्य सूचक तथा '**क्ति**' पराक्रम सूचक है। शक्ति का ही अन्य पर्यायवाची शब्द प्रकृति भी है तथा प्रकृति शब्द का '**प्र**' - सत्व गुण सूचक '**कृ**' रजोगुण सूचक एवं '**ति**' तमोगुण

सूचक घोषित किया गया है। इस का स्पष्ट अर्थ यही है कि प्रकृति अर्थात् पराशक्ति त्रिगुणात्मिका स्वरूप को अपने में समाहित किए हुए है, जिसकी उपासना हम महासरस्वती, महाकाली एवं महालक्ष्मी के रूप में करते हैं।

नवरात्रि की मूल भावना इन्हीं तीनों शक्तियों की आराधना, साधना एवं इससे भी अधिक उनके वरदायक प्रभाव की प्राप्ति की कामना ही है।

भगवती दुर्गा का तात्पर्य तो पूर्णतः भौतिक संकटों की समाप्ति ही है। भगवती दुर्गा को ''दुर्गति नाशक' कहा गया है अर्थात् दुर्गा वह शक्ति है जो जीवन में दुर्गति, दुःख देने वाली स्थितियों जीवन के रोग, दुर्बलता, दारिद्र्य, शत्रु जैसे विभिन्न 'दुर्गम दैत्यों' का शमन कर सकती हैं जैसे विभिन्न अस्त्रों से सुसजिज्त होकर रणभूमि में उपस्थित होती हैं, उसी प्रकार अपने भक्त या साधक से अपेक्षा करती हैं।

भगवती दुर्गा का स्वरूप अत्यंत भीषण माना गया है, जैसा कि उनके ध्यान से स्पष्ट होता है -

ॐ विद्युद्दाम समप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां,
कन्याभिः करवालखेट विलसद्धस्ताभिरा सेवितां।
हस्तैश्चक्र गदासिखेट विशिखांचापं गुणं तर्जनीं;
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

अर्थात् **''जिनके अंगों की प्रभा विद्युत-द्युति के समान है, जो सिंह के कंधों पर बैठी हुई भयंकर प्रतीत हो रही हैं, जिनके चारों ओर हाथ में तलवार एवं ढाल लिए अनेक कृत्यायें खड़ी हैं, जिन्होंने स्वयं अपने हाथों में चक्र, गदा, तलवार ढाल, बाण, धनुष, पाश आदि अस्त्र धारण कर रखे है, ऐसी अग्निमय स्वरूप वाली, माथे पर चन्द्रमा का मुकुट धारण करने वाली त्रिनेत्री दुर्गा की मैं अभ्यर्थना करता हूं।''**

भगवती दुर्गा का यह स्वरूप स्वयं प्रकट करता है, कि वे भावगम्य नहीं, अपितु साधनागम्य हैं। वह सत्य है कि देवी प्रत्येक दशा में ममतामयी ही हैं, किन्तु जब तक साधक उनके स्वरुप विशेष के अनुकूल स्वयं को ही सन्नद्ध नहीं कर लेगा, तब तक वह स्वयं उसके अन्दर समाहित हो भी कैसे सकेगा? इसके अतिरिक्त उस जगज्जननी को यह भली-भांति स्पष्ट होता है, कि उनका कौन सा साधक शिशुत्व की स्थिति में है और कौन केवल मुंह से ही मां-मां की रट लगा रहा है।

वह स्थिति जब कि शिशुत्व की प्रबलता के कारण साधक कुछ भी करने में असमर्थ हो जाता है और जीवन के प्रत्येक क्षण के लिए केवल भगवती जगदम्बा पर ही आश्रित हो जाता है, अत्यन्त उच्चकोटि के योगियों की ही होती है। अन्य कोई यदि इसके आधार पर साधना करने से बचना चाहे, तो यह उसकी न्यूनता होगी, श्रेष्ठता नहीं। इसी कारणवश श्रेष्ठ साधक प्रत्येक दशा में साधना करने को तत्पर रहते ही हैं, क्योंकि इसका निर्धारण तो जगदम्बा स्वयं ही कर लेगी, कि अब मेरे किस भक्त या साधक को साधना की आवश्यकता है और कौन इससे मुक्त हो गया।

इस विवेचन का उद्देश्य मात्र इतना है, कि साधक जिस अवसर पर इस श्रेष्ठ दुःख, दारिद्र्य, शत्रुहंता साधना में प्रवृत्त हो, उस समय उसके मन में प्रबल संकल्प और दृढ़ता की भावभूमि हो। आधे मन से, भावनाओं में डूबते-तैरते, बलात् साधना करने से इसके फल की प्राप्ति संभव नहीं हो पाती।

सिंह की एक उपमा **'मृगपति'** भी है, जिसका अर्थ होता है, जो मृग की ही भांति चंचल मन पर आधिपत्य स्थापित कर ले। जिस प्रकार सिंह भीषण झपट्टा मार कर एक ही प्रहार में अपने शिकार का प्राणान्त कर देता है, उतनी ही दृढ़ता और प्रखरता से अपने मन दुर्बलताओं को समाप्त किया जा सके। इस लेख में जहां भगवती दुर्गा का ध्यान उल्लिखित किया गया है, वहां सिंह की इसी उपमा 'मृगपति' का उल्लेख इसी तथ्य की ओर ध्यान आकर्षित करने वाला है।

''चैत्र की नवरात्रि'' भगवती दुर्गा की साधना का वर्ष भर में सबसे अधिक सिद्ध मुहूर्त माना गया है। यही अवसर होता है, जब प्रकृति में उपस्थित उनकी चैतन्यता को उचित मंत्रों एवं विधान के द्वारा अपने अंदर उतारा जा सकता है। देवी दुर्गा से बाह्य रूप से सहायता की प्रार्थना करने की अपेक्षा अधिक उचित तो यही होता है, कि साधक उनकी प्रखरता को स्वयं अपने शरीर के अणु-अणु में भर ले और फिर केवल किसी एक या दो समस्याओं का समाधान नहीं वरन् समस्त समस्याओं का समाधान स्वयं ही कर सके।

चैत्र नवरात्रि ऋतुओं का संगम है, और शक्ति उपासकों के लिये यह महापर्व है। नवरात्रि को महारात्रि अर्थात् महोत्सव स्वरूप में सम्पन्न करने की प्रथा वेदोक्त काल से चली आ रही है। देवी भागवत् के अनुसार महाशक्ति ही शारीरिक विकार, मोह, अन्धकार, आलस्य, राग, द्वेष तथा वासना के प्रतीक मधु-कैटभ, महिषासुर, शुंभ-निशुंभ, धूम्रलोचन, चण्ड-मुण्ड, रक्तबीज का नाश धर्मरूपी सिंह पर आरूढ़ होकर प्रभुत्व स्थापित करने वाले विभिन्न अस्त्र शस्त्रों के माध्यम से दुष्प्रवृत्ति रूपी असुरों का विनाश कर देती है। भगवती

जगदम्बा ही तृतीय नेत्र से ज्ञान की वर्षा कर ज्ञानियों को अमृत प्रदान करती हैं। शक्ति के इस जगदम्बा रूप का विस्तृत विवेचन मार्कण्डेय पुराण में आया है और इसमें भगवती दुर्गा स्वयं कहती हैं कि जब-जब संसार में दानवी बाधा उपस्थित होगी तब-तब अवतार लेकर मैं शत्रुओं का संहार करूंगी। मनुष्य जीवन में अज्ञान रूपी अन्धकार फैला हुआ ही है। इसमें शारीरिक विकार मोह, अन्धकार, आलस्य, राग-द्वेष, अहंकार, वासना भरी पड़ी है, इनका नाश कर जीवन में चेतना प्राप्त करने हेतु नवरात्रि सर्वोत्तम पर्व है।

इस वर्ष विक्रम सम्वत् 2067 में नवरात्रि 16 मार्च 2010 को प्रारम्भ हो रही है और इसका समापन 24 मार्च 2010 को हो रहा है। इन नौ दिनों में आप साधक हैं, शिष्य हैं तो शक्ति आराधना पूर्ण विधि विधान सहित नित्य सम्पन्न करें।

प्रथम दिन विशेष पूजंन नीचे दी गई विधि के अनुसार सम्पन्न करना है और बाकी दिनों में गणपति पूजन, गुरु पूजन सम्पन्न करके ही प्रत्येक दिन अपनी कामना के अनुसार विशिष्ट नवदुर्गा का पूजन एवं दुर्गा मंत्र जप सम्पन्न करना है।

इस साधना में मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त सामग्री के साथ साथ नियमों का पालन विशेष आवश्यक है।

साधना सामग्री

'आद्या शक्ति दुर्गेश्वरी यंत्र', श्री साफल्य गुटिका, शक्ति माला।

साधना विधान

साधक प्रातः काल स्नान करके आसन पर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठें। सामने चौकी के ऊपर लाल वस्त्र बिछाकर भगवती दुर्गा का सुन्दर सा आकर्षक चित्र स्थापित करें। भगवती के चित्र के सामने कुंकुम से रंगे हुए लाल चावल की ढेरी बना कर उस पर **'आद्या शक्ति दुर्गेश्वरी यंत्र'** को स्थापित करें। इसके पश्चात् निम्न विधि से पूजन करें-

आचमन

दाहिने हाथ में जल लेकर स्वयं आचमन करें -

ॐ ऐं आत्मतत्वं शोधयामि नमः ।।
ॐ ह्रीं विद्यातत्वं शोधयामि नमः ।।
ॐ क्लीं सर्वतत्वं शोधयामि नमः ।।

इसके बाद हाथ धो लें।

आसन शुद्धि

आसन पर जल छिड़कें।

ॐ पृथ्वि! त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।



त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनं ।।

संकल्प

दाहिने हाथ में जल लें -

ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद्भगवतो विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अस्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धे श्वेत वाराह कल्पे जम्बूद्वीपे भरतखंडे आर्यावर्ते देशान्तर्गते पुण्य क्षेत्रे कलियुगे, कलि प्रथम चरणे अमुक गोत्रोत्पन्नोऽहं (अपना गोत्र बोलें) अमुक शर्माऽहं (अपना नाम बोलें) सकल दुःख दारिद्र्य निवृत्तिमम मनोकामना पूर्ति निमित्तं भगवती दुर्गा सिद्धि प्राप्ति निमित्तं च पूजनं करिष्ये ।।

जल छोड़ दें।

गणपति पूजन

ॐ गं गणपतिम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि नमः। पुष्पासनं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। तिलकं अक्षतान् च समर्पयामि। धूपं दीपं नैवेद्यं निवेदयामि नमः ।।

गुरु पूजन

इसके बाद पंचोपचार से या षोड़शोपचार से गुरुदेव का पूजन करें और प्रार्थना करें -

गुरु र्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः॥

कलश स्थापन

अपने बायीं ओर जमीन पर कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर उस पर कलश स्थापन करें। उसमें जल भर दें। इसके बाद कलश में चारों ओर कुंकुम से चार तिलक लगा दें। उसमें सुपारी, अक्षत, दूब और पुष्प तथा गंगाजल डालें। ऊपर नारियल रख दें और निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यां महो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यातम्। इष्णन्निषाण मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मइषाण॥

इसके बाद कुंकुम से रंगे हुए चावल को दाहिने हाथ से निम्न मंत्र को पढ़ते हुए कलश पर चढ़ावें।

ॐ महाकाल्यै नमः। ॐ महालक्ष्म्यै नमः। ॐ महासरस्वत्यै नमः। ॐ नन्दजायायै नमः। ॐ धूमायै नमः। ॐ शाकम्भर्यै नमः। ॐ भ्रामर्यै नमः। ॐ दुर्गायै नमः॥

> *आदि शंकराचार्य ने 'विवेकचूड़ामणि' में षट् सम्पत्ति का वर्णन किया है। षट् सम्पत्ति- अर्थात् सम्पत्ति के छः रूप - शम, दम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा और समाधान। प्रज्ञा को पाने के लिए इन गुणों का होना नितान्त आवश्यक है। साधक का लक्ष्य होता है अपने को साध लेना अर्थात अपने मन पर पूर्ण विजय प्राप्त कर लेना। मन पर ऐसी विजय प्राप्त कर लेना जिससे फिर जीवन में आपने वाले किसी भी प्रकार के उतार-चढ़ाव से विचलित न हो सके। यह विजय तभी मिल सकती है, जब चित्त शुद्ध हो।*
>
> *वह धन है - 'आत्मानुशासन' अर्थात् स्वयं का अपने मन पर नियंत्रण। यदि आत्मसंयम ही नहीं है, तो हमारा जो यह वैभव है, जो भौतिक साधन हैं, वे भी विनष्ट हो जाएंगे, टिकेंगे नहीं। सच्चा ऐश्वर्य है - आन्तरिक समृद्धि। यह आन्तरिक समृद्धि भी हम जीवन में लक्ष्मी द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं। हमारा चित्त शुद्ध हो सकता है।*

भगवती दुर्गा के चित्र को पानी के छींटे देकर साफ कपड़े से पोंछ दें और पूजन करें -

ध्यान -

दोनों हाथ जोड़ें

श्री जगदम्बायै ध्यानं समर्पयामि नमः॥

आवाहन

भगवती का आह्वान करें -

ॐ जगदम्बायै आवाहनं समर्पयामि नमः॥

स्वागतम

दोनों हाथ में पुष्प लेकर स्वागत करें -

ॐ जगदम्बायै स्वागतं समर्पयामि नमः॥

पाद्य

जल में दूध मिलाकर दूब में चढ़ावें।

ॐ जगदम्बायै पाद्यं समर्पयामि नमः॥

आचमन

लौंग तथा जायफल जल में डाल कर चढ़ायें -

ॐ जगदम्बायै आचमनं समर्पयामि नमः॥

अर्घ्य

दूब, तिल, चावल एवं कुंकुम जल में डाल कर चढ़ायें -

ॐ जगदम्बायै अर्घ्यं समर्पयामि नमः॥

मधुपर्क

दूध में दही, घी एवं शहद मिला कर चढ़ायें -

ॐ जगदम्बायै मधुपर्कं समर्पयामि नमः॥

स्नान

स्नान हेतु जल चढ़ायें -

परमानन्द बोधाब्धि निमग्न निजमूर्तये। सांगोपांग मिदं स्नानं कल्पयाम्यहमीश ते॥

वस्त्र

वस्त्र के स्थान पर मौली चढ़ायें -

ॐ जगदम्बायै वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि नमः। गन्धं अक्षतान् समर्पयामि नमः॥

पुष्प, धूप, दीप

ॐ जगदम्बायै पुष्पं धूपं दीपं दर्शयामि नमः॥

नैवेद्य, दक्षिणा

ॐ जगदम्बायै नैवेद्यं निवेदयामि नमः।
दक्षिणां द्रव्यं समर्पयामि नमः॥

मंत्र

बांयें हाथ में गुटिका लेकर मुट्ठी बन्द कर दें। दायें हाथ में 'शक्ति माला' लेकर निम्न मंत्र की 5 माला मंत्र का जप करें -

॥ ॐ दुं दुर्गे दुर्गतिनाशाय दुं ॐ फट्॥

दुर्गा शक्ति की यह साधना नवरात्रि में नौ दिन सम्पन्न करनी है प्रत्येक दिन पांच माला मंत्र जप के अलावा नवार्ण मंत्र (ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे), दुर्गा सप्तशती पाठ इत्यादि भी सम्पन्न करें। यथा संभव एक समय भोजन कर नौ दिन तक निरन्तर साधना करें।

आरती

इसके पश्चात मां भगवती जगदम्बा की आरती सम्पन्न करें।

समर्पण

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान महेश्वरि॥

दोनों हाथ में पुष्प लेकर भगवती को चढ़ावें तथा प्रसाद वितरण करें।

नवरात्रि साधना के नौ दिन पूर्ण होने पर लाल वस्त्र में बांध कर यंत्र गुटिका और माला को जल में प्रवाहित कर दें। कलश के जल को सारे घर में छिड़कें, शेष जल तुलसी के पौधे में डाल दें। कलश के ऊपर जो नारियल है, उसे प्रसाद के रूप में सपरिवार ग्रहण करें।

यदि सम्भव हो, तो अन्तिम दिन कुआंरी कन्याओं को भोजन करा कर उचित दक्षिणा प्रदान करें।

यह चैत्र नवरात्रि साधना पैकेट तो उपहार स्वरूप ही है साथ ही इसके माध्यम से गुरु कार्य के रूप में आप अपने दो मित्रों को पत्रिका सदस्य बनाएं तथा कार्ड क्रं 6 पर अपने दोनों मित्रों का पता लिखकर भेजें। कार्ड मिलने पर 570/- की वी.पी.पी. द्वारा आपको इस साधना की मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त सामग्री भेज देंगे तथा दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित रूप से पत्रिका भेजी जाएगी।

इस योजना का उद्देश्य आप द्वारा गुरु परिवार में दो नये सदस्यों को जोड़ना है। यदि आपके लिये यह संभव नहीं है तो आप की 570/- न्यौछावर राशि भेज कर साधना पैकेट प्राप्त कर सकते हैं।

दुर्गा की आरती

ॐ जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी॥१॥
ॐ जय अम्बे...

मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वल से दोऊ नयना, चंद्रवदन नीको॥२॥
ॐ जय अम्बे...

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे॥३॥
ॐ जय अम्बे...

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर, नर, मुनिजन सेवत, तिनके दुःखहारी॥४॥
ॐ जय अम्बे...

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत् ज्योति॥५॥
ॐ जय अम्बे...

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशदिन मदमाती॥६॥
ॐ जय अम्बे...

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥७॥
ॐ जय अम्बे...

तुम ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी॥८॥
ॐ जय अम्बे...

चौसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरु
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू॥९॥
ॐ जय अम्बे...

तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःखहर्ता, सुख सम्पत्ति करता॥१०॥
ॐ जय अम्बे...

भुजा आठ अति शोभित, वर मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी॥११॥
ॐ जय अम्बे...

कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्री माल केतु में राजत कोटि रतन ज्योति॥१२॥
ॐ जय अम्बे...

श्री अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे॥१३॥
ॐ जय अम्बे...

16 मार्च 2010 से 24 मार्च 2010

नवरात्रि के पावन पर्व पर

नवदुर्गा साधना

प्रत्येक दिवस एक शक्ति की आराधना करें

जीवन के प्रत्येक पक्ष को उज्जवल बनायें

यह जीवन कामना परक जीवन है और कामना सिद्धि के लिये नवरात्रि से बढ़कर कोई श्रेष्ठ मुहूर्त नहीं है। दुर्गा शक्ति तो मां भगवती आद्या शक्ति हैं जिनका तो पूजन हमें निरन्तर करना है। मां का आशीर्वाद बालक को निरन्तर चाहिये, साथ ही अपने जीवन में कामनाओं की पूर्ति हेतु नवदुर्गा से सम्बन्धित विशेष मंत्र एवं साधना दी जा रही है। नवरात्रि का प्रत्येक दिवस दुर्गा सिद्धि दिवस है, दुर्गाएं शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी एवं सिद्धिदात्रि जीवन की आवश्यकत साधनाएं है। मूल साधना तो साधक अवश्य सम्पन्न करें और उसके पश्चात् अपनी इच्छा कामना के अनुसार नवरात्रि में अलग-अलग दिनों में अलग-अलग कार्यों हेतु नवदुर्गा साधना सम्पन्न करें।

प्रथमं शैलपुत्रीति द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्र घण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्॥
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनी तथा।
सप्तमं कालरात्रीति महागौरीति चाष्टमम्॥
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गा प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणेन महात्मना॥

शक्ति साधना के क्षेत्र में नवदुर्गा की उपासना अनादि काल से ही प्रसिद्ध है। पुराणों में भी नवदुर्गा की उपासना का उल्लेख है, आदिशक्ति का नवदुर्गा रूप शक्ति साधना के वर्चस्व को प्रमाणित करता है। पार्वती की कथा में भी शैलपुत्री के प्रसंग का उल्लेख है, पार्वती ने हिमालय की कन्या के रूप में जन्म लिया था। शैशवावस्था में उनका नाम **शैलपुत्री** था। शैलपुत्री ने **ब्रह्मचारिणी** और **चन्द्रघण्टा** का नाम धारण करके किशोरावस्था में शिव को पति के रूप में पाने के लिए कठोर तप किया। उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर शिव ने उन्हें दर्शन दिये, तपस्या के समय उनकी मूर्ति ध्यान मुद्रा गंभीर और परम शांत थी, उनकी शांत मूर्ति के कारण ही ऋषियों ने उन्हें **कूष्माण्डा** के नाम से सम्बोधित किया। कार्त्तिकेय के जन्म के बाद पार्वती को **स्कन्दमाता** के नाम से ख्याति मिली, लोक मंगल की स्थापना के लिए भगवती ने अपने आपको अनेक रूपों में प्रकट किया, जिससे इन्हें **कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी** और **सिद्धिदात्री** के नाम से ख्याति मिली।

मानव संसार में सुख और शांति से जीना चाहता है, अतः इस संसार के भौतिक और दैविक विघ्नों के विनाश के लिए भगवती की आराधना आवश्यक है, नवदुर्गा की उपासना कैवल्यदायिनी शक्ति के रूप में की जाती है। इन्हें ब्रह्माच्युत और शंकर आदि देवों द्वारा वन्दित भावातीत और शुद्ध निष्कला देवी के रूप में भी प्रसिद्धि प्राप्त है।

यह जीवन कामना परक जीवन है और कामना सिद्धि के लिये नवरात्रि से बढ़कर कोई श्रेष्ठ मुहूर्त नहीं है। दुर्गा शक्ति तो मां भगवती आद्या शक्ति हैं जिनका तो पूजन हमें निरन्तर करना है। मां का आशीर्वाद बालक को निरन्तर चाहिये, साथ

ही अपने जीवन में कामनाओं की पूर्ति हेतु नवदुर्गा से सम्बन्धित विशेष मंत्र एवं साधना दी जा रही है मूल साधना तो साधक अवश्य सम्पन्न करें और उसके पश्चात् अपनी इच्छा कामना के अनुसार नवरात्रि में अलग-अलग दिनों में अलग-अलग कार्यों हेतु नवदुर्गा साधना सम्पन्न करें।

नवदुर्गा के नौ स्वरूप

नवदुर्गा के नौ स्वरूप **शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघण्टा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्री, महागौरी, सिद्धिदात्री** हैं। नवरात्रि के नौ दिनों में प्रत्येक दिन नवदुर्गा के एक-एक कर नौ दिन में सभी रूपों का मंत्र जप करना है। अर्थात् प्रथम दिन शैलपुत्री, दूसरे दिन ब्रह्मचारिणी ..... नवें दिन सिद्धिरात्री की साधना सम्पन्न करनी है।

प्रथम दिवस 16-03-2010 **शैलपुत्री दिवस**

शशि कोटि प्रभां चारु चन्द्रार्द्धकृत शेखराम्।
त्रिशूल वरहस्तां च जटा मण्डित मस्तकाम्।।

करोड़ों चन्द्रमा के समान प्रभामयी, आधे चारूचन्द्र से बद्धकेशी, हाथों में त्रिशूल और वर, माथे में जटावाली देवी शैलपुत्री का ध्यान करता हूं।

यह चिन्मयी शक्ति है। यह दिव्य ज्योति स्वरूपा है। आदिशक्ति की मानस कन्या का नाम ही शैलपुत्री है। मानव के पाषाण हृदय में प्रेम और स्नेह की जो ज्योति जलती रहती है, वह शैलपुत्री है। सांसारिक अज्ञानता के बीच जो ज्ञान की ज्योति प्रज्ज्वलित होती है, उसे ही शैलपुत्री कहते हैं।

मानव जब भौतिक क्लेशों के बीच अपने आपको अकेला पाता है, उस समय हृदय में कोमलता की पुष्टि होती है, कोमलता या मानवता की यह सृष्टि ही शैलपुत्री है - यह ज्योतिर्मयी शक्ति सतत् प्रवाहशील है, सद्चिन्तन की अवस्था ही शैलपुत्री है। स्पष्ट है, कि सदैव अच्छा सोचना और करना ही शैलपुत्री का प्रतीक है, यह सतत् विराजमान हैं।

सर्वमनोकामना पूर्ति हेतु

नवरात्रि का प्रथम दिवस पर भगवती जगदम्बा **'शैलपुत्री'** के रूप में साध्य है, शैलपुत्री की साधना साधक अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु करता है। अपने जीवन की भौतिक और आध्यात्मिक समस्त इच्छाओं को पूर्णता देने के लिए यह साधना महत्वपूर्ण है, जिसे सम्पन्न कर साधक अपनी इच्छाओं को पूर्ण कर सकता है।

साधना विधानः लकड़ी के बाजोट पर लाल रंग का वस्त्र बिछायें तथा उस पर केसर से ***'शं'*** अंकित करें, उसके ऊपर **'मनोकामना पूर्ति गुटिका'** स्थापित करें तथा साधक शैलपुत्री का ध्यान करते हुए लाल रंग का पुष्प चढ़ायें -

वन्दे वांछितलाभाय चन्द्रार्धकृतशेखराम्।
वृषारूढ़ां शूलधरं मातरं च यशस्विनीं।।

इस ध्यान के बाद गुटिका का सामान्य पूजन करे, घी का अखण्ड दीपक लगायें तथा भगवती से अपनी मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना कर नैवेद्य चढ़ायें, फिर 108 चिरमी के दानों को एक-एक कर निम्न मंत्र बोलते हुए गुटिका पर चढ़ायें

मंत्र

।। ॐ शं शैलपुत्र्यै फट्।।

इसके पश्चात् पुनः मनोकामना पूर्ति की प्रार्थना कर भगवती की आरती करें।

न्यौछावर - 95/-

\+ + + + + + + + + + + + + + +

द्वितीय दिवस 17-03-2010 **ब्रह्मचारिणी दिवस**

वृषे उमा प्रकर्तव्या पद्मोपरि व्यवस्थिता।
योग पद्मोत्तरा संग मृग सिंह परिष्कृता।।
ध्यान-धारण-संतान-निरुद्ध-नियमे स्थिता।
कमण्डल ससूत्राक्ष वरदोन्नत पाणिनी।।
ग्रह माला विराजन्ती जयाद्यैः परिवारिता।
पद्मकुण्डल धात्री च शिवार्चनरता सदा।।

वृष पर पद्म, उसके ऊपर अवस्थित उमामूर्ति। मृगछाला का उत्तरीय, मृग और सिंह से परिवेष्टित ध्यान और धारणा सन्तति द्वारा नियमित संयमकारिणी, कमण्डल, अक्षमाला और वरदहस्ता, गणों से सुशोभित, जया आदि सखी वृन्दों से घिरी, पद्म-कुण्डल धारिणी तथा सदाशिव की पूजा में निमग्न देवी ब्रह्मचारिणी हैं।

मानव जीवन में निःस्पृह भाव की सृष्टि ही ब्रह्मचारिणी की उपासना है, यह आत्मबोध की चेतना से सम्पन्न है। शक्ति के इस स्वरूप को प्रेम और दिव्य चेतना के नाम से अभिज्ञात किया जाता है। मानव जीवन में आत्मसुख और आत्मतृप्ति के लिए इन्द्रिय विग्रह आवश्यक है। मानव दिव्य लोक का यात्री तभी बन सकता है जब वह इन्द्रिय विग्रह के व्रत का पालन करता हो, शक्ति के इस रूप की उपासना से ऐसी भावना की सृष्टि होती है, जिससे मानव कालजयी बन सकता है, तपस्या और साधना की यह मूर्ति है।

तांत्रिक साधना में कुमारी पूजन की परम्परा का मूल भाव है संयम और शक्ति की उपासना, संयम से शक्ति सञ्चित होती

है, इससे शक्ति की अलौकिक अभिधा की सृष्टि होती है।

अतः यह कहा जा सकता है, कि ब्रह्मचारिणी की उपासना से मानव उत्तम गुणों का पोषक बनता है। संसार में सभी दृष्टियों से सफल होने के लिए ब्रह्मचारिणी की उपासना आवश्यक है। संसार के ताप में जले हुए प्राणी को जब एक बार संयम और पवित्रता के मधुर स्पर्श का अनुभव होता है, तब संसार के प्रति वितृष्णा होती है। आनन्द लोक के परमसुख की अनुभूति से मानव का सम्बन्ध इनकी कृपा से संभव है, देवी, किशोरी, कन्या तथा तपस्विनी के वेश में चतुर्वर्गफल प्रदान करती हैं।

भगवती दुर्गा के बिम्बात्मक दर्शन तथा आरोग्यता प्राप्त करने हेतु

नवरात्रि के दूसरे दिन **'ब्रह्मचारिणी'** का स्वरूप का पूजन होता है। भगवती आदिशक्ति के ब्रह्मचारिणी स्वरूप की साधना करने से साधक के घर में आरोग्यता स्थापित होती है। यदि घर में कोई सदस्य निरन्तर रोगग्रस्त बना हुआ है या स्वास्थ्य ठीक होने पर भी स्वास्थ्य का अनुभव नहीं कर पाता, तो उसके लिये संकल्प कर परिवार का कोई सदस्य इस प्रयोग को सम्पन्न करे, तो वह अवश्य लाभ अनुभव करता है।

साधना विधानः लाल रंग के वस्त्र के ऊपर पीले रंग के चावलों की ढेरी बनाकर उस पर **'हरी हकीक माला'** स्थापित कर ब्रह्मचारिणी का ध्यान करें -

दधाना करपद्माभ्यामक्षमालां कमण्डलुम्।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्मचारिण्यनुत्तमा।।

ध्यान के पश्चात् माला का संक्षिप्त पूजन कर दूध से बना हुआ भोग अर्पित करें तथा उसी माला से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

।। ॐ ब्रं ब्रह्मचारिण्यै नमः।।

प्रयोग समाप्ति के बाद देवी की आरती कर प्रसाद का वितरण करें।

न्यौछावर - 120/-

+ + + + + + + + + + + + + +

तृतीय दिवस : 18-03-2010 **चन्द्रघण्टा दिवस**

व्याघ्र चर्माम्बरा क्रूरा गजचर्मोत्तरीयका।
मुण्डमालाधरा घोरा शुष्कवापी समोदरा।।
खड्गपाशधरातीव भीषणा भयदायिनी।
खट्वांगधारिणी रौद्रा कालरात्रिरिवापरा।।
विस्तीर्णवदना जिह्वां चालयंती मुहुर्मुहुः।
विस्तार जघना वेगाज्जघाना सुरसैनिकान्।।

व्याघ्र छाल जिनका वस्त्र है, गज चर्म जिनका उत्तरीय है, जो क्रूर है, मुण्डों की माला धारण करती हैं, भीषण हैं, जलहीन सरोवर जैसा जिनका उदर है, खड्ग और पाश धारण करती हैं, बहुत ही भीषण, भयावनी, खट्वांग धारिणी, द्वितीय कालरात्रि जैसी भीषण, विस्तीर्ण वदन, निरन्तर जिह्वा चलाने वाली, विस्तृत जघना, जिन्होंने वेग से असुर के सैन्यों का हनन किया था, वे देवीं चन्द्रघण्टा हैं।

देवी का 'चन्द्र' रूप जो मन का स्वामी है, यहां 'घण्टा' नाद का प्रतीक है। इन्हें मन और वाक्य के संयम करने वाली देवी के नाम से जाना जाता है। मानव जब तपस्या के द्वारा मन और वाणी को संयम कर अनाहत की ध्वनि सुनता है, तब चन्द्रघण्टा की कृपा का व्यावहारिक अनुभव होता है, इनकी कृपा से मानव संयत और शांत होता है, देवी मानव को ब्रह्मानन्द की अनुभूति के लोक तक सहज ही ले जाती है।

समस्त बाधाओं के निराकरण तथा आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु

'चन्द्रघंटा' की साधना नवरात्रि के तृतीय दिवस पर सम्पन्न की जाती है। चन्द्रघंटा देवी रौद्र स्वरूपा हैं, जो साधक के समस्त दोष तथा पाप का क्षय कर उसके जीवन की सभी बाधाओं को समाप्त करती हैं। भगवती चन्द्रघंटा की कृपा प्राप्त कर साधक अपने आपमें अत्यन्त समृद्धशाली और ऐश्वर्यवान हो जाता है। आकस्मिक धन प्राप्ति और गुप्त धन प्राप्ति के लिये यह प्रयोग अत्यन्त श्रेष्ठ और अद्वितीय प्रयोग है।

साधना विधान : लकड़ी के बाजोट पर लाल रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर किसी ताम्रपात्र में **'चन्द्रघंटा दुर्गा यंत्र'** स्थापित कर चन्द्रघंटा देवी का ध्यान करें -

अखण्डजप्रवरारूढ़ा चण्डकोपार्भटीयुता।
प्रसादं तनुतां मह्यं चन्द्रघण्टेति विश्रुता।।

ध्यान के पश्चात् साधक यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर कोई भी लाल रंग का फल अर्पित करें। इसके बाद 51 लाल पुष्प अर्पित करते हुए निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

।। ॐ चं चं चं चन्द्रघण्टायै हुं।।

प्रयोग समाप्ति पर आरती करें।

न्यौछावर - 240/-

+ + + + + + + + + + + + + +

चतुर्थ दिवस : 19-03-2010 कूष्माण्डा दिवस

कूष्माण्डा नाम प्रेतस्था दन्तुरा बर्बरा गिरौ।
पूजिता नव मासे तु सर्वकाम प्रदायिका।।

कूष्माण्डा पर्वतवासिनी, शव के आसन पर आसीन, बड़े-बड़े दांतों वाली, नीचकुल के जीवों को भी शरणदायिनी, जिनकी पूजा करने से नौ महीने में सभी अभीष्ट पूर्ण होते हैं।

साधक जब तप करते समय सम्प्रज्ञात योग की अवस्था में पहुंचता है, उस समय परम सत्य की अनुभूति होती है और इसी अनुभूति को महाशक्ति के नाम से सम्बोधित किया जाता है। यह आनन्द लोक के सिन्धु और बिन्दु को उद्घाटित करती हैं, यह भाव, रस और ज्योति से परिपूर्ण हैं। समस्त विश्व को यह मंगल से भर देती हैं, यह मानव के तमसाच्छन्न हृदय में दिव्य ज्योति का सञ्चार करती हैं।

सुख-सौभाग्य, धन-धान्य तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति हेतु

नवरात्रि के चतुर्थ दिवस '**कूष्माण्डा**' की साधना सम्पन्न की जाती है। कूष्माण्डा प्रयोग सम्पन्न करने वाले साधक के जीवन में धन-धान्य, ऐश्वर्य, सुख-सौभाग्य आदि की कमी नहीं रहती है। कूष्माण्डा प्रयोग गृहस्थ साधकों के लिये सौभाग्य प्राप्ति हेतु सर्वश्रेष्ठ प्रयोग है।

साधना विधान : साधक पीले रंग का वस्त्र बिछा कर उस पर किसी ताम्रपात्र में '**सौभाग्यप्रदा यंत्र**' स्थापित कर कूष्माण्डा का ध्यान करें -

सुरासम्पूर्णकलशं रुधिरप्लुतमेव च।
दधाना हस्तपद्माभ्यां कूष्माण्डेति नमो नमः।।

फिर यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर, नैवेद्य अर्पण कर, 108 सफेद पुष्प चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

।। ॐ क्रीं कूष्माण्डायै क्रीं ॐ ।।

प्रयोग समाप्ति पर भगवती की आरती सम्पन्न कर प्रसाद का वितरण करें।

न्यौछावर - 120/-

\+ + + + + + + + + + + + + + + +

पंचम दिवस : 20-03-2010 स्कन्दमाता दिवस

ॐ द्विभुजां स्कन्दजननीं वराभययुतां स्मरेत्।



गौरवर्णां महादेवीं नानालंकारभूषिताम्।।
दिव्य वस्त्र परिधानां वामक्रोड़े सुपुत्रिकाम्।
प्रसन्नवदनां नित्यं जगद्धात्रीं सुखप्रदाम्।।
सर्वलक्षण सम्पन्नां पीनोन्नत पयोधराम।
एवं स्कन्दमातरं ध्यायेत् विन्ध्यवासिनीम्।।

वराभय युक्त दो भुजाओं वाली कातिकिय जननी को सदा स्मरण करें। वह गौरवर्ण की हैं। नाना अलंकारों से विभूषित दिव्य वस्त्र पहने, बायीं गोद में सुपुत्र को लिए, सदा प्रसन्न, जग का उद्धार करने वाली सभी सुलक्षणों से युक्त और पीनोन्नत स्तनों वाली सर्वदा विन्ध्य पर्वत पर रहने वाली स्कन्दमाता का इस प्रकार ध्यान करें।

शिव की अमोघ शक्ति को कल्याणवाचक कहा गया है। कल्याण का शिवमय रूप शक्ति है। यह दिव्यवीर्य का वाचक है। स्कन्द माता इस शक्ति की वाहिका हैं, जो आत्म चेतना बालिका रूप में शैल के रूप में हृदय में जग रही थी, जो आत्म चेतना किशोरी ब्रह्मचारिणी के रूप में, उग्र तपस्विनी चन्द्र

घण्टा के रूप में झरना बहा रही थीं, वह आज प्रज्ञामय के मधुर स्पर्श से नया यौवन पाकर ध्यान गंभीर रूप में प्रज्ञा के वीर्य को हृदय में संजोकर स्कन्दमाता बनीं। उनके पुत्र के छः मुख पर प्रत्येक मुख में शिव का रूप और छटा निखर रही है। स्कन्द माता असुर वध कारिणी हैं।

गृहस्थ सुख-शांति में वृद्धि तथा कलह समाप्ति हेतु

नवरात्रि के पांचवे दिन भगवती जगदम्बा के **'स्कन्द माता'** स्वरूप की साधना सम्पन्न होती है। गृहस्थ सुख में न्यूनता हो या घर में कलह निरन्तर बना रहता हो या घर के सभी सदस्यों के मध्य कटुता और द्वेष उत्पन्न हो गया हो, तो उन सब में आपस में परस्पर प्रेम की वृद्धि तथा सुख-शांति के लिए इस प्रयोग को सम्पन्न किया जाता है।

साधना विधान : अपने सामने लकड़ी का बाजोट रख कर उसके ऊपर पीले रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर कुंकुम से **'ॐ'** लिखें, फिर उस पर किसी ताम्रपात्र में मंत्र सिद्ध **'प्राण प्रतिष्ठा युक्त गृहस्थ सुख यंत्र'** को स्थापित कर भगवती जगदम्बा के स्कन्द दैवीय स्वरूप का ध्यान करें -

सिंहासनगता नित्यं पद्माचितकरद्वया।
शुभदास्तु सदा देवी स्कन्दमाता यशस्विनी॥

यंत्र का पूजन कर नैवेद्य अर्पित करें तथा 101 लाल रंग के फूल निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ायें -

मंत्र

॥ ॐ स्कन्दायै दैव्यै ॐ ॥

प्रयोग समाप्ति पर भगवती की आरती सम्पन्न करें तथा प्रसाद का वितरण करें।

न्यौछावर - 140/-

\+ + + + + + + + + + + + + +

षष्ठम दिवस : 21-03-2010 **कात्यायनी दिवस**

ॐ गरुडोत्पलसन्निभां मणिमय कुण्डलमंडिताम्।
नोमि भावविलोचनां महिषोत्तमांगनिषेदुषीम्॥
शंख, चक्र, कृपाण-खेटक-बाण-कार्मुक शूलकाम्।
तर्जनीमपि बिभ्रती निजबाहुभिः शशिशेखराम्॥

रक्त मणि जैसे वर्ण (पीला) वाली मणिमय कुण्डल शोभित, भावपूर्ण नेत्रों वाली, महिष के मस्तक पर सवार कात्यायनी को नमस्कार, जो अपने हाथों में शंख, चक्र, कृपाण, खेटक, बाण, धनुष और शूल धारण की हुई हैं। जिनके मस्तक पर चन्द्रमा विराजते हैं, ऐसी कात्यायनी देवी का ध्यान करता हूं।

'एकोऽहम् बहुस्याम्' की चिन्मयी शक्ति कात्यायनी हैं। संसार के हित के लिए और जगत की शक्ति के साकार रूप की सत्ता को प्रतिष्ठित करने के लिए कात्यायनी का अवतार हुआ है। ज्ञानमय भूमि में रहकर जो तप और कर्म की धारा चलती है, वही कात्यायनी हैं। जब साधक साधना में ब्रह्मबोध को प्राप्त करना चाहता है और आनन्द लोक में विचरण करता है तब उसे कात्यायिनी शक्ति से साक्षात्कार करने का अवसर मिलता है।

कात्यायनी का रूप दशभुजा का है, दस ओर से कात्यायनी इन्द्रियों को ब्रह्म की सत्ता से जोड़े रखती है, यह मानव को व्यष्टि चेतना, क्षुद्र जीवन चेतना और विश्व चेतना से अवगत कराती है। यह साधक को परमसुख की शक्ति से भी परिचित कराती है।

शत्रु समाप्ति तथा अनुकूलता प्राप्ति हेतु

यदि व्यक्ति के आसपास विपरीत वातावरण निर्मित हो रहा हो और उसके शत्रु दिन-प्रतिदिन उसे हानि पहुंचाने के उपाय करते जा रहे हों, तो उसके लिए **'कात्यायनी प्रयोग'** सर्वश्रेष्ठ प्रयोग है। कात्यायनी रौद्र स्वरूपा हैं और इनको भगवती दुर्गा का छठा स्वरूप माना जाता है।

साधना विधान : सामने रखे बाजोट पर लाल रंग का वस्त्र बिछा कर उस पर काजल से गोल घेरा बनाकर उसमें अपने शत्रु का नाम लिखें तथा उस पर **'शत्रु मर्दन यंत्र'** स्थापित करें, इसके बाद कात्यायनी देवी का ध्यान करें -

चन्द्रासोज्ज्वकरा शार्दूलवरवाहना।
कात्यायनी शुभं दद्यात् देवी दानवघातिनी॥

ध्यान के बाद यंत्र का पूजन कर नैवेद्य अर्पित करें तथा **'काली हकीक माला'** से यंत्र के समक्ष निम्न मंत्र का 13 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ॐ क्रौं क्रौं कात्यायन्यै क्रौं क्रौं फट्॥

मंत्र जप के पश्चात् आरती सम्पन्न कर प्रसाद का वितरण करें।

न्यौछावर - 240/-

\+ + + + + + + + + + + + + + +

सप्तम दिवस : 22-03-2010 **कालरात्रि दिवस**

सा भिन्नांजन संकाश दंष्ट्राञ्चित वरानना।
विशाल लोचना नारी बभूव तनुमध्यमा॥
खड्ग-पात्र-शिरः खेटैरलंकृत चतुर्भुजा।
कबंध-हारमुरसा बिभ्राणा शिरसास्त्रजाम्॥

गाढ़े काजल जैसी काली, बड़े-बड़े दांतों से शोभित मुख, बड़ी-बड़ी आंखें, शरीर क्षीण मध्य, नारी रूप धारण किये, खड्ग, पान पात्र, नरमुण्ड और खेटक से चारों हाथ अलंकृत, गले में मस्तक विहीन देहों की माला और मस्तक में हार पहनी हुई, कालरात्रि देवी का ध्यान करता हूं।

काल को पार किये बिना सदा के लिए उनमें विलीन नहीं हुआ जा सकता और ब्रह्मानन्द की अनुभूति नहीं हो सकती है। कात्यायनी साधक को ब्रह्मबोध से सम्पन्न करना चाहती हैं और काली का रूप धारण करती हैं। इस कालरात्रि की कोख में अनन्त जीवों के अनन्त कर्म बीज होते हुए भी कोई उन्हें देख नहीं पाता, जब तक कि यह मुक्तकेशों वाली, अभय देने वाली दर्शन नहीं देती हैं। क्षेत्र-क्षेत्र के ज्ञान के बाद ही इनका बोध होता है।

अकाल मृत्यु भय निवारण तथा व्यापार वर्द्धन हेतु

'कालरात्रि' की साधना सम्पन्न करने से व्यक्ति के मन से अकाल मृत्यु भय समाप्त होता है तथा यह प्रयोग व्यापार करने वालों के लिये भी अत्यन्त उपयोगी है, इसे सम्पन्न करने पर उनके व्यापार में आश्चर्यजनक रूप से वृद्धि होती ही है।

नवरात्रि के सातवें दिन इस साधना को सम्पन्न करने से साधक अवश्य सफलता प्राप्त करता ही है।

साधना विधान : इस दिन साधक लाल रंग का वस्त्र बिछाकर **'कालरात्रि यंत्र'** का स्थापन कर कालरात्रि का ध्यान करें -

करालरूपा कालब्जा समानाकृतिविग्रहा।
कालरात्रि शुभं दद्याद् देवी चण्डाट्टहासिनी॥

फिर यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर नैवेद्य चढ़ायें तथा धूप-दीप-अगरबत्ती लगा कर **'हकीक माला'** से निम्न मंत्र की 9 माला मंत्र जप करें -

काल रात्रि मंत्र

॥ लीं क्रीं हुं ॥

दक्षिण काली मंत्र

॥ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हीं हीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं हीं हीं हूं हूं स्वाहा॥

प्रयोग समाप्ति पर भगवती की आरती सम्पन्न कर प्रसाद का वितरण करें।

न्यौछावर - 240/-

✢ ✢ ✢ ✢ ✢ ✢ ✢ ✢ ✢ ✢ ✢ ✢ ✢ ✢ ✢



अष्टम दिवस : 23-03-2010 **महागौरी दिवस**

ॐ गौरीं रत्न-निबद्ध-नूपुर लसत पादाम्बुजाभिष्टदां।
कांचीरत्न दुकूल हार ललितां नीलां त्रिनेत्रोज्ज्वलाम्॥
शूलाद्यस्त्र-सहस्रमण्डिलत भुजामुदवक्त्र पीनस्तनीं।
आबद्धामृतरश्मि रत्नमुकुटां वंदे महेशप्रियाम्॥

रत्न निर्मित नुपूरों से शोभित चरण, मनचाहा वर देने वाली, रत्न-वस्त्र और हार-शोभित, निम्बदेश, नीलकान्ति, त्रिनयना, उज्ज्वल प्रभा, शूल आदि हजारों अस्त्रों से शोभित हाथ, पीन उन्नतस्तन, चन्द्र शोभित मुकुटवाली महेशप्रिया की वन्दना करता हूं।

नृत्य त्याग कर काली जिस दिन सौम्य और शांत होकर शिव के अंक में आकर स्थित होती हैं, उस दिन ऋषिगण उसे महागौरी के नाम से सम्बोधित करते हैं। भगवती शांत होकर सौम्यावस्था को प्रकट करती हैं, महागौरी अनादि शक्ति का अनिर्वचनीय रूप है।

श्रेष्ठ पति या पत्नी प्राप्ति तथा पूर्ण सौन्दर्य प्राप्ति हेतु

नवरात्रि के आठवें दिन '**महागौरी**' की साधना की जाती है। महागौरी परम सौभाग्य प्रदायक देवी हैं। स्त्रियां श्रेष्ठ पति प्राप्ति के लिये तथा पुरुष श्रेष्ठ पत्नी प्राप्ति के लिए इनकी उपासना करते हैं। इसके साथ गृहस्थ सुख में वृद्धि हेतु यह साधना आवश्यक है। अप्रतिम दिव्य सौन्दर्य प्राप्त करने के लिये साधक या साधिका इनकी साधना अवश्य सम्पन्न करें।

साधना विधान : अपने सामने बाजोट पर श्वेत रेशमी वस्त्र बिछाकर उस पर ताम्रपात्र में '**महागौरी यंत्र**' का स्थापन कर भगवती महागौरी का ध्यान करें -

श्वेतहस्तिसमारूढ़ा श्वेताम्बरधरा शुचिः।
महागौरी शुभं दद्यान्महादेव प्रमोददा॥

यंत्र का संक्षिप्त पूजन कर दूध से बना हुआ नैवेद्य अर्पित कर '**हकीक माला**' से निम्न मंत्र का 21 माल मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ ॐ श्रीं महागौर्यै ॐ॥

प्रयोग समाप्ति पर आरती सम्पन्न करें।

न्यौछावर - 240/-

+ + + + + + + + + + + + + + + +

नवम दिवसः 24-03-2010 **सिद्धिदात्रि दिवस**

ॐ उद्यदादित्य-रागरंजितां योगमायां मोहस्तनीं।
शिव विरञ्चि केशव-मुकुट-सेवित-चरणां।
सूर्य शशांक-स्पंदनानंद-स्फुरण मंडितां।
नित्यां स्थिरां सिद्धिदामरवेष्टितां।
पूत प्रणव-रागरचित चमत्कृत-विकसित बिन्दुः।
दिग्वासिनीं प्रपूजितां अभ्यां वरदां विश्व जननीं।
शिवमातरं शिवानीं च ब्रह्माणीं ब्रह्म जननीं।
वैष्णवीं विष्णु प्रसूति त्रिपुरां त्रिपुरेश्वरीं।
नमामि मातरं सिद्धिदात्रीम्।

जो प्रायः सूर्य के रक्त-राग से रंजित हैं, योगमाया, महेश्वरी, शिव, ब्रह्मा और विष्णु के मुकुट द्वारा सेवित चरणों वाली, चांद और सूरज के कम्पजनित आनन्द के स्फुरण से स्फुरित हैं। जो नित्य, सिद्ध, अमरों द्वारा परिवेष्टित हैं, जो पवित्र प्रणव के सुर की मूर्च्छना से बिन्दु को विकसित करती हैं, दिगम्बरा पूजित होकर अभय और वरदान देने वाली विश्व जननी शिव की माता, शिव की पत्नी, ब्रह्म शक्ति, ब्रह्म जननी, विष्णु शक्ति, विष्णु जननी, त्रिपुरा, त्रिपुरेश्वरी हैं। देवी सिद्धिदात्री माता को प्रणाम करता हूं।

समस्त साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करने हेतु

नवरात्रि का अंतिम दिन '**सिद्धिदायिनी दुर्गा**' का है। इस दिन साधक जीवन में भौतिक और आध्यात्मिक सभी दृष्टियों से पूर्णता प्राप्त करने के लिए सिद्धिदायिनी की साधना करता है। इस दिन साधना करने से समस्त साधनाओं में सफलता प्राप्त होने लग जाती है। इस प्रयोग को सम्पन्न करने के बाद साधक वर्ष भर तक जितनी साधनायें करता है, उनमें उसे सफलता प्राप्त होती ही है। यदि पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ साधना सम्पन्न की जाय, तो भगवती जगदम्बा के प्रत्यक्ष बिम्बात्मक दर्शन भी सम्भव होते हैं।

साधना विधान : सफेद रंग का वस्त्र बिछाकर उस पर "**सिद्धिदायिनी दुर्गा यंत्र**' स्थापित करें। दुर्गा का ध्यान करें -

सिद्धि गन्धर्व यक्षाद्यैः असुरैरमरैरपि।
साध्यमाना सदाभूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी॥

यंत्र का पूजन कर, नैवेद्य अर्पित कर '**सर्व सिद्धि माला**' से 31 माला मंत्र जप करें -

मंत्र : ***॥ ॐ शं सिद्धि प्रदायै शं ॐ॥***

प्रयोग समाप्ति पर आरती करें।

न्यौछावर - 240/-

+ + + + + + + + + + + + + + + +

यह सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति करने वाली देवी हैं। साधकों की यही चरम और परम गति है। महागौरी ही सिद्धिदात्री हैं। साधक इनकी आराधना कर दिव्य लोक की शक्तियां प्राप्त करते हैं। इस प्रकार नवदुर्गा की उपासना की परम्परा भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। वैदिक युग से अद्य पर्यन्त इनकी उपासना के अनेक रूप मिलते हैं, भारत से बाहर के देशों में भी नवदुर्गा की पूजा होती है।

साधक को तो इन सभी अद्वितीय प्रयोगों को नवरात्रि के अवसर पर अवश्य सम्पन्न करना चाहिये। प्रत्येक प्रयोग अपने आपमें साधक के जीवन को परिवर्तित करने वाला प्रयोग है। साधक चाहे तो प्रत्येक प्रयोग अथवा अपनी आवश्यकतानुसार किसी भी प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है। इतना अवश्य ध्यान रखें, कि यंत्र का स्थापन आप नवरात्रि के निश्चित दिवस पर ही करें तथा नित्य दैनिक पूजन कर निर्धारित दिवस पर साधना सम्पन्न करें तथा नवें दिन आरती कर पूर्णाहुति करें तो अत्यधिक फलप्रद होगा। साधक प्रत्येक दिन किये गये प्रयोगों की सामग्री को नवरात्रि की समाप्ति के बाद किसी भी सोमवार के दिन नदी में प्रवाहित कर दें।

यदि आप साधना करना चाहते हैं, तो सम्बन्धित सामग्री कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं अथवा आप जोधपुर कार्यालय, फोन : 0291–2432209 या टेलीफैक्स : 0291–2432010 पर अपना सामग्री आदेश लिखवा दें, हम आपको वी.पी.पी. से सामग्री भेज देंगे, धनराशि अग्रिम भेजने की जरूरत नहीं है।

①

दिनांक : .... फरवरी 2010

कृपया मुझे साधना के लिए निम्न सामग्री भिजवा दें, वी.पी.पी. आने पर मैं उसे छुड़ा लूंगा।

मेरा नाम : ....

ग्राम: .... पोस्ट : ....

जिला : .... राज्य : ....

सामग्री का नाम

②

प्रिय सम्पादक जी, दिनांक : .... फरवरी 2010

पूज्य गुरुदेव डॉ. नारायण दत्त श्रीमाली जी द्वारा रचित निम्न अनमोल कृतियां वी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूंगा पुस्तकों के नाम –

....

....

....

....

मेरा नाम / पता : ....

....

नोट : 500/–से अधिक मूल्य का साहित्य एक साथ मंगाने पर 20% छूट प्रदान की जायेगी।

③

प्रिय सम्पादक जी, (पृष्ठ संख्या 82 पर प्रकाशित) दिनांक : .... फरवरी 2010

मुझे उपहार स्वरूप *'सम्मोहन वशीकरण माला'* 492/– (402/– न्यौछावर तथा डाक व्यय 90/–) की वी.पी.पी. से भेजने की कृपा करें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमेन को धनराशि दे कर छुड़ा लूंगा। वी.पी.पी. छूटने पर मुझे 20 पत्रिकाएं निःशुल्क भेजी जायेंगी।

मेरा नाम : ....

पूरा पता : ....

....

....

....

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड



परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

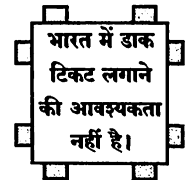
सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड



परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड



परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

आप साधना के पुरश्चरण सम्पन्न कर रहे हैं

बार-बार साधना से भी सफलता नहीं मिलती

« निराश मत होइये »

आपका एक मंत्र जप भी व्यर्थ नहीं जा रहा है

समाप्त हो रहे है पूर्व जन्म दोष

फिर गुरु आशीर्वाद - कृपा से प्राप्त होती है

साधना सिद्धि दीक्षा

जो आपको सद्गुरु दिव्य तरंगे प्रवाहित कर प्रदान करते है

एक साधक के जीवन की घटना, उसी के शब्दों में साधक के जीवन की सत्य अनुभूति

काशी का महिमामण्डित गंगा तीर! साधक वेशधारी वह श्यामवर्णीय युवक निर्निमेष दृष्टि से आते-जाते साधु-संन्यासियों के झुण्ड को देख रहा था। घाटों पर कुछ ज्यादा ही भीड़ थी, श्रावणी पर्व जो था। इस उपलक्ष में आबाल, वृद्ध, नर, नारी सभी उमड़ पड़े थे, मानो एक ही दिन में सञ्चित कर्मराशि को भस्मीभूत कर लोकोत्तर जीवन-यात्रा का मार्ग प्रशस्त करने को आतुर हो उठे हों। गंगा-स्नान तो एक निमित्त मात्र ही बना हुआ था। कुछ ही देर में नागा साधुओं के 'हर हर महादेव' के उद्घोष से वातावरण गुञ्जायमान हो उठा।

क्षुब्ध हृदय साधक उठा और श्मशान घाट की ओर बढ़ चला। असीम शांति के लिये व्याकुल आज उसके मन में खगविहागों के कलरव भी व्याघात उत्पन्न करते लग रहे थे। सब कुछ वही था। इन्हीं खग वृन्दों को नित्य वह घंटों निहारा करता, उन्मुक्त गगन में विहार करते वे पक्षी उसे साक्षात् देवदूत प्रतीत होते, जो उसे साधना जगत में नित्य नवीन ऊंचाईयों को स्पर्श करने की प्रेरणा दे कर ओझल हो जाते। इसी गंगा तट पर कितनी तन्मयता से बैठ कर वह असंख्यों का हित साधन करने की कल्पना संजोया करता।

'क्या हो गया है आज मुझे?' युवक स्वयं पर ही अचम्भित था, पिछले पांच वर्षों के गहन साधना काल में इतना विक्षुब्ध तो वह कभी नहीं हुआ था- 'क्या हुआ जो कल रात्रि में सफलता ही मिली, अभी तो साधना का शैशव काल ही है। पता नहीं गुरुदेव की क्या इच्छा है? उन सर्वज्ञ, असीम करुणासागर मेरे आराध्य की दिव्य दृष्टि से तो कुछ भी छिपा नहीं, फिर उनकी कृपा-कटाक्ष से मैं किस प्रकार वंचित रह गया? स्मरण मात्र से सिद्धि प्रदान करने वाले मेरे ईश्वर तुल्य गुरुदेव की दृष्टि अभी तक मुझ पर क्यों नहीं पड़ी?'

- यह तरंग उठते ही युवक का मुखमण्डल अश्रु प्रवाह से भीग उठा और आंसुओं की धारा में उसे अपना विगत घूमता हुआ दिखाई देने लगा -

'तुम निश्चय हीं स्वर्ण खण्ड हो, पर मिट्टी और कीचड़ से लथपथ, उबड़-खाबड़, कान्तिहीन।-...तुम्हें तो आवश्यकता है स्वर्णकार की, तराशने की और मैं यही कर रहा हूं, परीक्षा

की अग्नि में झोंक रहा हूं, कि तप कर तुम कुन्दन बन सको। पर ध्यान रहे, घबरा मत जाना, दृढ़ता पूर्वक जमे रहना' - गुरु की पारखी नजरों ने क्षण भर में ही शिष्य की आन्तरिक तपःऊर्जा को भांप लिया था।

इन्हीं शब्दों ने उसे बींध कर रख दिया था, इन्हीं शब्दों के साथ वे उसके अन्तर्मन में प्रवेश कर गये थे। अब उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था साधना समुद्र में पूर्णरूपेण स्वयं को निमग्न कर देना, ज्ञान के अथाह मानसरोवर में अवगाहन कर कुछ दुर्लभ मोती प्राप्त कर लेना और अनन्तर परमार्थ के लिए स्वयं को लुटा कर एक आदर्श स्थापित करना। इसके लिए अपना समग्र जीवन वह गुरु चरणों में प्रस्तुत करने को तत्पर था।

गुरु दीक्षा के उपरान्त घर लौट कर सर्वप्रथम एकांत स्थान का चयन किया और रात्रिकालीन समय एकमात्र साधना के लिए ही समर्पित करने का निश्चय कर लिया। उसने गुरु मंत्र का एक पुरश्चरण सम्पन्न कर अपने अन्तर-बाह्य को पवित्र व दिव्य बनाने का प्रयास किया। इसके उपरान्त अन्य कई लघु साधनाएं भी सम्पन्न कीं और उनमें सफलीभूत भी हुआ, पर मन में जरा भी तृप्ति न थी।

'इन छोटी-छोटी अप्सराओं, यक्षिणियों या भैरव की साधनाओं में जीवन खपाने की अपेक्षा एकनिष्ठ भाव से किसी महाविद्या को सिद्ध करने का प्रयत्न करना चाहिए, तभी मैं प्रकृति के उन सूक्ष्म गोपनीय रहस्यों को भेद पाऊंगा, तभी मेरा इस क्षेत्र में आना सार्थक हो सकेगा।'

अशरीरी देवदूत का आगमन

इसी मनःसंकल्प को लिये एक दिन एकांत साधना कक्ष में प्रातःकालीन गुरु वंदना, स्तुति सम्पन्न कर रहा था, एकाएक पूजा कक्ष की खिड़की से एक छायाकृति को प्रविष्ट होते देखा। वह छायामूर्ति उससे लगभग छः फीट की दूरी पर आ कर उसके समक्ष खड़ी हो गई। द्वार भीतर से बंद था और कक्ष की खिड़कियों पर लोहे की छड़ें लगी हुई थीं, अतः सामने खड़ी मानव-मूर्ति के स्थूल देहधारी होने की सम्भावना समाप्त हो गई। मन में आया - 'अवश्य ही ये कोई दिव्य देहधारी महापुरुष हैं और किसी विशिष्ट प्रयोजन से ही यहां उपस्थित हुए हैं।

मन में यह विचार उठते ही उस छायामूर्ति ने स्निग्ध मुस्कुराहट बिखेर दी, स्वीकृति में सिर हिलाया और कहा - 'तुम्हारी उपासना और अकुलाहट साधना जगत के लिए अत्यन्त श्रेष्ठ है। मेरा परिचय मात्र इतना ही समझ लो, कि मैं एक सूक्ष्म देहधारी तुम्हारा ही वरिष्ठ संन्यस्त गुरुभ्राता हूं और परम पूज्य गुरुदेव की आज्ञा से तुम्हारे समक्ष उपस्थित हुआ हूं। गुरुदेव ने तुम्हें काशीधाम जाकर भगवती त्रिपुर सुन्दरी की आराधना करने की अनुमति दे दी है, इसी संदेश का प्रेषण मेरे द्वारा होना था' - इतना कह कर वह छायामूर्ति अन्तर्धान हो गई।

दिव्य अशरीरी सूक्ष्म सत्ता से युवा साधक का वह प्रथम संस्पर्श सम्भाषण था, प्रसन्नता के आवेग से उसके पांव धरा पर पड़ ही नहीं रहे थे। मन ही मन गुरु चरणों में प्रणिपात कर वह वाराणसी नगरी को प्रस्थान कर गया। संयोग से यहीं त्रिपुरा भैरवी मुहल्ले में उसके अग्रज निवास कर रहे थे। स्वयं आध्यात्मिक प्रकृति के होने के कारण उन्होंने अपने अनुज को सहर्ष ही अपने पास रख लिया और उसकी एकांत साधना की व्यवस्था भी कर दी।

नित्य प्रति ब्रह्म मुहूर्त में गुरु उपासना कर गंगा स्नान करने जाना और महानिशा काल में अत्यन्त गुप्त भाव से भगवती की साधना में तल्लीन हो जाना - यही उसकी नियमित दिनचर्या थी। अनेक स्थानों में सूक्ष्म शरीर से अद्भुत घटनाएं भी उसने देखीं, नाना प्रकार के देव गण, सिद्ध पुरुष, दिव्य वन-उपवन, ज्योतिर्मय धाम, बहुत कुछ उसके दृष्टि पटल के सामने से गुजरते। यदि साधारण व्यक्ति इनमें से किसी एक स्थान को भी देखता, तो मुग्ध हो उठता, उसको समग्र विश्व के कोने-कोने में खोजने पर भी कहीं भी न पाने से वह जरा भी तृप्त नहीं हो पा रहा था।

साधना का पुरश्चरण छः माह की अवधि का था। प्रथम पुरश्चरण यों ही बिना किसी अनुभूति के व्यतीत हो गया। साधक पुनः अपनी साधना में दत्तचित्त हो गया। उसका लक्ष्य उसकी आंखों के सामने स्पष्ट था और मन में दृढ़ निश्चय था, कि मुझे इसी जीवन में भगवती के साक्षात् दर्शन कर उन्हें सम्पूर्ण करुणा व सोलह श्रृंगार के साथ अपने भीतर समाहित कर लेना है। इसी प्रकार क्रमशः दूसरा, तीसरा व चौथा पुरश्चरण भी समाप्त हो गया, परन्तु इतनी कठिन तपस्या के बाद भी साधक चेहरे पर न तो कोई झुंझलाहट थी, न बैचेनी , न पीड़ा, बस एक ही भाव, कि मुझे भगवती के प्रत्यक्ष दर्शन कर उनको अपने जीवन में उतार ही लेना है।

...और कल रत्रि को उसका पांचवा पुरश्चरण भी बिना इष्ट प्रत्यक्षीकरण के समाप्त हो गया; इसी से मन बार-बार उद्वेलित हो रहा था। जो हठ, आग्रह तेजस्विता और धैर्य

उसका अवलम्बन थे, वे समाप्त हो चुके थे। बुद्धि बार-बार उसे साधना पथ से विमुख करने की चेष्टा कर रही थी - 'क्या मिला यौवन के कीमती चार वर्ष गंवा कर? क्या मैं इतना अधम हूं, कि पूर्ण निष्ठा व विधि-विधान के साथ मंत्र जप करने के बाद भी सफलता का कोई चिह्न दिखाई नहीं देता? आखिर मुझसे कहां त्रुटि रह गई?''

'पर अब तो पीछे लौटना भी संभव नहीं। इस प्रकार असफल होकर तो मैं संसार के समक्ष नहीं जा पाऊंगा। घर के द्वार मैंने स्वयं बंद किये थे और प्रारब्ध ने सिद्धि के द्वार बन्द कर रखे हैं। अवश्य ही विधाता प्रतिकूल है। कुछ भी हो, अमूल्य जीवन को इस प्रकार व्यर्थ में नष्ट करने का कोई प्रयोजन नहीं।

विगत जीवन का दृश्यावलोकन

अशांत मन से बुदबुदाते हुए, क्लान्त अवस्था में युवा तपस्वी वापस पूजा कक्ष में प्रविष्ट हो गया और उसने द्वार बंद कर लिया। मन में सोचते-विचारने की क्षमता समाप्त हो चुकी थी। पथराई आंखों से सामने स्थापित गुरु चित्र को देखा और अन्तर में घनीभूत सारी वेदना अश्रुओं के रूप में बाहर निकल पड़ी। अत्यन्त दीन भाव से वह अपना सिर गुरु चरणों टिकाये फूट-फूट कर रोने लगा। आंखों में अबोध शिशु के समान आग्रह और कातरता उतर आयी, जो बार-बार मानो पूछ रही थी - 'क्या जीवन पर्यन्त इसी प्रकार इष्ट दर्शन को तरसता ही रहूंगा? क्या मेरे भाग्य में सिद्धि का वरदान नहीं है? इस दारुण वेदना की अवस्था में एकमात्र आप ही तो मेरा सम्बल हैं, मेरे गुरु, मेरे पथ प्रदर्शक है, फिर आपकी कृपा दृष्टि आखिर कब मुझ पर पड़ेगी।' अशांत हृदय से रोते-रोते तपस्वी अपने आसन पर गिर पड़ा।

एकांत कक्ष में सर्वत्र पद्मगंध की दिव्यता आप्लावित हो चुकी थी। साधक का अस्तित्व उस विराट् सूक्ष्म सत्ता से जुड़ कर एक के बाद एक दृश्यों का अवलोकन कर उठा। अतीत की रहस्यमय परतें उखड़ती जा रही थीं। कब, कैसे, कहां उसने जन्म लिये; किन दुष्कर्मों के फलस्वरूप बारम्बार जन्म-मृत्यु के चक्रों से गुजरता रहा और अन्ततः इस बार सद्गुरु चरणों का आश्रय मिल सका। पिछले पांच जीवन के प्रत्येक दृश्य वह चलचित्र की भांति स्पष्ट देख रहा था; हर जीवन में पाप कृत्यों का समावेश था; निष्कपटता के मीठे, गुदगुदे छद्म आवरण को अपने ऊपर ओढ़े वह भूल गया था, कि पिछले जन्मों में वह इतना पतित रहा होगा। आत्मग्लानि से भरा साधक का अन्तर्मन रो पड़ा, उसकी आत्मा स्वयं को धिक्कारने लगी, अपराध बोध से भरा वह स्वयं को क्षमा करने के योग्य भी नहीं पा रहा था, देव दर्शन तो कल्पना से भी परे था।

पुनः उसी दिव्य देहधारी महापुरुष की मूर्ति सामने प्रत्यक्ष हुई, वाणी में वही निश्छल प्रेम, वही स्निग्धता - **'तपस्वी! उठो, तुमने स्वयं देख लिया। तुम्हारे एक-एक पुरश्चरण से पिछले पांच जन्मों के पाप कर्मों का परिशोधन हुआ है। पांच जन्मों के सञ्चित पाप प्रारब्ध के दुष्परिणाम पिछले तीन वर्षों की साधना से नष्ट हुए हैं, तुम्हारा एक भी मंत्र जप व्यर्थ कभी नहीं गया, अपितु तुम्हारे ही परिष्कार में व्यग्र होता रहा है।'**

'इसीलिए विवेकशील साधक किसी भी साधना में प्रवृत्त होने से पूर्व गुरुदेव को प्रसन्न कर उनसे आग्रह पूर्वक **'पापमोचनी दीक्षा'** प्राप्त कर लेते हैं, इसके अनन्तर **'साधना सिद्धि दीक्षा'** रूपी वरदान लेकर ही मंत्र जप प्रारम्भ करते हैं, ताकि सिद्धि फलीभूत होने में तनिक भी संदेह या विलम्ब न हो। तुम अपने आत्माभिमान व दर्प के कारण ही इस तथ्य को समझ नहीं सके और बार-बार असफलता का सामना करना पड़ा...'

'...पर अब नैराश्य को स्थान मत दो, गुरुदेव निरन्तर तुम्हें अपनी कृपा दृष्टि से सिञ्चित कर रहे हैं, तुम्हारे एक-एक पल का हिसाब उनके पास है, नये सिरे से पुनः साधना प्रारम्भ करो, सञ्चित प्रारब्ध की निवृत्ति हो चुकने के कारण इस बार तुम्हें देवी का साक्षात्कार होना ही है।'

'महाविद्या साधना इतनी हल्की नहीं, कि उसे जब चाहें, तब सिद्ध कर लें, षोडशी साधना के लिए स्वयं देवतामय बनना पड़ता है, साधक को प्रारम्भ में ही काम, क्रोध, ईर्ष्या, अहंकार इत्यादि पाशों से स्वयं को सर्वथा मुक्त कर लेना पड़ता है, तभी साधना की प्रारम्भिक भाव-भूमि स्पष्ट होती है। आज गुरु चरणों में अश्रुपात के रूप तुम्हारा अहंकार ही विलगित हुआ है, इसे श्रेष्ठ स्तर तक लाने के लिए तुमसे इतनी तपस्या करवानी पड़ी। अब पूर्ण मनोयोग पूर्वक भगवती के ही चिन्तन, उन्हीं के स्तवन, मंत्र-जप में लीन हो जाओ, सिद्धि जयमाला लिये सम्मुख खड़ी मिलेगी। गुरुदेव का यही आशीर्वाद मैं तुम्हारे लिये ले कर आया हूं।'

युवा तपस्वी के मन का मालिन्य दूर हो चुका था, साष्टांग गुरु चरणों में प्रणिपात करते हुए वह पुनः अश्रु प्रवाह में डूब गया... पर वे अश्रु अब विषाद के नहीं, अनन्त प्रसन्नता व उल्लास के परिचायक थे।

14 मार्च 2010

प्रचण्ड शक्ति प्रदायक

वीर रात्रि

चण्डोग्र शूलपाणि

भैरव साधना

जो शिव और शक्ति से युक्त है
जो भय से मुक्ति प्रदान करता है
जो भैरव का उग्र स्वरुप है
जो साधक को सदैव विजय प्रदान करता है

प्रचण्ड शक्ति एवं तीव्र सम्मोहन से युक्त होने तथा ऐश्वर्य एवं सुख को सहज ही प्राप्त करने की साधना है

गुरु जब पहली बार अहसास कर लेता है, कि उसका शिष्य उसके प्रति पूर्ण रूप से समर्पित है, पूर्ण तेजस्विता युक्त है एवं सहज विपत्तियों के आगे घुटने न टेक उनका मुस्कुरा कर सामना करता है, तब ही वह उसे उग्र साधनाओं के मार्ग पर अग्रसर करने हेतु संकल्पबद्ध होता है, क्योंकि उसे विश्वास हो जाता है कि जिस घड़े को वह तैयार कर रहा है, वह पक चुका है, कच्चा नहीं रहा, वह अब टूटेगा नहीं, बिखरेगा नहीं, अपितु अपने अन्दर शक्ति तत्त्व को आत्मसात् करने में पूर्णतः सक्षम हो चुका है।

अब तक की साधनाएं सौम्य थीं, क्योंकि शिष्य को तैयार किया जा रहा था, एक आधार बनाया जा रहा था, जिस पर शक्ति का एक पुंज टिक सके, क्योंकि सामान्य एवं कमजोर शरीर में शक्ति का प्रादुर्भाव संभव नहीं।

इसलिए पहले कुछ सौम्य साधनाएं सम्पन्न करा कर पात्र तैयार किया जाता है और फिर उग्र साधनाओं द्वारा उसमें शक्ति, तीव्र शक्ति उड़ेल दी जाती है... ऐसी शक्ति जिसके आत्मसात् होते ही साधक का व्यक्तित्व बदल जाता है, उसके आसपास अदृश्य शक्ति का एक वर्तुल घूमता रहता है और जो भी उसके सम्पर्क में आता है, स्वतः ही उसके आकर्षण पाश में बंध जाता है, शत्रु उसके सामने आते ही समर्पण मुद्रा में आ जाते हैं और इस प्रकार वह चर-अचर समस्त वस्तुओं पर सहज प्रभुत्व जमा लेता है।

उग्र साधनाओं की इसी लम्बी कतार में चण्डोग्र शूलपाणि साधना सभी साधनाओं में विशिष्ट है, क्योंकि **स्वयं गुरु दत्तात्रेय ने एक स्थान पर कहा है, कि 'उग्र साधनाओं में चण्डोग्र शूलपाणि साधना पारसमणि के समान है। जो मनुष्य इसको प्राप्त कर लेता है, वह सहज ही धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष का अधिकारी होकर इन्द्र द्वारा पूजनीय हो जाता है।'**

चण्डोग्र शूलपाणि आदि देव महादेव का ही स्वरूप है और एक समय पर जब देवता दानवों के आक्रमण से विक्षिप्त हो गए थे, तब इन्होंने ही समस्त दानवों का विनाश कर पुनः देवताओं को अपने-अपने पद पर आरूढ़ किया था।

यह तो एक बाह्य घटना है, जबकि इसका सूक्ष्म विवेचन कुछ और ही है। हर मनुष्य में दो प्रकार के विचार - सद्विचार एवं कुविचार होते हैं। कुविचार रूपी दानव हमेशा सद्विचार रूपी देवताओं को प्रताड़ित करते रहते हैं और उन्हें समाप्त करने की चेष्टा करते रहते हैं। अतः सभी रूप में शूलपाणि मानव की सभी दानवीय प्रवृत्तियों का विध्वंस कर उसमें देवत्व की स्थापना करते हैं, जिससे वह आगे चल कर अद्वितीय युग पुरुष बन सके।

चार अस्त्र - शूल, नरकपाल, पाश और अंकुश

चण्डोग्र शूलपाणि उग्र देव होते हुए भी देखने में अत्यधिक मनोहर हैं, विशुद्ध स्फटिक के समान उज्ज्वल उनका वर्ण है, उनके सिर पर मुकुट है, उनकी चार भुजाएं हैं, उनके दाहिने हाथों में शूल एवं नर कपाल एवं बायें हाथों में पाश एवं अंकुश हैं, हरदम सुरा पान के आनन्द में वे मग्न रहते हैं।

'शूल' का तात्विक अर्थ है, कि वे साधक की सभी परेशानियों, कठिनाइयों, रोगों एवं शत्रुओं को वेध देते हैं और उसे उन पर विजय दिलाते हैं। अतः जो व्यक्ति यह साधना सम्पन्न कर लेता है, वह स्वतः ही निरोग, शत्रुहीन एवं परेशानियों से मुक्त होकर हर प्रकार की इच्छित सफलता प्राप्त करता ही है।

'नर कपाल' का अर्थ है मस्तिष्क और उसमें व्याप्त दिव्य चेतना एवं प्रज्ञा। आज्ञा चक्र एवं सहस्रार भी यहीं अवस्थित हैं, अतः ऐसे व्यक्ति की कुण्डलिनी शक्ति स्वयं जाग्रत हो आज्ञा चक्र की ओर निरन्तर अग्रसर होती रहती है। वह पूर्णतः चैतन्य अवस्था प्राप्त कर प्रज्ञावान हो जाता है तथा विद्वता एवं ज्ञान उसके अन्दर, उसके रोम-रोम में समाहित हो जाते हैं। यदि वह किसी से शास्त्रार्थ करता है, तो प्रतिद्वन्द्वी अपने आप ही हकलाने लग जाता है और पूर्ण समर्पण मुद्रा में प्रस्तुत हो जाता है। ऐसे साधक का समाज में पूर्ण सम्मान होता है और यहां तक कि विद्वान समाज भी उसके आगे नतमस्तक रहता है। भूत-भविष्य की घटनाएं भी ऐसे साधक के आगे नृत्य करने लग जाती हैं और उसे वाक् सिद्धि प्राप्त हो जाती है अर्थात् वह जो कुछ भी कहता है, वह आने वाले समय में होता ही है।

'पाश' का अर्थ है यमपाश अर्थात् शूलपाणि ऐसे साधक पर प्रसन्न होकर उसे यमपाश से मुक्त कर देते हैं। आकस्मिक अकाल मृत्यु उसे नहीं व्यापती और न ही जीवन में उसे दुर्घटना, शस्त्र या किसी अभिचार का भय रहता है। वह शतायु होकर नाना भोग भोगता है एवं अंत में बड़ी ही शांति



के साथ ब्रह्म में लीन होकर मोक्ष प्राप्त करता है।

'अंकुश' का अर्थ है इन्द्रियां, जो कि चञ्चल कहलाती हैं, उन पर पूर्ण नियन्त्रण। यहां नियन्त्रण का अर्थ दमन कदापि नहीं है अर्थात् यदि उनका उपयोग करने की आवश्यकता हुई, तो उनका उपयोग भी किया, परन्तु उनका स्वामी बन कर; न कि उनका दास बन कर। तभी तो शूलपाणि साधना का सिद्ध साधक गृहस्थ में रहता हुआ, विभिन्न भोगों को भोगता हुआ भी उनमें अलिप्त रहता है एवं कीचड़ में भी कमलवत् रह पाता है।

नेमिनाथ के बार-बार इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा में असफल रहने पर स्वयं कृष्ण ने उन्हें यह साधना सम्पन्न करवाई थी, जिससे कि वे अनन्त ऊंचाइयों को छू सकें और तीर्थङ्कर के रूप में युग पुरुष बन सकें।

निश्चय ही यह साधना अत्यधिक तीव्र एवं शीघ्र प्रभाव देने वाली तथा इसके द्वारा सर्वार्थ सिद्धि होती है, हर प्रकार की न्यूनता नष्ट होती है।

यह साधना दिनांक 14 मार्च 2010 वीर रात्रि के शुभ अवसर पर की जा सकती है, वैसे किसी भी रविवार को इस साधना को सम्पन्न किया जा सकता है। साधक को पूर्ण

मानसिक दृढ़ता एवं तेजस्विता के साथ साधना के लिए गुरु से मानसिक अनुमति लेकर ही बैठक चाहिए। यह रात्रिकालीन साधना है एवं नदी तट, पर्वत की अनुपस्थिति में किसी भी एकांत कमरे में भी भली प्रकार से सम्पन्न की जा सकती है।

सर्वप्रथम साधक को स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर गुरु पूजन के बाद एक बाजोट पर **'चण्डोग्र शूलपाणि यंत्र'** की स्थापना करनी चाहिए। यंत्र के वाम भाग के पास ही **'चण्डोग्र मुद्रिका'** स्थापित करनी चाहिए। फिर उनके समक्ष निम्न ध्यान करें -

शुद्ध स्फटिक संकाशं, चतुर्बाहुं किरीटिनम्।
शूलं कपालं दक्षे तु, वामे तु पाशमंकुशम्॥
सुरा-पान-रसाविष्टं, साधकाभीष्ट दायकम्।
ध्याये चण्डोग्र शूलपाणिं, सर्वार्थ सिद्धि प्रचम्॥

यंत्र एवं मुद्रिका का पुष्प, सिन्दूर, धूप, दीप, नैवेद्य से पंचोपचार पूजन कर निम्न **कर न्यास** एवं **अंग न्यास** करें -

ॐ ह्रां	***अंगुष्ठाभ्यां नमः***	***हृदयाय नमः।***
ॐ ह्रीं	***तर्जनीभ्यां स्वाहा***	***शिरसे स्वाहा।***
ॐ ह्रूं	***मध्यमाभ्यां वषट्***	***शिखायै वषट्।***
ॐ ह्रैं	***अनामिकाभ्यां हुं***	***कवचाय हुं।***
ॐ ह्रौं	***कनिष्टाभ्यां वौषट्***	***नेत्र त्रयाय वौषट्।***
ॐ ह्रः	***करतल पृष्ठाभ्यां नमः***	***अस्त्राय फट्।***

फिर **'चण्डोग्र माला'** से एक माला गुरु मंत्र का जप कर उसी माला से निम्न मंत्र का 51 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

॥ॐ ह्रां ह्रीं चण्डोग्राय शिवाय ॐ फट्॥

यह छोटा सा दिखने वाला मंत्र अत्यधिक तेजस्वी एवं ब्रह्माण्ड की समस्त ऊष्मा अपने अन्दर समेटे हुए है। अतः साधक को यदि तीव्र ज्वर एवं शरीर टूटने का अहसास हो, तो वह घबराये नहीं, साधना में संलग्न रहे।

यह साधना सफल होते ही व्यक्ति अपने अन्दर प्रचण्ड शक्ति का अनुभव करता है, अधिकारी भी उसकी हर बात को सिर-आंखों पर रखते हैं। वह तीव्र सम्मोहन ये युक्त हो, सभी प्रकार के ऐश्वर्य एवं सुख को सहज ही प्राप्त कर लेता है और समाज में उसकी पूर्ण प्रतिष्ठा होती है। साधना पूरी होने के बाद यंत्र, मुद्रिका तथा माला को नदी में प्रवाहित करें।

चण्डोग्र शूलपाणि एक ऐसी तीव्र साधना है, जिसे गुरु केवल हिम्मतवान, निडर एवं तेजस्वी शिष्यों को ही देते हैं, जिनसे उनको बहुत आशा होती है, जिन पर उन्हें गर्व होता है और यह विश्वास होता है, कि वे इस प्रचण्ड शक्ति को पचा सकेंगे, आत्मसात् कर सकेंगे।

पूज्य गुरुदेव की कृपा से यह साधना रूपी हीरक खण्ड प्राप्त हो सका, शायद उनकी नजर में हम सब उस भावभूमि पर खड़े हो चुके हैं, जहां से उग्र साधनाओं का प्रारम्भ होता है... अब तो मात्र आगे बढ़कर चण्डोग्र शूलपाणि को अपने अन्दर लीन करना मात्र ही शेष है।

साधना सामग्री - 360/-

प्रेरणा के लिये जरूरी संवेदी मन

काशी नरेश की कन्या वेद शास्त्रों की ज्ञाता थी। यह समय वह था, जब सारे देश में बुद्ध का आकर्षक संदेश पलायवादी विचारकों का पोषक बन गया था। राजकन्या का अधिकांश समय भी शास्त्र चर्चा में व्यतीत होता। धर्म और अध्यात्म के सम्यक स्वरूप को जनता के सामने लाने के लिए दिन-रात उसका चिंतन चलता रहता था। एक प्रातः इसी विचार में वह राजमहल की खिड़की से देख रही थी। नीचे मुख्य मार्ग से आ-जा रही प्रजा में गृहस्थ कम, भिक्षु ही अधिक दिख रहे थे।

लोक जीवन में धर्म के नाम पर फैली इस निष्क्रियतावादी सोच के प्रभाव पर वह विचार कर रहीं थी, तभी नीचे से एक किशोर ब्रह्मचारी गुजरा। वह बटुक अत्यंत मेधावी कुमारिल भट्ट था। राजकुमारी की आंखों से आंसू की दो बूंद ब्रह्मचारी के कंधे पर गिरी। उसने ऊपर देखा तो उसे आंसू बहाते देख बड़ा आश्चर्य हुआ। उसके कारण पूछने पर राजकुमारी ने कहा - यहां समाज को देखकर मुझे वैदिक परम्परा के लुप्त होने का भय सता रहा है। क्या इस भारतवर्ष में ऐसा कोई नहीं, जो समाज को वैदिक ज्ञान से नई दिशा दे और धर्म के सही स्वरूप को स्थापित करे? कुमारिल को राजकुमारी के वैचारिक स्तर का ज्ञान हो गया। उन्होंने वहीं प्रतिज्ञा ली कि वे शास्त्रार्थ में वैदिक दर्शन से सभी मतों का खंडन कर ही दम लेंगे। उन्होंने तक्षशिला जाकर बौद्ध दर्शन का सम्पूर्ण अध्ययन किया। वहीं से उन्होंने बौद्ध विद्वानों को शास्त्रार्थ में हराना आरम्भ किया। तक्षशिला से शुरु हुई विजय यात्रा भारतवर्ष में घूमी और वैदिक परम्परा का पुरुत्थान संभव हुआ। कुमरिल की संवेदनशीलता ने एक राजकन्या के आंसुओं से प्रेरणा पाकर एक कठिन दौर में अपने योगदान से सनातन परंपरा की रक्षा की। प्रेरणा ग्रहण करने के लिए संवेदनशील मन की आवश्यकता होती है।

शिष्य धर्म

- शिष्य के हृदय में हरदम गुरु की चेतना व्याप्त रहती है ठीक उस प्रकार, जैसे हनुमान के हृदय में राम की छवि। हनुमान ने कहा कि मेरे हृदय में केवल एक चेतना पुंज व्याप्त है और उन्होंने अपना सीना फाड़ कर दिखा दिया कि राम के सिवाय उनके हृदय में किसी के लिए स्थान नहीं।
- शिष्य गुरु से उसी प्रकार प्रेम करता है जिस प्रकार मार्कण्डेय शिव से प्रेम करते थे। साधना का अर्थ ही है प्रेम, अपने इष्ट से, अपने गुरु से और उस प्रेम को व्यक्त करने की क्रिया में काल-समय भी बाधक नहीं हो सकता, ऐसा मार्कण्डेय ने सिद्ध करके दिया दिया। ऐसा ही प्रेम शिष्य का गुरु से हो।
- शिष्य और गुरु के बीच थोड़ी भी दूरी न हो। इतना शिष्य गुरु से एकाकार हो जाए कि फिर मुंह से गुरु नाम या गुरु मंत्र का उच्चारण करना ही न पड़े। जिस प्रकार राधा के रोम-रोम से सदा कृष्ण कृष्ण कृष्ण .... उच्चरित होता रहता था उसी प्रकार शिष्य के रोम-रोम से गुरुमंत्र उच्चरित होता रहे - सोते, जागते, चलते, फिरते।
- शिष्य को स्मरण रहे कि सद्गुरुदेव सदा उसकी रक्षा के लिए तत्पर हैं। कोई क्षण नहीं जब सद्गुरु उसका ख्याल न रखते हों। जिस प्रकार हिरण्यकश्यप के लाख कुचक्रों के बाद भी प्रहलाद का बाल भी बांका न हुआ, उसी प्रकार शिष्य की आस्था है तो संसार की कोई भी शक्ति उसका अहित नहीं कर सकती।
- शिष्य को यह अहसास रहे कि सद्गुरु ही उसके माध्यम से कार्य कर रहे हैं, वे ही सब करवा रहे हैं। शिष्य स्वयं से कुछ भी नहीं करता। जिस प्रकार भगवत प्रेरणा से वाल्मीकि जैसे डाकू भी एक श्रेष्ठ ऋषि हो सके और रामायण की रचना कर सके, उसी प्रकार शिष्य द्वारा किए हर कार्य के प्रेरणा स्रोत सद्गुरु ही हैं।
- शिष्य याद रखे कि उसकी वास्तविक शक्ति तो उसके सद्गुरु ही हैं। सद्गुरु से वह एकाकार है तो बेशक समस्त संसार उसका शत्रु हो जाए, उसका अहित नहीं हो सकता। जिस प्रकार जगतगुरु भगवान कृष्ण की शक्ति से केवल पांच पांडव सैकड़ों वीरों से सुशोभित कौरव सेना का भी संहार कर पाए उसी प्रकार एक साधारण शिष्य भी संसार में किसी भी विषम परिस्थिति में सद्गुरु कृपा से विजयी हो सकता है।

गुरु वाणी

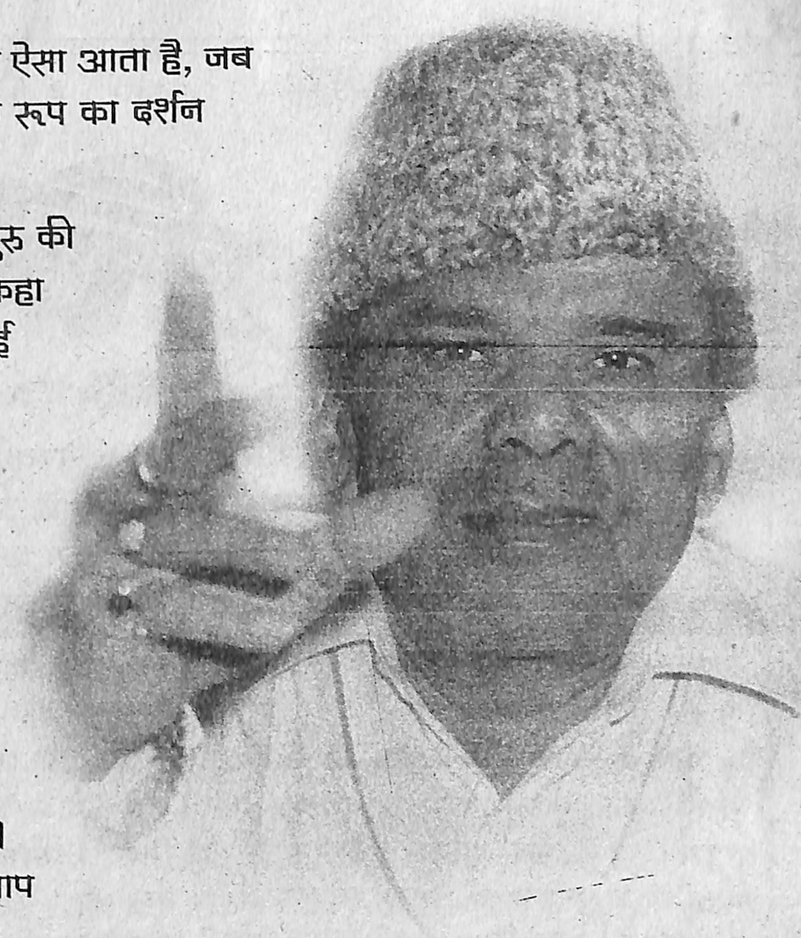
✧ प्रत्येक व्यक्ति जब जन्म लेता है तो शूद्र के रूप में होता है, इसलिए कि उसको ज्ञान नहीं होता। उसको इस बात का ज्ञान नहीं होता कि मैं क्या हूं और जब गुरु के पास में आता है, तब गुरु उसको एक नया संस्कार देते हैं। उसको यह समझाते हैं कि यह उचित है, यह अनुचित है और आज से तुम मेरी जाति के हो, मेरे गोत्र के हो, मेरे नाम के हो, मेरे ही पुत्र हो।

✧ हमारा पूरा शरीर अपने आप में शूद्रमय है और यह शूद्रमय शरीर ब्राह्मणमय शरीर बने यही जीवन का धर्म, यही जीवन का लक्ष्य होना चाहिए।

✧ इसी शरीर को भगवान का देवालय कहा है, मंदिर कहा है। ये भगवान का मंदिर है। इस लिए 'शरीरं शुद्धं रक्षेत्' शरीर को शुद्ध और पवित्र बनाए रखना आवश्यक है, इसलिए आवश्यक है, कि हमें हर क्षण यह ध्यान रहे कि अन्दर मूल मंदिर में भगवान बैठे हुए हैं या जिनको हमने गुरु कहा है।

✧ गुरु है वही शिव हैं। शिव यानी कल्याण करने वाला, जो हमारा कल्याण कर सकें, जो इसमें भेद मानता है, वह अधम है। गुरु और शिव में भेद रहता है, जब तक हम शूद्र रहते

है, तब तक भेद रहता है और एक क्षण ऐसा आता है, जब साक्षात् उस शिवत्व का, उस कल्याण रूप का दर्शन करने लग जाते हैं।



- ✧ शिष्य को गुरु के हाथ, गुरु के पैर, गुरु की आंख, गुरु का नेत्र, गुरु का मस्तिष्क कहा गया है क्योंकि गुरु अपने आप में कोई साकार बिम्ब नहीं है, निराकार को एक मूर्ति का आकार दिया गया है। ये सारे शिष्य मिलकर के एक गुरुत्वमय बनता है, एक आकार बनता है।
- ✧ तर्क वितर्क की एक स्टेज है और तर्क वितर्क से अगली स्टेज शिष्यत्व की तब बनती है जब गुरु जो करता है वैसा नहीं करें, जो गुरु कहें वैसा करें। दोनों में अंतर है। जो गुरु करे, वैसा आप करेंगे तब गड़बड़ हो जाएगी।
- ✧ इसलिए मैं जो करता हूं वह तुम मत देखो, उसका अनुसरण तुम मत करो। जो मैं कहूं उसका तुम अनुसरण करो।
- ✧ जब आप गुरु के शरीर से गुरु के आत्म से गुरु के पांव से घिसेंगे अपने आपको, एकाकार होंगे, आपमें भी सुगन्ध व्याप्त होगी ही होगी। जब सुगन्ध व्याप्त होगी, तो ऐसी खुमारी आयेगी, एक मस्ती आयेगी। फिर काम करते हुए थकेंगे नहीं आप। फिर आपको यह लगेगा कि मेरा शरीर, मेरा समय नष्ट हो रहा है, मैं और क्या काम करूं, कैसे बढ़ाऊं इस चेतना को, इस ज्ञान को कैसे फैलाऊं?



शक्ति पूजा की परम्परा







शक्ति की साधना उपासना भारतीय आर्य संस्कृति की प्रधान विशेषता रही है, आज से हजारों वर्ष पूर्व शाक्त साधना विभिन्न रूपों में अवश्य ही की जाती थी, शक्ति उपासना प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का अंग था। किस काल में शक्ति की किस प्रकार उपासना होती थी, इस सम्बन्ध में यह सारगर्भित लेख -

शक्ति पूजा की प्राचीन उपासना की एक विधा है। इस उपासना में शक्ति की प्रतीक मूर्तियों की आराधना की जाती है। इसमें पुरुष से भिन्न प्रकृति की शक्ति की अवस्थित आराधना की जाती है। शक्ति की उपासना मूलतः शक्ति की प्रधानता को ही प्रतिष्ठित करती है। शक्ति और शिव की महत्ता के उपस्थापन के नियमन के समय शिव शब्द की व्यापकता पर ध्यान दिया जाता है जिसमें शिव में स्थित 'इ' शिव को महत्व दिया जाता है। इस 'इ' 'ि' के अभाव में शिव तो शव हो जाते हैं।

शक्ति उपासना भारतीय इतिहास के उषा काल के समय से वर्तमान पर्यन्त है। प्रो. श्री वी.आर.रामचन्द्र दीक्षितार ने लिखा है - **'शक्ति उपासना के अविर्भाव का प्रश्न, अन्य भारतीय पुरातत्व सम्बन्धी विषयों की भांति, रहस्य आच्छन्द है।'** वस्तुतः शक्ति पूजा सम्बन्धी अनेक संकेत मोहनजोदड़ो और हड़प्पा में निकले हैं जिनसे यह स्पष्ट प्रमाणित होता है कि शक्ति की उपासना सिन्धु प्रदेश की सभ्यता में भी वर्तमान थी। प्रसिद्ध इतिहासकार **सर जॉन मार्शल** भी मानते हैं कि शक्ति पूजा इस देश में प्राचीन काल से प्रचलित है। साथ ही यह भी माना जाता है कि शक्ति उपासना की प्रथा माता महादेवी की आराधना से सम्बन्धित है। इसका प्रगाढ़ सम्बन्ध शैवमत से है, योनि और लिङ्ग की संयुक्त उपासना ही इसका प्रमाण है। दीक्षितार इसे ईस्वी सन् से तीन हजार वर्ष पूर्व में प्रचलित उपासना प्रकृति के रूप में मानते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि ईसा से चार हजार वर्ष पूर्व यह मत वर्तमान था। शैव और शक्ति सम्प्रदायों के विकास का क्रम एक समान था। शाक्त सम्प्रदाय इस देश के निवासियों की जीवनशैली से सम्बन्धित है। **शक्ति परमेश्वर की आनन्दमयी इच्छा है। ऋग्वेद में शक्ति की उपासना को व्यापक महत्व दिया गया है। यहां अदिति को ही मूल शक्ति माता के रूप में अधिष्ठित किया गया है। ऋग्वेद में उषा देवी के सम्बन्ध में वर्णन है। ऋग्वेद में अम्भृण मुनि की पुत्री द्वारा रचित वाक्सूक्त से स्पष्ट ही शक्ति उपासना के प्रसंग को बल मिलता है।**

लक्ष्मी सूक्त से भी शक्ति की अभ्यर्थना की पुष्टि होती है। लक्ष्मी शब्द यहां संज्ञा के रूप में आया है। **'श्री राम भद्रैवां लक्ष्मी निहिताधि वाचि'** वाणी में लक्ष्मी का निहित होना कहा गया है, इससे लक्ष्मी के स्वरूप का संकेत मिलता है। इन्हें ऐश्वर्य का द्योतक कहा गया है। इस प्रकार शक्ति प्रतीक अनेक देवियों का वर्णन मिलता है जैसे अदिति, सिनीवाली, इला, सरस्वती, इन्द्राणी, शका आदि। इसके बाद श्वेताश्वतर, छान्दोग्य और कठ शाखा के उपनिषद में भी शक्ति की आराधना के संकेत विद्यमान हैं।

कठोपनिषद में अदिति नाम की शक्ति को देवतामयी कहा गया है। संहिताकाल में गायत्री, सावित्री और सरस्वती के वर्चस्व की पूजा की गई है। गायत्री को महाशक्ति के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। शक्ति को उपनिषदों में अनेक नामों से सम्बोधित किया गया है। ऋग्वेद की ऐतरेय शाखा के ब्राह्मण उपनिषदों में इसे स 'ऐ क्षत' उस परमात्मा का संकल्प किया ऐसी वाणी है। तंत्र में इसे पर बिन्दु की संज्ञा से विभूषित किया गया है। इसे अपर बिन्दु के रूप में भी जाना जाना गया है। कालान्तर में अपर बिन्दु को तीन विभागों में विभाजित कर दिया गया है। इन तीनों के सम्मिलित रूप को त्रिपुरधाम के नाम से सम्बोधित किया गया है। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिव का प्रतीक लिङ्ग है, विष्णु की शालिग्राम शिला और शक्ति का प्रतीक सबिन्दु

त्रिकोण है। शक्ति पूजा की परम्परा के सम्बन्ध में पुराणों और अन्य ग्रंथों में भी पर्याप्त सामग्री मिली है। शक्ति पूजा की इस विधि को 'आगम' कहा जाता है। आगम ही शक्ति साधना का मूल स्रोत है।

स्पष्ट है कि भारत में शक्ति की पूजा प्राचीन काल से ही चली आ रही है प्राचीन युग में शक्ति का रूप शिव की शक्ति अर्थात् पार्वती के रूप में उपलब्ध है। इस उपासना के मूल में तांत्रिक और दार्शनिक दृष्टिकोण की प्रधानता है। शिव और शक्ति की व्याख्या में शक्ति की महत्ता सर्वोपरि है। पार्वती ही महाकाली बन गई। भारतीय धार्मिक परम्परा में त्रिदेव के बाद शक्ति की उपासना सर्वाधिक मान्य है। पंचदेवोपासना में भी शक्ति की महत्ता है। धीरे-धीरे शक्ति की विभिन्न देवियों की आराधना होने लगी जैसी काली, चामुण्डा, चण्डी, देवी, शिवानी, रूद्राणी और भवानी। मध्यकालीन भारत में शक्ति की उपासना बहुत लोकप्रिय हो गई। त्रिदेव के साथ त्रिदेवी को धार्मिक और सामाजिक मान्यता मिली। सृष्टि, पालन और संहार की अधिष्ठात्री देवी के रूप में शक्ति की अभ्यर्थना की गई।

शक्ति की महत्ता को सभी स्वीकार करते हैं। यह अत्यन्त ही लोकव्यापी उपासना बन गई। इसे **'परो दिवा पर एना'** के साथ समन्वित किया जाता है। **वाजसेनेमि संहिता** में देवी को अम्बिका के रूप में स्वीकार किया गया है। इनको रुद्र की बहन के रूप में दिखाया गया है। तैत्तिरीय और शतपथ ब्राह्मण में भी रुद्र की बहन के रूप में अम्बिका का वर्णन है। रुद्र की पत्नी पार्वती का सन्दर्भ भी तैत्तिरीय आरण्यक में है। उमा का उल्लेख केनोपनिषद में भी है। यहां इन्हें विद्या की देवी के रूप में दिखाया गया। रहस्य को भी रहस्यान्न करने के लिए माया से बांध दिया गया। **माया शब्द से शक्ति को अभिमंत्रित किया गया। माया को प्रज्ञा और ज्ञान से सम्पृक्त कर दिया गया। इसे स्वप्न के आवर्त में भी रखा गया। यही कारण है कि देवी शक्ति को वाग्देवी और स्वप्नमयी मोहिनी रात्रि के नाम से भी सम्बोधित किया गया। शक्ति की शक्ति ज्ञान और मोह के नाम से अभिज्ञात माना गया है।** इनका एक नाम जगज्जननी है। इस रूप में यह अपनी प्रतिभा का प्रसार तीनों लोकों में करती है। इनका एक रूप लोक में बहुत ही **सामदृत** है। इन्होंने इस रूप से असुरों का संहार किया था। इनके विभिन्न रूपों में दुर्गा और महाकाली की अत्यन्त ही लोकप्रियता प्राप्त है। इनके एक रूप को योगनिद्रा के साथ सम्पृक्त किया जाता है। इनका एक रूप भद्रकाली है।

इस प्रकार शाक्त साधना में शक्ति को अधिक महत्व दिया गया। शक्ति पूजा की परम्परा प्राचीन काल से प्रचलित है। इनको किसी तिथि विशेष में बांधना ठीक नहीं होगा। मोहन जोदड़ों में भी शक्ति साधना का संकेत है। वैदिक साहित्य में शक्ति किसी न किसी रूप में है। उपनिषदों और पुराणों में भी शक्ति की पूजा का स्वरूप है। तंत्रों में शक्ति की महिमा के असंख्य आख्यान हैं। शंकराचार्य प्रथम के समय में कौलाचार का व्यापक प्रचार था। बाणभट्ट के **'हर्षचरित'** में भी भैरवाचार्य का वर्णन है। अवन्तिसुन्दरी कथा में कापालिकों का वर्णन है। शूद्रक की 'मृच्छकटिकम्' में वाममार्गियों का वर्णन है। नलचम्पू में भी कौलामार्गियों का उल्लेख है। बौद्ध जातकों तथा जैन कथा सूत्रों में भी वाममार्गियों की चर्चा है। कालिदास के नाटकों में भी वाममार्गियों की चर्चा है। इनसे ज्ञात होता है कि शक्ति पूजा की परम्परा अत्यन्त ही प्राचीन है।

- डॉ. मोहन मिश्र

यह हकीकत है

मंत्र और तंत्र आज की नहीं हजारों-हजारों वर्षों की तपस्या पूंजी है, जिसे कुछ सिरफिरे लोग बदनाम करने पर तुले हुए हैं।

कुछ श्रेष्ठ बुद्धिमान, 'मंत्र-तंत्र' के नाम से डरते हैं, घबराते हैं, तो मुझे आश्चर्य होता है, कि हम कैसे भारतीय हैं, हमारी क्या मानसिकता बन गई है, हम क्यों डरपोक और दब्बू बन गए हैं, जब उच्चकोटि के अधिकारी, माननीय, न्यायाधीश एवं श्रेष्ठ वर्ग दम ठोककर कहेगा, कि यह हमारे पूर्वजों का सारभूत यथार्थ ज्ञान है, तब पहली बार अंग्रेजी मानसिकता से मुक्ति पाकर सही अर्थों में हम भारतीय होने का गौरव अर्जित कर सकेंगे।

अंधविश्वासी हम नहीं हैं, वे हैं, जो हमें अंधेरे में धकेलने पर तुले हुए हैं, भारतवर्ष में जो कुछ आध्यात्मिक दीपक जल रहे हैं, उन्हें बुझाने के लिए कुछ लोग प्रयत्नशील हैं।

अंध विश्वास वो है, जो इस प्रवचन के ज्ञान का, मंत्र-तंत्र का, प्रवचनों का और आध्यात्मिक साहित्य का विरोध कर अपनी रोटियां सेक रहे हैं।

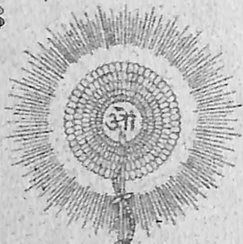
ऐसे मुट्ठी भर लोगों के सामने दृढ़ता के साथ खड़ा होना है, उन्हें करारा जवाब देना है, अपने पूर्वजों के ज्ञान को सुरक्षित रखने के लिए कृत संकल्प होना है, तभी हम सही अर्थों में भारतीय हो सकते हैं।

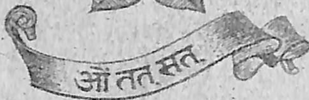





कुण्डलिनी जागरण की यात्रा
मूलाधार से सहस्रार तक
आधुनिक विज्ञान की भाषा में

इबोपी





मानव का अर्थ है - वह व्यक्ति, जिसका अपने मानस पर पूर्ण अधिकार हो और जो मानवीय मूल्यों से परिपूरित हो।

शरीर को चैतन्य करने का अर्थ है - अन्दर के चित्त को, अपने अन्दर के समस्त चक्रों को क्रियान्वित कर देना। इन चक्रों को चैतन्य करने पर ही आध्यात्मिक व पारलौकिक जगत की उपलब्धियों की प्राप्ति संभव है।

इबोपी का मूल ध्येय है - इस शक्ति का प्रवाह मस्तिष्क की ओर करना।

आप शुरुआत करें, मूलाधार चक्र जागरण क्रिया से, आगे एक-एक चक्र जाग्रत होते चले जाएगें। आपमें सामर्थ्य है, क्षमता है क्योंकि आप सद्गुरुदेव के शिष्य हैं और सद्गुरु के शिष्य को जीवन में सफलता निश्चित प्राप्त होती है।

लोगों ने संकुचित और सड़े-गले मानसिक दायरे में ही चलने में प्रसन्नता अनुभव की, जबकि मानव शरीर की पूर्ण जानकारी हेतु स्वतंत्र तथा खुले ढंग से मस्तिष्क के प्रयोग की आवश्यकता है, जिसके द्वारा भारतीय योगियों ने 'इबीबी' (Inner Body Prosperity) अर्थात् 'मानव शरीर की आन्तरिक समृद्धि' के ज्ञान से सम्बन्धित अनेक तथ्य प्रस्तुत किये। पश्चिम के विद्वानों ने भी इस रहस्यमय क्षेत्र की तह तक पहुंचने का प्रयास किया, पर उनकी दृष्टि बाहरी ही रही, उन्होंने वास्तवि ज्ञान को नहीं परखा, फलस्वरूप वे गहराईमें नहीं उतर पाये।

हमारे प्राचीन आध्यात्मिक ग्रंथों में अनेक स्थानों पर मानव के दिव्य पराशक्ति सम्पन्न होने के सम्बन्ध में विवरण प्राप्त होते हैं। यह विज्ञान केवल भारत तक ही सीमित नहीं था, अपितु चीन और यूनान में भी इसके ज्ञाता थे, जिन्होंने इसे समाज में एक सम्मानजनक स्थान दिलाया।

रावण इसका महान ज्ञाता था, उसने, अपने शरीर स्थित 'अमृत कुण्ड' को ज्ञात कर उसको जाग्रत किया और जब तक यह अमृत कुण्ड उसके शरीर में विद्यमान रहा, उसे कोई मार नहीं पाया। अपनी असीम शक्तियों के बल पर उसने पूरी लंका को स्वर्ण नगरी में बदल दिया।

हनुमान वायु वेग से एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में ...र्थ थे। यही नहीं, वे इच्छानुसार अपने शरीर को छोटा-बड़ा करने में भी समर्थ थे।

विश्वामित्र ने तो इस शक्ति के आधार पर एक नई सृष्टि का निर्माण भी प्रारम्भ कर दिया था।

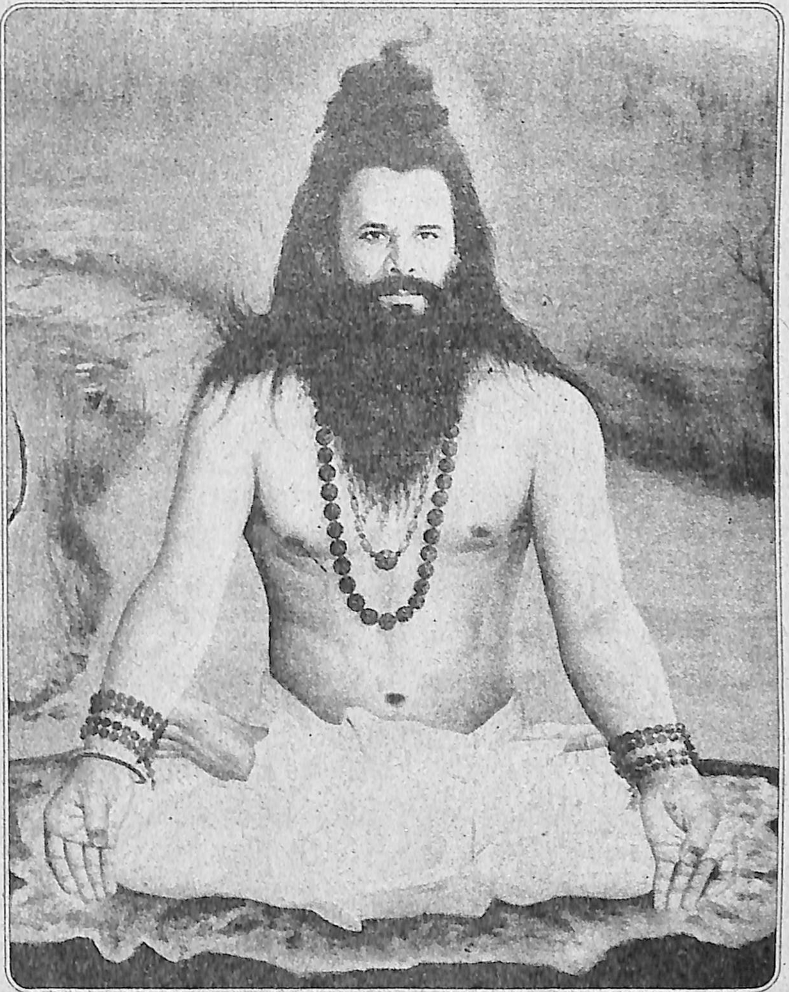
अनेक भारतीय योगियों के सम्बन्ध में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में विचरण करने एवं एक ग्रह से दूसरे ग्रह पर जाने के विवरण प्राप्त होते हैं।

कन्फ्यूशियस नामक एक बहुत ही विख्यात दार्शनिक एवं तत्त्वज्ञाता चीन में हुए हैं, जिन्होंने अपने शरीर को प्रकृति के स्वरूप में ढाल कर अनेक दिव्य शक्तियां प्राप्त कीं।

यूनानी सभ्यता के उत्थान की चरम सीमा पर वहां भी इस विषय में अनेक शोध हुए और आगे की पीढ़ियों के लिए नवीन मार्ग प्रशस्त किये गए। ऐनक्सागोरस, हिस्पैनस, अरस्तू आदि दार्शनिकों ने इस विषय पर गहन शोध किये और मानव शरीर की दिव्य चमत्कारिक शक्तियों से समाज को अवगत कराया।

इनके अतिरिक्त यहूदी तथा मिस्र के लोगों को भी छठी इन्द्रिय का ज्ञान था। 'नास्त्रेदाम' भी एक यहूदी था, जिसकी भविष्यवाणियों की प्रामाणिकता को आधुनिक वैज्ञानिक भी नकार नहीं पाये हैं।

आधुनिक युग में भी जीन डिक्सन, पीटर हरकौस, प्रोफेसर हरार, डॉ. जूलबर्न, कीरो, माल्वा डी, गेरार्ड क्राइसे, मिशेल ग्रेस, प्रोफेसर वाल्टर बेन आदि अनेक व्यक्तित्व हुए हैं, जिन्हें अतीन्द्रिय शक्ति प्राप्त हुई, जिसकी विवेचना करने में आधुनिक विज्ञान सक्षम नहीं हो पाया।



तिब्बती लामाओं ने भी मानव शरीर की रहस्यमयता का गहन अध्ययन कर अनेक सम्भावनाओं का पता लगाया है। वे शल्य चिकित्सा के माध्यम से छठी इन्द्रिय या तीसरी आंख को जाग्रत करते हैं, हवा में उड़ सकते हैं, बर्फ में नंगे पैर चल सकते हैं, महीनों तक बिना खाये-पिये रह सकते हैं।

उच्चकोटि के भारतीय योगियों और संन्यासियों ने तो मांत्रिक, तांत्रिक व यौगिक पद्धतियों का सहारा लेते हुए मानव शरीर को पूर्णता के साथ समझने में सफलता प्राप्त की है और वे उपनिषदों, पुराणों व आध्यात्मिक ग्रंथों में वर्णित दिव्य चमत्कारी शक्तियों को जाग्रत करने में समर्थ हुए हैं।

लेकिन भौतिक समाज में स्थिति विपरीत है। आधुनिक मानव जीवन के मूल लक्ष्य - हमारा शरीर, जो कि जड़ स्वरूप है, पूर्ण चैतन्यता युक्त बने और इस शरीर के समस्त अंग-प्रत्यंग, इन्द्रियां तथा प्रत्येक अणु-परमाणु अपने आपमें विकसित हों, जिससे हम अणु से महान बनते हुए अपने जीवन को पूर्णत्व दे सकें - इस क्रिया से भटक गया और पशुता उसके ऊपर प्रभावी हो गई, मानव शरीर की सक्रियता समाप्त हो गई और पाशविकता छा गई।

खाना, दौड़ना, क्रीड़ाएं करना, बच्चे पैदा करना सक्रियता नहीं है, मानव सक्रियता तो कदापि नहीं, यह तो पशुता है, पशु भी इन समस्त क्रियाओं को करने में सक्षम होते हैं।

मानव का अर्थ है - वह व्यक्ति, जिसका अपने मानस पर पूर्ण अधिकार हो और जो मानवीय मूल्यों से परिपूरित हो।

बाइबिल में एक स्थान पर ईसा ने कहा है - जीवन की सफलता इस बात में है, कि हम अपने में डूब जायें... और तुम अपने आपमें डूब जाओ, यही जीवन की पूर्णता है।

अपने आपमें डूबने की इस क्रिया का ही नाम 'इबोपी' है।

इबोपी को जान कर हर कोई मानव बनने के पथ पर अग्रसर हो सकता है और जब ऐसा होगा, तो सम्पूर्ण विश्व अकस्मात् ही बदल जायेगा और एक आनन्ददायक स्थल में परिवर्तित हो जायेगा। तब युद्ध, आतंकवाद, संघर्ष आदि नहीं होगा, अपितु एक ऐसी मधुरिमा युक्त सृष्टि होगी, जो कि सम्पूर्ण मानव जाति को एक ही भाई-चारे एवं बंधुत्व के

धागे में पिरो देगी।

यह निर्विवाद सत्य है, कि शक्ति सुप्तावस्था में हमारे शरीर में विद्यमान है। इबोपी के माध्यम से इसी सुप्त शक्ति को क्रियान्वित कर मानव अपने शरीर को, जो जड़ है, उसको चैतन्यता प्रदान की जाती है और उसे ऊर्ध्व गति प्रदान कर पूर्णता की ओर अग्रसर किया जाता है।

लोकहितार्थ

इबोपी क्रिया को यदि आप किसी अन्य व्यक्ति के लिए (जो साधना करने में असमर्थ हो) फलप्रद करना चाहते हैं, तो आपको **'मूलाधार मंत्र'** का सवा लाख मंत्र 11, 21 या 28 दिन में जप करना होगा, माला प्रयुक्त होगी विशेष मंत्रों से अभिसिक्त **'कुण्डलिनी माला'**।

इस माला के द्वारा आप 21 दिन में सवा लाख मंत्र जप का अनुष्ठान सम्पन्न करें, तत्पश्चात् आप में कुण्डलिनी शक्ति का स्फुरण प्रारम्भ हो जायेगा, जिसके माध्यम से आप अपनी शक्ति को रोगी व्यक्ति के शरीर में प्रवाहित कर सकेंगे।

निश्चित सफलता के लिए आवश्यक है, कि आप **'कुण्डलिनी जागरण दीक्षा'** अथवा मूलाधार चक्र से सम्बन्धित **'विशेष शक्तिपात दीक्षा'** तथा **'गुरु दीक्षा'** प्राप्त कर लें।

इस साधना को सम्पन्न कर आप निष्कपट मन से, निःशुल्क लोकहितार्थ कार्य करें और अनेकशः लोगों के लिए जीवनप्रद बनें - ऐसा पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद है।

अनुष्ठान पूरा करने के बाद आप जिस किसी व्यक्ति के रोग का निदान करना चाहते हैं, उसके चित्र को अपने सामने रखें तथा अपने मूलाधार चक्र पर ध्यान केन्द्रित करें। फिर 21 बार मंत्रोच्चारण करते हुए चित्र पर त्राटक करें तथा मन में उस व्यक्ति के ठीक होने का भाव रखें।

इस क्रिया को प्रारम्भ करने से पूर्व दाहिने हाथ में जल लेकर जिसके लिए आप यह क्रिया करने जा रहे हैं, उसका नाम लेकर संकल्प लें और मूलाधार स्थित **'देवता ब्रह्मा'** से उस व्यक्ति को रोग मुक्त करने की प्रार्थना कर जल भूमि पर छोड़ दें।

शरीर को चैतन्य करने का अर्थ है - अन्दर के चित्त को, अपने अन्दर के समस्त चक्रों को क्रियान्वित कर देना। इन चक्रों को चैतन्य करने पर ही आध्यात्मिक व पारलौकिक जगत की उपलब्धियों की प्राप्ति संभव है।

प्रत्येक मनुष्य में जीवनी-शक्ति का प्रवाह होता है, जिसे हम प्राण की संज्ञा देते हैं। यह शक्ति वास्तव में एक घनीभूत विद्युत चुम्बकीय शक्ति है, जो कि मानव शरीर में मुख्यतः छः सूक्ष्म केन्द्रों में स्थित हैं।

शरीर में कुल बहत्तर हजार नाड़ियां हैं, जिनमें इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना प्रमुख हैं। पूरे शरीर की चेतना को एक साथ संगुम्फित करने में इन्हीं तीनों नाड़ियों का सहयोग है। इनमें भी सुषुम्ना प्रधान है, जो रीढ़ की हड्डी के मूल स्थान से उठ कर मस्तिष्क के शिखर तक पहुंचती है।

सुषुम्ना के मार्ग में विशेष नाड़ियों के संगम से विभिन्न आकार के छः केन्द्र बनते हैं, जिन्हें चक्र या कमल कहा जाता है। इन्हीं छः चक्रों में सुप्त शक्ति भिन्न-भिन्न स्पन्दन लिए घनीभूत रहती है।

इबोपी का मूल ध्येय है - इस शक्ति का प्रवाह मस्तिष्क की ओर करना।

ऐसा होने पर मस्तिष्क पूर्ण रूप से चैतन्यता को प्राप्त होता है तथा व्यक्ति अनेक क्षमताओं का स्वामी बन जाता है। यह भी ध्यान रखने योग्य तथ्य है, कि नीचे के पांच चक्र पंच तत्त्वों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

आयुर्वेद के अनुसार मानव शरीर तब तक स्वस्थ रहता है, जब तक इन पंच तत्त्वों का उचित तालमेल हो।

किसी भी एक या एक से अधिक तत्व की न्यूनता विभिन्न रोगों को जन्म देती है और किसी कारणवश एक या अधिक तत्त्व का लोप होने पर शरीर मृत्यु को प्राप्त होता है।

इन चक्रों के चैतन्य होने से सम्बन्धित तत्त्वों पर नियन्त्रण प्राप्त होता है, फलस्वरूप सम्बन्धित रोगों पर भी नियन्त्रण प्राप्त होता है।

अतः हम कह सकते हैं, कि रोगों के होने का मूल कारण हमारी अपने शरीर के प्रति अनभिज्ञता ही है, जबकि रोगों की निवारण शक्ति भी हमारे शरीर के अन्दर ही मौजूद होती है। समस्त चक्रों के चैतन्य होने पर व्यक्ति समस्त प्रकार के रोगों से मुक्त हो सकता है।

चक्र और कमल सामान्यतः एक ही हैं। इन दोनों में भेद सिर्फ इनकी स्थिति में है। जब तक ये शक्ति केन्द्र सुप्त अवस्था

में रहते हैं, तब तक इन्हें 'चक्र' कहा जाता है और जब कुण्डलिनी जागरण की प्रक्रिया द्वारा इनमें चैतन्यता आ जाती है, तो ये 'कमल' के रूप में सम्बोधित किये जाते है।

यही कारण है, कि कुण्डलिनी से सम्बन्धित चित्रों में इन शक्ति केन्द्रों को कमल के रूप में दर्शाया जाता है।

इन चक्रों को अधिक स्पन्दन युक्त करने की अनेक विधियां हैं। मंत्र साधना या योग साधना के द्वारा इन चक्रों के स्पन्दन में तीव्रता ला कर इन्हें ऊर्ध्वगति प्रदान की जाती है, परन्तु इस समस्त क्रिया में सद्‌गुरु का होना नितान्त आवश्यक है।

स्व के प्रयास से एक-दो चक्र के स्पन्दन में तीव्रता लायी जा सकती है, परन्तु पूर्ण चैतन्यता गुरु कृपा के बिना असम्भव है। स्व के प्रयास में किसी कारणवश बार-बार न्यूनता आने पर सद्‌गुरु करुणावश अपनी अहैतुकी कृपा करते हुए शक्तिपात के माध्यम से इन चक्रों का जागरण कर व्यक्ति को पूर्णत्व के मार्ग पर गतिशील कर देते हैं।

☆ इबोपी का प्रारम्भ चक्र, जिसे 'मूलाधार' कहते हैं, से किया जाता है।

☆ यह चक्र गुदा भाग एवं लिंग प्रदेश के मध्य में स्थित होता है।

☆ मूलाधार चक्र भारतीय वैदिक सिद्धान्त के पंच तत्त्वों - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु तथा आकाश (ईथर) - में से पृथ्वी तत्त्व से आपूरित होता है।

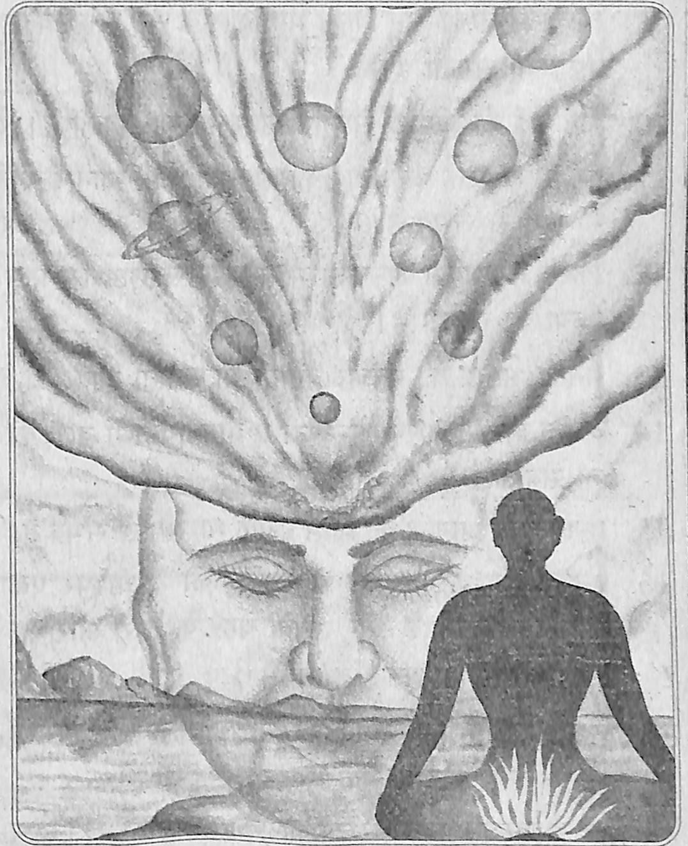
☆ पृथ्वी तत्त्व न्यून स्पन्दन युक्त शक्ति है। मानव शरीर की अधिकांश शक्ति इसी चक्र में घनीभूत है।

☆ इबोपी प्रक्रिया के माध्यम से इस न्यून स्पन्दन युक्त शक्ति को और अधिक स्पन्दन प्रदान किया जाता है, जिसके फलस्वरूप चक्र चेतनावस्था को प्राप्त करता है और अनेक आश्चर्यजनक क्षमताएं व्यक्ति के जीवन में उतर आती हैं।

☆ मूलाधार का आकार चार पंखुड़ियों (दल) वाले कमल के समान होता है। इस कमल का रंग हल्का जामुनी होता है। यह रंग उन रश्मियों का होता है, जो मूलाधार चक्र के चैतन्य होने के पश्चात् निःसृत होती हैं।

☆ इस चक्र के जागरण के पूर्व मानव केवल पशुवत् जीवन ही व्यतीत करता है, उसके चारों ओर अज्ञानता का अंधकार छाया होता है, जिससे वह हर क्षण आबद्ध होता है।

☆ मूलाधार चक्र के पूर्ण रूप से स्पन्दन युक्त होने के पश्चात् शरीर और आत्मा में ज्ञान के आलोक की पहली किरण का प्रादुर्भाव होता है, हल्का जामुनी रंग इसी का प्रतीक है।



☆ मूलाधार चक्र का उत्थान ही 'मानव' बनने की दिशा में पहला सार्थक क़दम है।

मूलाधार चक्र के माध्यम से निम्न भौतिक, आध्यात्मिक और चिकित्सकीय समस्याओं का निदान प्राप्त किया जा सकता है -

1. इस चक्र के माध्यम से भूमि तत्त्व पर नियन्त्रण प्राप्त किया जा सकता है।
2. व्यक्ति अपनी प्राण या जीवनी शक्ति में वृद्धि कर सकता है।
3. शरीर के समस्त तन्तुओं और स्नायुओं को चैतन्य कर पहले से अधिक क्रियाशील बनाया जा सकता है।
4. व्यक्ति की शारीरिक दुर्बलता मिटायी जा सकती है।
5. इसके माध्यम से चुम्बकीय व्यक्तित्व की प्राप्ति संभव है व व्यक्तित्व में निखार लाया जा सकता है।
6. व्यक्ति की शारीरिक क्षमता व बल में वृद्धि की जा सकती है।
7. समस्त प्रकार के तनाव से मुक्ति प्राप्त करने के लिए यह एक सर्वश्रेष्ठ उपाय है।
8. व्यक्ति के शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि की जा सकती है तथा रूप व यौवन की प्राप्ति संभव है।

9. त्वचा से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के रोग से छुटकारा पाया जा सकता है।
10. पीठ दर्द की बीमारी से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।
11. एनीमिया (रक्त अल्पता) की समस्या का निदान इसके माध्यम से संभव है।
12. किसी कारणवश अन्तर्मन में बैठे डर से छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।
13. मन व आत्मा को स्वच्छ बनाया जा सकता है।
14. व्यक्ति की आन्तरिक सुन्दरता व मानवीयता में वृद्धि की जा सकती है।
15. प्रसन्नता व आनन्द की प्राप्ति इसके माध्यम से संभव है।
16. इस प्रयोग के माध्यम से व्यक्ति की त्वचा पर एक कान्ति छा जाती है और उसके चेहरे के चारों ओर एक आभामण्डल सा बनने लगता है।
17. इसके माध्यम से पुरुष और अधिक पौरुषवान होते हैं और स्त्रियां और अधिक सुन्दर।
18. गुर्दे से सम्बन्धित समस्त प्रकार की बीमारियों का निदान इस विधि से संभव है।
19. बुखार में यह प्रयोग आश्चर्यजनक रूप से सफलता प्रदायक है।
20. इसके माध्यम से साइटिका रोग से भी मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।
21. इस प्रयोग के माध्यम से असीम शांति का अनुभव प्राप्त किया जा सकता है।

साधना विधान

★ इस प्रयोग को सम्पन्न करने हेतु प्राण प्रतिष्ठित मंत्र सिद्ध **'मूलाधार यंत्र'** की आवश्यकता पड़ती है।

★ प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में स्नानादि नित्य कर्म से निवृत्त होकर स्वच्छ पीले वस्त्र धारण कर पीले रंग के आसन पर बैठ जायें।

★ दिशा उत्तर या पूर्व हो।

★ सामने बाजोट पर पीले रंग का वस्त्र बिछा कर उस पर मूलाधार यंत्र का स्थापन करें।

★ पहले पूज्य गुरुदेव का ध्यान कर उनका पूजन करें और उनसे प्रार्थना करें - 'आप हमें इस साधना में सफलता प्रदान करें।'

★ गुरुदेव के पूजन के पश्चात् मूलाधार यंत्र का भी कुंकुम, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप तथा नैवेद्य चढ़ाकर पूजन करें।

मानव शरीर अपने आपमें अत्यन्त रहस्यमय है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने इसे समझने के अनेकों प्रयास किये हैं, और सतत् प्रयत्नशील हैं, परन्तु इतने अध्ययन, इतने अनुसंधानों के पश्चात् भी आधुनिक विज्ञान एक अन्तहीन पथ पर भटकता हुआ ही दिखाई पड़ता है, क्योंकि हम हर खोज बाहरी रूप में ही करते रहते हैं, आन्तरिक खोज के नाम पर शरीर को चीड़-फाड़ कर इसे जानने का प्रयत्न किया, किन्तु आत्मा या चक्र या कुण्डलिनी जैसी कोई चीज नहीं मिल पाई, फलस्वरूप निष्कर्ष निकाल लिया गया, कि आत्मा या कुण्डलिनी जैसी कोई चीज नहीं होती।

★ फिर मूलाधार यंत्र को ध्यान पूर्वक देखते हुए पूर्ण एकाग्र होकर निम्न मंत्र का आधे घण्टे अर्थात् 30 मिनट तक जप करें -

मंत्र

॥ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं फट्॥

ऐसा तीन दिन तक नित्य करें। ऐसा करने से यंत्र में संग्रहीत शक्तियों का स्थापन शरीर स्थित मूलाधार चक्र में हो जाता है, अतः मूलाधार चक्र के स्पन्दन में वृद्धि हो जाती है। तीन दिन के पश्चात् यंत्र को नदी में प्रवाहित कर दें।

अब जब भी आपके समक्ष उपरोक्त समस्याओं में से कोई भी समस्या सामने आती है, तो प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में दैनिक नित्य कर्म के पश्चात् पीले आसन पर स्वच्छ पीले वस्त्र धारण कर बैठ जायें तथा गुरु पूजन कर अपनी समस्या के निदान हेतु संकल्प लेकर मूलाधार चक्र पर ध्यान केन्द्रित कर उपरोक्त मंत्र का 10 मिनट तक जप करें।

ऐसा करने से मूलाधार की शक्ति स्पन्दित होकर आपको शक्ति प्रदान करेगी और इस प्रकार आप उस समस्या से मुक्ति प्राप्त करने में सक्षम हो सकेंगे।

इसी क्रम में अगले चक्र 'स्वाधिष्ठान चक्र' और उसके लिए इबीपी के उपयोग के बारे में जानकारी पत्रिका के अगले अंक में प्रस्तुत की जायेगी।

साधना सामग्री - 300/-

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड



परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड



परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

सेवा में

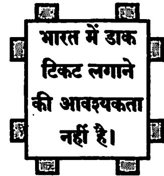
व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

डाक व्यय पत्र प्राप्त करने वाले द्वारा दिया जायेगा।

व्यापारी जवाबी पोस्टकार्ड



परमिट नं. J.D. 8
जोधपुर प्रधान डाकघर
जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

सेवा में

व्यवस्थापक : **मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान**

डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर - 342001 (राजस्थान)

यदि आप दीक्षा प्राप्त करने के इच्छुक हों, तो समय एवं स्थान का निर्धारण सुनिश्चित कर सकते हैं या आप अपना फोटो सम्बन्धित न्यौछावर राशि के साथ जोधपुर कार्यालय के पते पर भेज कर भी फोटो द्वारा दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ0 श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) फोन : 0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स : 0291-2432010

प्रिय सम्पादक जी, (पृष्ठ संख्या 22 पर प्रकाशित) दिनांक : .... फरवरी 2010

मैं लोकप्रिय पत्रिका मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान का 'वार्षिक सदस्य' बनना चाहता हूं। कृपया आप मुझे सम्बन्धित उपहार ***'राजेश्वरी यंत्र'*** स्वरूप भेज दें। 303/- की वी.पी.पी. आने पर (258/- वार्षिक सदस्यता शुल्क + 45/- डाक व्यय) के रूप में जमा कर मुझे रसीद भेज दें। वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर वी.पी.पी. छुड़ा लूंगा एवं हर माह मुझे पत्रिका भेजते रहे अथवा आप मेरे मित्र को हर माह पत्रिका भेजते रहें। 4

मेरा नाम : ....

पूरा पता : ....

....

....

....

मेरे मित्र का नाम : ....

उसका पूरा पता : ....

....

....

....

प्रिय सम्पादक जी, दिनांक : .... फरवरी 2010

'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' में प्रकाशित निम्न ऑडियो/वीडियो कैसेट्स-सी.डी वी.पी.पी. से भेज दें, वी.पी.पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि दे कर छुड़ा लूंगा। 5

<u>कैसेट्स के नाम</u>

....

....

....

....

मेरा नाम/पता : ....

....

प्रिय सम्पादक जी, (पृष्ठ संख्या 23 पर प्रकाशित) दिनांक : .... फरवरी 2010

मुझे निःशुल्क उपहार स्वरूप पूर्ण मंत्रसिद्ध, चैतन्य, प्राण प्रतिष्ठा युक्त ***'चैत्र नवरात्रि सम्पूर्ण पूजन विधान'*** सामग्री मिजवा दें। मैं 570/- की वी.पी.पी. आने पर उसे छुड़ा लूंगा। मेरा पता निम्न है -

नाम व पता : ....

पता : ....

और मेरे दोनों मित्रों को एक वर्ष तक नियमित पत्रिका भेजते रहें। मेरे दोनों मित्रों के नाम व उनके पूरे पते निम्न हैं 6

1. .... 2. ....

....

....

....



तीन विशिष्ट प्रयोग - एक शुभ मुहूर्त

सोमवती अमावस्या

जिस दिन साधना करने से जीवन की बाधाएं अवश्य शांत होती है और कामनाओं की पूर्ति होती है।

अमावस्या को आध्यात्मिक एवं दिव्य अनुभूतियों के लिए श्रेष्ठ माना गया है... इस दिन चंद्र, सूर्य के अन्दर विलीन होता है, उसकी तरंगें सूर्य की तरंगों में समाहित होती हैं... चन्द्रमा मन का देवता है एवं सूर्य आत्मा का, अतः अमावस्या का अर्थ ही है **'मन'** अर्थात् **'अहं'** का आत्मा अर्थात् परमात्मा में लीन होना ...और इस स्थिति में अमावस्या आध्यात्मिक अनुभवों के लिए अत्यधिक श्रेष्ठ है... और अगर अमावस्या के साथ-साथ इसमें अमृत तत्त्व का भी समावेश हो जाए, तो इस दिन की गई साधना फलीभूत होती ही है और फिर इससे उत्तम स्थिति अन्य हो ही नहीं सकती... ऐसी ही स्थिति रहती है **'सोमवती अमावस्या'** को, जो इस बार **दिनांक** 15 **मार्च** 2010 को है।

इसका प्रादुर्भाव किस प्रकार से हुआ, इस विषय में **'कूर्म पुराण'** में एक रोचक कथा आती है... जब कूर्मावतार, विष्णु की पीठ में मंदरांचल पर्वत रखा गया और वह स्थिर नहीं हो रहा था, तो एक ओर सूर्य ने और दूसरी ओर से चन्द्र ने सहारा देकर उसे संभाल लिया। समुद्र मंथन के बाद कूर्मावतार ने उन दोनों को आशीर्वाद दिया और कहा - **'जिस प्रकार से तुम दोनों ने मिलकर लोकहित के लिए यह कार्य किया है, उसी प्रकार जब कभी तुम दोनों जब एक-दूसरे में समाहित होओगे, तो वह दिवस अमृत तत्व से पूर्ण होगा और उसका महत्व एक सिद्ध दिवस के समान होगा।'**

तभी से आज तक सोमवती अमावस्या को साधना के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि इस दिन की जाने वाली साधना असफल नहीं होती... उसका सुप्रभाव हर हालत में मिलता ही है।

वैसे तो सोमवती अमावस्या सौभाग्य प्राप्त करने का दिवस है। सौभाग्य का अर्थ होता है - वे समस्त उपलब्धियां, जिन्हें प्राप्त कर हम अपने जीवन को आनन्दित और तरंगित बना सकें। अतः इस अवसर पर उच्चकोटि के संन्यासियों से प्राप्त कुछ प्रयोग दिये जा रहे हैं, जिनको सम्पन्न कर लेने से व्यक्ति हर प्रकार की बाधाओं से मुक्त होकर सफलता की ओर तीव्र गति से अग्रसर हो जाता है। ये समस्त प्रयोग आप **सोमवती अमावस्या दिनांक** 15-03-2010 को अवश्य ही सम्पन्न करें, क्योंकि यह एक अत्यन्त दुर्लभ अवसर आया है, जब -

किसी कारणवश इस अवसर पर चूक जाने पर इन प्रयोगों को किसी भी माह की अमावस्या को सम्पन्न किया जा सकता है, किन्तु सोमवती अमावस्या को ये प्रयोग सम्पन्न करना श्रेष्ठ है। यदि आप चाहें तो तीनों प्रयोगों को भी उसी एक दिन में सम्पन्न कर सकते हैं।

शत्रुदमन प्रयोग

मानव जीवन में पूर्ण प्रगति तभी कर सकता है जब वह भयरहित हो और भयरहित वह तभी हो सकता है, जब वह शत्रु रहित हो... क्योंकि जब तक शत्रु हैं, उसे चिन्ता लगी ही रहती है, कोर्ट-कचहरी के चक्कर काटने पड़ते हैं, धन का नुकसान उठाना पड़ता है कई बार तो जान के लाले तक पड़ जाते हैं... ऐसे में केवल एक ही चारा रह जाता है, वह यह है, कि शत्रु पर एक ऐसा करारा वार किया जाए, कि वह खुद गिड़गिड़ाता हुआ व्यक्ति के सामने पहुंच कर उसकी हर शर्त स्वीकार करे... और ऐसा ही संभव है इस प्रयोग से

यह प्रयोग आधे घंटे का है।

☆ यह प्रयोग रात्रि 11 बजे के बाद करना चाहिए। इसके लिए **'शत्रु दमन यंत्र'** और **'विजय गुटिका'** की आवश्यकता होती है।

☆ साधक स्नान कर सिर्फ धोती पहन दक्षिणाभिमुख होकर बैठें और अपने सामने लाल वस्त्र पर **'शत्रु दमन यंत्र'** स्थापित कर उसका पूजन करें।

☆ यंत्र पर शत्रु का नाम लिखें और फिर उस के सामने **'विजय गुटिका'** स्थापित कर उसका भी पूजन करें।

☆ फिर निम्न मंत्र का इक्कीस मिनट तक जप करें -

मंत्र

॥ॐ क्लीं क्लीं शत्रुदमनाय फट्॥

☆ साधना के बाद पूजन सामग्री को पोटली में बांध कर दक्षिण दिशा में निर्जन स्थान अथवा किसी जलाशय में फेंक दें।

साधना सामग्री - 300/-

* *** * *** * *** * *** *

आकस्मिक धन आगमन प्रयोग

व्यक्ति के जीवन में सबसे अधिक आवश्यकता धन की होती है, क्योंकि धन की वजह से ही व्यक्ति अपनी समस्त इच्छाओं को तृप्त कर सकता है। धन हो तो व्यक्ति का मान-सम्मान, आदर होता है, पर उसके अभाव में इनको प्राप्त करना मुश्किल होता है।

लोग धन के लिए परिश्रम करते हैं, परन्तु मात्र शारीरिक परिश्रम से ही धन प्राप्त होता, तो सारे मजदूर तो कभी के लखपति हो गए होते...

व्यक्ति के जीवन में स्थिति ऐसी होनी चाहिए, कि वह खर्च करता रहे और फिर भी कहीं न कहीं से धन का आगमन जीवन में होता ही रहे - चाहे गड़ा धन हो, चाहे लॉटरी, या वसीयत आदि। इसके लिए निम्न प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है -

☆ यह प्रयोग सांय 7 बजे प्रारम्भ करना चाहिए।

☆ इसके लिए स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर पश्चिम दिशा की ओर मुंह कर बैठें और अपने सामने **'धनेश यंत्र'** स्थापित कर उसका अक्षत चढ़ा कर पूजन करें।

☆ फिर निम्न मंत्र का 45 मिनट तक जप करें -

मंत्र

॥ॐ श्रीं श्रियमानय शीघ्रं साधय ह्रीं ॐ फट्॥

☆ मंत्र जप समाप्त होने पर यंत्र पर एक **'लक्ष्मी गुटिका'** अर्पित कर प्रयोग को पूर्णता प्रदान करें।

☆ अगले दिन यंत्र और गुटिका को किसी नदी या जलाशय में अर्पित कर दें।

☆ ऐसा करने से प्रयोग सम्पन्न होता है और 21 दिनों के अंदर-अंदर साधक को लाभ अनुभव होने लगते हैं।

साधना सामग्री - 120/-

* *** * *** * *** * *** *

रोग निवारण प्रयोग

आज सम्पूर्ण विश्व में शायद ही कोई ऐसा हो, जो पूर्ण स्वस्थ हो और अगर कोई कहे, कि मैं पूर्ण स्वस्थ हूं, तो या तो वह मजाक कर रहा है, या झूठ बोल रहा है।

आज का वातावरण भी अत्यधिक विषैला हो गया है। सब्जियां और फल अप्राकृतिक ढंग से बड़े किये जाते हैं, पानी की सफाई रसायनों द्वारा की जाती है और विषैला धुआं नित्य वातावरण में मिल कर हमारे फेफड़ों को खोखला करता है।

ऐसी परिस्थिति में कोई कैसे स्वस्थ रह सकता है? कुछ रोग जैसे - टी.बी. मधुमेह, बी.पी., कैंसर आदि घर-घर में व्याप्त हैं। ऐसी स्थिति में जब व्यक्ति बहुत अर्से से बीमार हो, दवाईयों का भी कोई लाभ नहीं हो रहा हो, तो यह प्रयोग अचूक होता है।

☆ यह प्रयोग प्रातः 5 बजे करना चाहिए।

☆ इसके लिए प्रातः स्नान कर स्वच्छ वस्त्र धारण कर उत्तराभिमुख हो श्वेत आसन पर बैठें और अपने समक्ष **'रोग नाशक यंत्र'** को स्थापित कर उसका पूजन करें।

☆ यंत्र पर रोगी का नाम लिखें और फिर एक घंटे तक निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

॥ॐ हुं हुं रोगनाशाय रं रं ॐ फट्॥

☆ प्रयोग सम्पन्न होने के उपरान्त पूजन सामग्री को किसी नदी या जलाशय में अर्पित कर दें।

☆ ऐसा करने से प्रयोग सिद्ध होता है और उसी दिन से रोगी को स्वास्थ्य लाभ मिलने लगता है। यह प्रयोग रोगी के घर का कोई भी व्यक्ति रोगी के नाम का संकल्प लेकर सम्पन्न कर सकता है।

साधना सामग्री - 150/-

* *** * *** * *** * *** *

वास्तव में ही अगर व्यक्ति के जीवन में शत्रुओं, रोगों एवं दरिद्रता का नाम हो, तो वह जीते-जी ही मर जाता है और कभी चाह कर भी सफलता की ओर अग्रसर नहीं हो पाता।

ऊपर वर्णित सभी प्रयोग श्रेष्ठ घुमक्कड़ संन्यासियों से प्राप्त कुछ अचूक नुस्खे हैं, इन प्रयोगों से आप भी लाभ उठा सकें और अपने जीवन की बाधाओं को हटाकर सफलता की ओर अग्रसर हो सकें, यही शुभकामना है।

यावत् जीवेत् सुखं जीवेत्।
सर्वं पापं विनश्यति।।

सुखी जीवन के लिये समस्त पापों का नाश अनिवार्य है
दोष चाहे पूर्व जन्म के हों या इस जन्म के
उन पर अंकुश आवश्यक है

तंत्र की श्रेष्ठ साधना

पापांकुशा एकादशी

जिसे स्वयं भैरव ने भी सम्पन्न की थी

साधना में असफलता प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण कारण होता है पूर्वजन्मकृत दोष, जिसके समापन के पश्चात् साधक साधनाओं में सफलता प्राप्त कर सकता है।

निश्चय ही यह साधना एक श्रेष्ठ साधना है, जिसे सम्पन्न कर कोई भी साधक, जिसे निरन्तर साधना में असफलता प्राप्त होती हो, वह निश्चय ही सफलता प्राप्त करता है। देखने में यह साधना आपको भले ही लघु प्रतीत हो रही हो, परन्तु कभी-कभी एक छोटी सी घटना भी पूरे जीवन को परिवर्तित करने में सक्षम होती है, एक छोटी सी गोली भी व्यक्ति को मृत्यु प्रदान करने में सक्षम होती है... फिर तो यह एक ऐसी साधना है, जिसके विषय में मात्र इतना ही कहा जा सकता है -

'देखन में छोटे लगे, घाव करे गम्भीर'

प्रत्येक जीवन विभिन्न योनियों से होता हुआ निरन्तर गतिशील रहता है। हालांकि उसका बाहरी चोला बार-बार बदलता रहता है, परन्तु उसके अन्दर निवास करने वाली आत्मा शाश्वत है, वह मरती नहीं है, अपितु भिन्न-भिन्न शरीरों को धारण कर आगे के जीवन क्रम की ओर गतिशील रहती है।

जो कार्य जीव द्वारा अपनी देह में होता है, उसे कर्म कहते हैं और उसके सामान्यतः दो भेद हैं - शुभ कर्म अर्थात् पुण्य तथा अशुभ कर्म अर्थात् पाप। शुभ कर्म या पुण्य वह होता है, जिसमें हम किसी को सुख देते हैं, किसी की भलाई करते हैं और अशुभ कर्म वह होता है, जिसमें हमारे द्वारा किसी को दुःख प्राप्त होता है, जिसमें हमारे द्वारा किसी को संताप पहुंचता है।

मानव योनि ही एक ऐसी योनि है, जिसमें वह अन्य कर्मों को सञ्चित करता रहता है। पशु आदि तो बस पूर्व कर्मों के अनुसार जन्म लेकर ही चलते रहते हैं, वे यह नहीं सोचते, कि यह कार्य मैं कर रहा हूं या मैं इसको मार रहा हूं। अतः उनके पूर्व कर्म तो क्षय होते रहते हैं, परन्तु नवीन कर्मों का निर्माण नहीं होता; जबकि मनुष्य हर बात में 'मैं' को ही सर्वोच्चता प्रदान करता है...

और चूंकि वह प्रत्येक कार्य का श्रेय खुद लेना चाहता है, अतः उसका परिणाम भी उसे ही भुगतना पड़ता है।

मनुष्य जीवन और कर्म

मनुष्य जीवन में कर्म को शास्त्रीय पद्धति में तीन भागों में बांटा गया है -

1. **सञ्चित**, 2. **प्रारब्ध**, 3. **आगामी (क्रियमाण)**

'सञ्चित कर्म' वे होते हैं, जो जीव ने अपने समस्त दैहिक आयु के द्वारा अर्जित किये हैं, और जो वह अभी भी करता जा रहा हैं।

'प्रारब्ध' का अर्थ है, जिन कर्मों का फल अभी गतिशील है, उसे वर्तमान में भोगा जा रहा है।

'आगामी' का अर्थ है, वे कर्म, जिनका फल अभी आना शेष है।

इन तीन कर्मों के अधीन मनुष्य अपना जीवन जीता रहता है, प्रकृति के द्वारा ऐसी व्यवस्था से अपना जीवन जीता रहता है। प्रकृति के द्वारा ऐसी व्यवस्था तो रहती है, कि उसके पूर्व कर्म सञ्चित रहें, परन्तु दुर्भाग्य यह है, कि मनुष्य को उसके नवीन कर्म भी भोगने ही पड़ते हैं, फलस्वरूप उसे अनन्त जन्म लेने पड़ते हैं। परन्तु यह तो एक बहुत ही लम्बी प्रक्रिया है और इसमें तो अनेक जन्मों तक भटकते रहना पड़ता है।

...परन्तु एक तरीका है, जिससे व्यक्ति अपने छल, दोष, पाप को समूल नष्ट कर सकता है, नष्ट ही नहीं कर सकता, अपितु भविष्य के लिए अपने अन्दर अंकुश भी लगा सकता है, जिससे वह आगे के जीवन को पूर्ण पवित्रता युक्त जी सके, पूर्ण दिव्यता युक्त जी सके और जिससे उसे फिर से कर्मों के पाश में बंधने की आवश्यकता नहीं पड़े।

साधनाः एकमात्र मार्ग

...और यह तरीका, यह मार्ग है साधना का, क्योंकि साधना का अर्थ ही है, कि अनिश्चित स्थितियों पर पूर्णतः विजय प्राप्त कर अपने जीवन को पूरी तरह साध लेना, इस पर पूरी तरह से अपना नियन्त्रण कायम कर लेना।

यदि यह साधना तंत्र मार्ग के अनुसार हो, तो इससे श्रेष्ठ तो कुछ हो नहीं सकता, इससे उपयुक्त स्थिति तो और कोई हो ही नहीं सकती, क्योंकि स्वयं शिव ने **'महानिर्वाण तंत्र'** में पार्वती को तंत्र की विशेषता के बारे में समझाते हुए बताया है-

कल्किल्मध दीनानां द्विजातीनां सुरेश्वरि।
मेध्या मेध्य विचाराणां न शुद्धिः श्रौतकर्मणा।
न संहिताद्यैः स्मृतिभिरष्टासिद्धिर्नृणां भवेत्।
सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यं सत्यं सत्यं मयोच्यते॥
विनाह्यागम मार्गेण कलौ नास्ति गतिः प्रिये।
श्रुतिस्मृतिपुराणादि मयैवोक्तं पुरा शिवे॥
आगमोक्त विधानेन कलौ देवान्यजेत्सुधीः॥

- हे देवी! कलि दोष के कारण ब्राह्मण या दूसरे लोग, जो पाप-पुण्य का विचार करते हैं, वे वैदिक पूजन की विधियों से पापहीन नहीं हो सकते। मैं बार-बार सत्य कहता हूं, कि संहिता और स्मृतियों से उनकी आकांक्षा पूर्ण नहीं हो सकती। कलियुग में तंत्र मार्ग ही एकमात्र विकल्प है। यह सही है, कि वेद, पुराण, स्मृति आदि भी विश्व को किसी समय मैंने ही प्रदान किए थे, परन्तु कलियुग में बुद्धिमान व्यक्ति तंत्र द्वारा ही साधना कर इच्छित लाभ पाएगा।

इससे स्पष्ट होता है, कि तंत्र साधना द्वारा व्यक्ति अपने पाप पूर्ण कर्मों को नष्ट कर, भविष्य के लिए उनसे बंधन रहित हो सकते हैं।

वैसे भी व्यक्ति यदि जीवन में पूर्ण दरिद्रता युक्त जीवन जी रहा है या यदि वह किसी घातक बीमारी की चपेट में है जो कि समाप्त होने का नाम ही नहीं ले रही हो, तो यह समझ लेना चाहिए, कि उसके पाप आगे आ रहे हैं...

नीचे मैं कुछ स्थितियां स्पष्ट कर रहा हूं, जो कि व्यक्ति के पूर्व पापों के कारण जीवन में प्रवेश करती हैं -

1. घर में बार-बार दुर्घटना होना, आग लगना, चोरी होना आदि।
2. पुत्र या संतान का न होना या होने पर तुरन्त मर जाना।
3. घर के सदस्यों की अकाल मृत्यु होना।
4. जो भी योजना बनायें, उसमें हमेशा नुकसान होना, व्यापार या कार्य में निरन्तर घाटा ही घाटा होना।
5. हमेशा शत्रुओं का भय होना।
6. विवाह में अत्यन्त विलम्ब या घर में कलह पूर्ण वातावरण, तनाव आदि।
7. हमेशा पैसे की तंगी होना, दरिद्रतापूर्ण जीवन, बीमारी और अदालती मुकदमों में पैसा पानी की तरह बहना।

ये कुछ स्थितियां हैं, जिनमें व्यक्ति जी-जान से कोशिश करने के उपरान्त भी यदि उन पर नियंत्रण नहीं प्राप्त कर पाता, तो समझ लेना चाहिए, कि यह पूर्व कर्मों के दोष के कारण ही घटित हो रहा है। इसके लिए फिर उन्हें साधना का

मार्ग अपनाना ही चाहिए, जिसके द्वारा उसके समस्त दोष नष्ट हो सकें और वह जीवन के सभी प्रकार से वैभव, शांति और श्रेष्ठता प्राप्त कर सके।

पापांकुशा साधना

ऐसी ही एक साधना है पापांकुशा साधना, जिसके द्वारा व्यक्ति अपने जीवन में व्याप्त सभी प्रकार के दोषों को - चाहे वह दरिद्रता हो, अकाल मृत्यु हो, बीमारी हो या चाहे और कुछ हो, उसे पूर्णतः समाप्त कर सकता है और अब तक के सञ्चित पाप कर्मों को पूर्णतः नष्ट करता हुआ भविष्य के लिए भी उनके पाश से मुक्त हो जाता है, उन पर अंकुश लगा पाता है।

इस साधना को सम्पन्न करने से व्यक्ति के जीवन में यदि ऊपर बताई गई स्थितियां होती हैं, तो वे स्वतः ही समाप्त हो जाती हैं। वह फिर दिनों-दिन उन्नति की ओर अग्रसर होने लग जाता है, इच्छित क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है और फिर कभी भी, किसी भी प्रकार की बाधा का सामना उसे अपने जीवन में नहीं करना पड़ता।

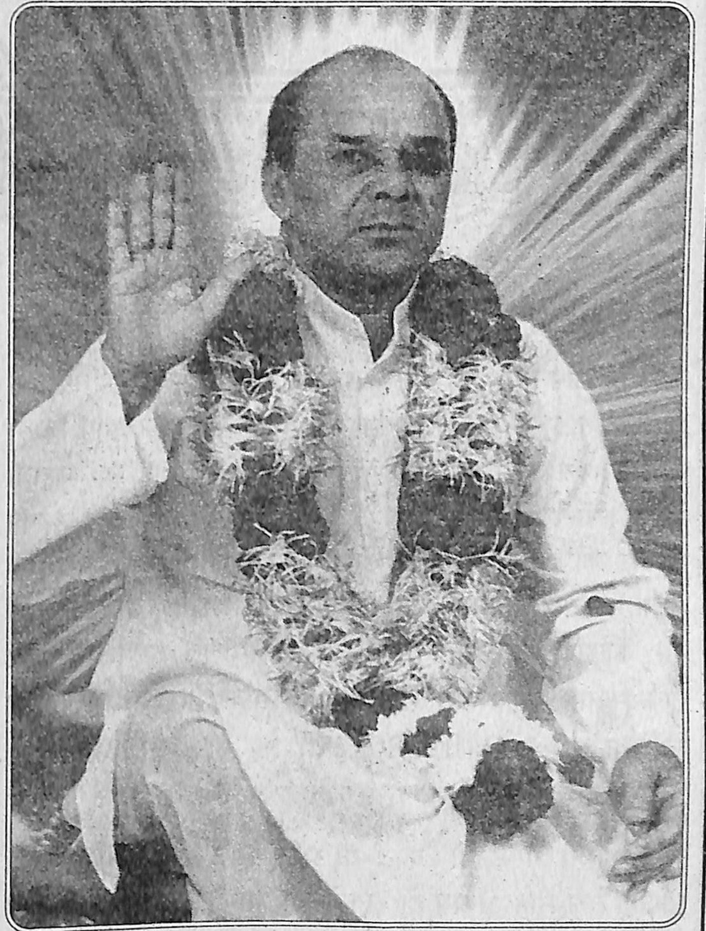
यह साधना अत्यधिक उच्चकोटि की है और बहुत ही तीक्ष्ण है। चूंकि यह तंत्र साधना है, अतः इसका प्रभाव शीघ्र देखने को मिलता है। यह साधना स्वयं ब्रह्म हत्या के दोष से मुक्त होने के लिए एवं जनमानस में आदर्श स्थापित करने के लिए कालभैरव ने भी सम्पन्न की थी... इसी से इस साधना की दिव्यता और तेजस्विता का अनुमान हो जाता है...

यह साधना तीन दिवसीय है। इसे पापांकुशा एकादशी दिनांक 11 **मार्च** 2010 या **किसी भी एकादशी** से प्रारम्भ करना चाहिए। इसके लिए **'समस्त पाप-दोष निवारण यंत्र'** तथा **'हकीक माला'** की आवश्यकता होती है।

सर्वप्रथम साधक को ब्रह्म मुहूर्त में उठकर स्नान आदि से निवृत्त होकर, सफेद धोती धारण कर, पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठना चाहिए और अपने सामने श्वेत वस्त्र से ढके बाजोट पर **'समस्त पाप दोष निवारण यंत्र'** स्थापित कर उसका पंचोपचार पूजन सम्पन्न करना चाहिए। **'मैं अपने सभी पाप-दोष समर्पित करता हूं, कृपया मुझे मुक्ति दें और जीवन में सुख, लाभ, सन्तुष्टि प्रसन्नता आदि प्रदान करें -'** ऐसा कहने के साथ यदि कोई अन्य इच्छा विशेष हो, तो उसका भी उच्चारण कर देना चाहिए। फिर **'हकीक माला'** से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करना चाहिए -

मंत्र

॥ॐ क्लीं ऐं पापनि शमन नाशय ॐ फट्॥



यह मंत्र अत्यधिक चैतन्य है और साधना काल में ही साधक को अपने शरीर का ताप बदला मालूम होगा; परन्तु भयभीत न हों, क्योंकि यह तो शरीर से उत्पन्न दिव्याग्नि है, जिसके द्वारा पाप राशि भस्मीभूत हो रही है। साधना समाप्ति के पश्चात् साधक को ऐसा प्रतीत होगा, कि उसका सारा शरीर किसी बहुत बड़े बोझ से मुक्त हो गया है, स्वयं को वह पूर्ण प्रसन्न एवं आनन्दित महसूस करेगा और उसका शरीर फूल की भांति हल्का महसूस होगा।

जो साधक अध्यात्म के पथ पर आगे बढ़ना चाहते हैं, उन्हें तो यह साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए, क्योंकि जब तक पाप कर्मों का क्षय नही हो जाता, व्यक्ति की कुण्डलिनी शक्ति जागृत हो ही नहीं सकती और न ही वह समाधि अवस्था को प्राप्त कर सकता है।

साधना के उपरान्त यंत्र तथा माला को किसी जलाशय में अर्पित कर देना चाहिए। ऐसा करने से साधना फलीभूत होती है और व्यक्ति समस्त दोषों से मुक्त होता हुआ पूर्ण सफलता अर्जित कर, भौतिक एवं आध्यात्मिक, दोनों मार्गों में श्रेष्ठता प्राप्त करता है।

साधना सामग्री - 300/-

नक्षत्रों की वाणी

मेष -

आप अपनी वाणी तथा भावनाओं को नियन्त्रण में रखें तो आपके लिये अच्छा होगा, अन्यथा जाने-अनजाने आप किसी बाधा अथवा मुसीबत में फंस सकते हैं। इस माह ग्रह-नक्षत्रों के अनुसार आपको अवसर तो अनेक प्राप्त होंगे परन्तु उनकी पूर्णता की स्थिति में संशय है। आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि आप अपने इष्ट तथा गुरु का निरन्तर आशीर्वाद प्राप्त करते रहें, जिससे कि आप अवसरों का समुचित लाभ प्राप्त कर सकें। आप **'प्रत्यंगिरा साधना'** (दिसम्बर 2009) करें। शुभ तिथियां - 14, 16, 19, 20, 25 हैं।

वृष -

स्वास्थ्य में नरमी, कार्य के प्रति अनिच्छा, सुस्ती आदि लक्षण इस माह आपमें हो सकते हैं। आप स्वयं को थका हुआ अथवा पीड़ित महसूस करेंगे। विरोधी तथा शत्रु आपकी निश्चेतना का फायदा उठा का आप पर आक्रमण तेज भी कर सकते हैं। पूरे माह आप कोई भी कार्य जल्दबाजी की अपेक्षा पूरी तरह से सोच समझ एवं अपने मित्रों से सलाह के बाद ही सम्पन्न करें। बेरोजगारों तथा विद्यार्थियों के लिये भी समय कठिन लग रहा है। माह के अंत तक स्थितियों में स्वतः ही सुधार हो जायेगा। आप **'हरिद्रा गणपति साधना'** (जनवरी 2010) करें। शुभ तिथियां - 17, 18, 22, 25, 26 हैं।

मिथुन -

माह के प्रारम्भ में आपको आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं, कुल मिलाकर आपका आर्थिक पक्ष श्रेष्ठ रहेगा। आप चल-अचल सम्पत्ति भी खरीद सकते हैं। साझेदारी अथवा स्वयं अपना कोई नया व्यवसाय प्रारम्भ करना चाहते हैं तो उसके लिये समय अनुकूल ही सिद्ध होगा। गृहस्थ जीवन में वाद-विवाद एवं गृहस्थ सुख में कमी आ सकती है। परिवार में किसी बात को लेकर कलह की स्थितियां भी आ सकती हैं। स्त्रियों का परिवार में वर्चस्व बढ़ेगा। आप **'छिन्नमस्ता साधना'** (नवम्बर 2009) करें। शुभ तिथियां - 2, 7, 18, 23, 28 हैं।

कर्क -

आपके लिये समय मिला-जुला ही सिद्ध होगा। आत्म संतोष द्वारा ही आप स्वयं को प्रसन्न रख सकते हैं। जल्दबाजी की अपेक्षा धैर्य एवं संयम द्वारा आप सफलता अर्जित कर सकते हैं। अतः आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि जल्दबाजी से कार्य नहीं करें। परिवार में कोई मांगलिक कार्यक्रम होने की संभावना है जिसके कारण घर-परिवार में प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। संतान पक्ष से भी अच्छे समाचार प्राप्त होंगे। आप **'विनायक गणपति साधना'** (जन. 2010) करें। शुभ तिथियां - 2, 3, 10, 18, 26 हैं।

सिंह -

यह माह आपके लिये सुखद होगा, पिछले समय की विषमताओं की अपेक्षा इस माह आपको जीवन सुधारने के ज्यादा विकल्प प्राप्त होंगे। धन का आगमन होगा, आप अपने ऐश्वर्य एवं सुख सुविधाओं में धन खर्च कर सकते हैं। अत्यधिक धन खर्च के कारण धनाभाव की स्थिति बन सकती है। कर्ज की स्थिति से स्वयं को दूर ही रखें तो आपके लिये श्रेष्ठ होगा। यात्रा के योग बन रहे हैं, आप यात्रा पर जा सकते हैं जो कि आपके लिये सुखद ही होगी। महिलाओं को परिवार में संघर्ष करना पड़ सकता है। आप **'काल भैरव साधना'** (नवम्बर 2009) करें। शुभ तिथियां - 2, 4, 6, 23, 28 हैं।

कन्या -

आपकी उन्नति एवं ऐश्वर्य के कारण आपको नये मित्र प्राप्त होंगे। आप भी मुक्त हस्त से खर्च कर सकते हैं। किसी नये मित्र अथवा अपरिचित को रुपया उधार नहीं दें, इस समय दिया हुआ उधार धन फंस सकता है। सामाजिक गतिविधियों में भी आप बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेंगे, समाज में आपकी [illegible]-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। गृहस्थ जीवन में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। पति-पत्नी के मध्य विवाद की स्थिति को टालने का प्रयत्न करें। बेरोजगारों को रोजगार प्राप्त होने की संभावना है। आप **'ललिताम्बा साधना'** (दिसम्बर 2009) करें। शुभ तिथियां - 4, 8, 16, 26, 27 हैं।

तुला -

पुरानी चली आ रही समस्याओं से छुटाकारा पाने में आप सफलता प्राप्त करेंगें। जीवन को बेहतर और भविष्य को संवारने के अवसर भी आपको प्राप्त होंगे। आपके लिये अच्छा होगा कि लक्ष्य की तरफ अपना ध्यान रखें, इधर-उधर भटकें नहीं अन्यथा समय निकल जाने के बाद पछताना पड़ेगा। माह के अंत में अर्थ सम्बन्धी समस्याएं आ सकती हैं। महिलाओं के लिये समय सार्थक ही सिद्ध होगा। बेरोजगारों को रोजगार के उचित अवसर प्राप्त होंगे। आप **'मातंगी हृदय साधना'** (दिसम्बर 2009) करें। शुभ तिथियां - 1, 5, 9, 11, 24 हैं।

वृश्चिक -

जल्दबाजी अथवा हड़बड़ी में कोई अहम फैसला नहीं करें। अपने मित्रों एवं शुभचिंतकों से परामर्श के पश्चात् ही कोई अहम फैसला करें। समय आपको उचित अवसर प्रदान करेगा। धैर्य एवं संयम द्वारा ही सफलताएं प्राप्त की जा सकती हैं। पैसा उधार देने एवं लेने, दोनों ही प्रकार की स्थितियों से आपको बचना होगा। परिवार में किसी बात को लेकर मन-मुटाव हो सकता है। प्रेम-प्रसंगों से आप स्वयं को दूर ही रखें। परिवार में कोई मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकता है। आप **'षोडशी त्रिपुर सुन्दरी साधना'** (जनवरी 2010) करें। तिथियां - 2, 3, 8, 12, 13 हैं।

धनु -

ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति के अनुसार समय आपके लिये शुभ प्रतीत हो रहा है। परिवार में आपकी स्थिति एक कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति के रूप में उभर कर सामने आयेगी। मान-सम्मान एवं प्रतिष्ठा में आपकी बढ़ोतरी होगी। नौकरी पेशा व्यक्तियों को उन्नति एवं व्यापारिक व्यक्तियों को नये अनुबंध एवं व्यापारिक योजनाएं प्राप्त होंगी। किसी पुराने सम्पत्ति सम्बन्धी विवाद का हल भी होने की संभावनाएं हैं। गृहस्थ जीवन में आ रही समस्याएं समाप्त होंगी। संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आप **'काल विजया साधना'** (दिसम्बर 2009) करें। शुभ तिथियां - 6, 9, 11, 16, 27 हैं।

मकर -

माह का प्रारम्भ आपके लिये बहुत कठिन होगा। मित्रों, शुभचिंतकों एवं परिवारजनों से आपका किसी बात को लेकर मन-मुटाव अथवा लड़ाई-झगड़े हो सकते हैं। आपके लिये श्रेष्ठ होगा कि आप बिना स्थिति को समझे किसी से भी वाद-विवाद नहीं करें। स्थान परिवर्तन की स्थितियां भी काफी प्रबल बन रही हैं। आप स्वयं के मकान, व्यवसाय अथवा नौकरी में परिवर्तन कर सकते हैं। बदलाव के लिये समय वैसे तो उचित है, फिर भी पूर्ण चिंतन के पश्चात् ही कोई निर्णय लें। आप **'शुक्र साधना'** (दिसम्बर 2009) करें। तिथियां - 7, 8, 12, 18, 23 हैं।

योगः सिद्ध योग 10, 13, 27 फरवरी/12, 17, 23, 25, 26, 31 मार्च ☆ सर्वार्थ सिद्ध योग - 3, 7, 13, 18, 19, 22 फरवरी/2, 9, 13, 18 मार्च ☆ अमृत सिद्ध योग - 19, 22 अप्रैल ☆ गुरु पुष्य योग - 25 मार्च/22 अप्रैल ☆

कुंभ -

पुराने मतभेदों, विवादों को समाप्त कर नये सिरे से जीवन की शुरुआत करें। समय का उपयोग तभी हो सकता है, जब आप स्वयं पॉजिटिव थिंकिंग रखें। नये मित्रों, शुभचिंतकों एवं अपने से उच्च व्यक्तियों से आपके सम्बन्ध बनेंगे। प्रेम-प्रसंगों में लगे व्यक्ति सफलता प्राप्त करेंगे। आपके कार्य हेतु आपको पुरस्कार भी प्राप्त हो सकता है। परिवार एवं समाज में आपकी प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी होगी। आर्थिक दृष्टि से यह माह आपके लिये सहायक सिद्ध होगा, आप विभिन्न योजनाओं में निवेश कर सकते हैं। आप **'तांत्रोक्त सूर्य साधना'** (नवम्बर 2009) करें। शुभ तिथियां - 5, 10, 11, 19, 20 हैं।

मीन -

बुरे व्यसनों में लगे मित्रों से स्वयं को दूर ही रखें, धन का अपव्यय करना कोई अच्छी बात नहीं है। धन की गति भी बड़ी निराली है, आज पास है तो कल दूर है। परिवार में आपकी आदतों के कारण बेवजह का वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़े हो सकते है। आपके लिये श्रेष्ठ होगा की आप अधिक से अधिक समय गुरु साहित्य अध्ययन एवं गुरु ध्यान में लगायें तांकि आने वाली बाधाओं से स्वयं को मुक्त करा सकें। महिलाओं को परिवार में संघर्ष करना पड़ सकता है। विद्यार्थियों को मेहनत करनी चाहिए। आप **'त्रिपुर भैरवी साधना'** (जन. 10) करें। तिथियां - 12, 17, 21, 23 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

25 फरवरी	फाल्गुन शु.	- 11	गुरुवार	आमला एकादशी
26 फरवरी	फाल्गुन शु.	- 13	शुक्रवार	प्रदोष व्रत
28 फरवरी	फाल्गुन शु.	- 15	रविवार	पूर्णिमा व्रत/होली
11 मार्च	चैत्र कृ.	- 11	गुरुवार	पाप मोचनी एकादशी
13 मार्च	चैत्र कृ.	- 13	शनिवार	प्रदोष व्रत
15 मार्च	चैत्र कृ.	- 30	सोमवार	सोमवती अमावस्या
16 मार्च	चैत्र शु.	- 01	मंगलवार	चैत्र नवरात्रि प्रारम्भ
28 मार्च	चैत्र शु.	- 08	मंगलवार	दुर्गाष्टमी

मैं समय हूं

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का प्रतिशत 99.9% आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।



वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (फरवरी 7, 14, 21, 28) (मार्च 7, 14)	दिन 06:00 से 10:00 तक रात 06:48 से 07:36 तक 08:24 से 10:00 तक 03:36 से 06:00 तक
सोमवार (फरवरी 1, 8, 15, 22) (मार्च 1, 8)	दिन 06:00 से 07:30 तक 10:48 से 01:12 तक 03:36 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक
मंगलवार (फरवरी 2, 9, 16, 23) (मार्च 2, 9)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:00 से 12:24 तक 04:30 से 05:12 तक रात 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 02:00 तक 03:36 से 06:00 तक
बुधवार (फरवरी 3, 10, 17, 24) (मार्च 3, 10)	दिन 07:36 से 09:12 तक 11:36 से 12:00 तक 03:36 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:48 तक 02:00 से 06:00 तक
गुरुवार (फरवरी 4, 11, 18, 25) (मार्च 4, 11)	दिन 06:00 से 08:24 तक 10:48 से 01:12 तक 04:24 से 06:00 तक रात 07:36 से 10:00 तक 01:12 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
शुक्रवार (फरवरी 5, 12, 19, 26) (मार्च 5, 12)	दिन 06:48 से 10:30 तक 12:00 से 01:12 तक 04:24 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 01:12 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक
शनिवार (फरवरी 6, 13, 20, 27) (मार्च 6, 13)	दिन 10:30 से 12:24 तक 03:36 से 05:12 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:00 से 03:36 तक 04:24 से 06:00 तक

यह हमने नहीं वराहमिहिर ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाय। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

मार्च

1. किसी शिव मंदिर में पांच बिल्व पत्र चढ़ाएं।
2. **हनुमान चालीसा** का पाठ करके हनुमान जी को गुड़ का भोग लगाकर ही दिन का प्रारम्भ करें।
3. प्रातः **बाधा निवारण गुटिका** (न्यौछावर 60/-) का पूजन कर जेब में रख कर ही व्यापार स्थल या नौकरी पर जाएं, सफलता प्राप्त होगी।
4. **निखिल शतकम्** के 11 श्लोकों का उच्चारण करें।
5. ***'ॐ ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं लक्ष्मी वासुदेवाय नमः'*** मंत्र का 21 बार उच्चारण करके ही घर से जाएं, आर्थिक अनुकूलता प्राप्त होगी।
6. पीपल के पत्ते पर काले तिल रखकर घर के बाहर रख दें, बाधा समाप्त होगी।
7. आज सूर्य को अर्ध्य देकर पांच लाल पुष्प चढ़ायें।
8. तुलसी के वृक्ष में जल चढ़ाकर दीपक लगाएं।
9. प्रातः हनुमान मन्दिर में प्रतिमा के चरणों पर सरसों तेल तीन बार अपने सिर पर घुमाकर चढ़ाएं, ग्रह बाधा समाप्त होगी।
10. प्रातः पांच लड्डू किसी चौराहे पर रखकर आ जायें।
11. **'गुरु गुटिका'** (न्यौछावर 100/-) का पंचोपचार पूजन कर धारण करें।
12. ***'ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णायै'*** मंत्र को 10 मिनट तक जपें, उन्नति होगी।
13. **तांत्रोक्त नारियल** (न्यौछावर 75/-) को पांच बार अपने ऊपर घुमाकर होलिका अग्नि में अर्पित कर दें।
14. दूध से बनी मिठाई खाकर अपना दिवस आरम्भ करें।
15. अपने इष्ट का ध्यान कर अष्ट गंध का तिलक करके ही घर से जायें।
16. आज **नवरात्रि के प्रथम दिन** घट स्थापन कर दुर्गा पूजन अवश्य सम्पन्न करें।
17. एक पात्र में जल लेकर उसमें पुष्प, कुंकुम, अक्षत डालकर पीपल के वृक्ष की जड़ में डाल दें।
18. **गुरु मंत्र** की 1 माला जप करके व्यापार स्थल या नौकरी में जायें।
19. ***'ॐ ह्रीं श्रीं शीतलायै नमः'*** मंत्र का 5 मिनट तक जप करें।
20. घर से बाहर निकलते समय 7 काली मिर्च लेकर जायें तथा रास्ते में निर्जन स्थान में फेंक दें।
21. गुरु जन्म दिवस पर **'निखिलेश्वरानंद स्तवन'** का पाठ करें। दिन भर गुरु सेवा में व्यस्त रहें तथा गुरु सेवा का प्रण लें।
22. **दो पंचमुखी रुद्राक्ष** (न्यौछावर 60/-) दोनों को हाथों में लेकर आधा घण्टा ***'ॐ ह्रीं जूं सः'*** मंत्र का जप कर एक गले में धारण करें तथा दूसरा शिव मंदिर में चढ़ा दें।
23. आज **दुर्गाष्टमी** के दिन नवार्ण मंत्र ***'ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे'*** की पांच माला जप अवश्य करें।
24. आज **रामनवमी** के अवसर पर **राम रक्षा स्तोत्र** का पाठ अवश्य करें।
25. प्रातः काल उठकर इष्ट ध्यान करें।
26. **भगवती दुर्गा** का पूजन कर दिन का प्रारम्भ करें।
27. घर से बाहर जाते समय पहले बायां पैर बाहर निकालें।
28. आज प्रातः **सूर्य यंत्र** (न्यौछावर 150/-) का पंचोपचार पूजन करें।
29. **'नागचक्र'** (न्यौछावर 60/-) का पूजन कर शिव मंदिर में चढ़ा आएं, दुःखों का अंत होगा।
30. हनुमान मंदिर में पांच घी के दीपक जलाएं, धन प्राप्ति के योग बनेंगे।
31. प्रातः काल चिड़ियों को अन्न के दाने डालें।

देवताओं के अधिपति इन्द्र इन्द्र की शक्ति इन्द्राणी जो भौतिक वर्चस्व को देती हैं

इन्द्राणी शक्ति साधना



भगवान विष्णु का ऐश्वर्य वान स्वरूप इन्द्र है और इन्द्र रूप में सहभागी शक्ति स्वरूप को इन्द्राणी कहा गया है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि इन्द्राणी का तात्पर्य इन्द्र की पत्नी नहीं अपितु इन्द्राणी का तात्पर्य है लक्ष्मी क्योंकि इन्द्राणी शब्द संस्कृत के, 'इदि' धातु से बना है और 'इदि' का अर्थ है ऐश्वर्य इसीलिए ऐश्वर्य का शक्ति स्वरूप 'इन्द्राणी' है।

देवताओं के अधिपति इन्द्र माने गये हैं और यह भी माना जाता है कि स्वर्गलोक के राजा इन्द्र हैं जिनके सहयोगी रूप में वरुण, अग्नि, चन्द्रमा, पवन इत्यादि देवता कार्य करते हैं, जिससे इस संसार की व्यवस्था चलती है। देवासुर संग्राम में भी देवताओं के अधिपति इन्द्र और असुरों के युद्ध का वर्णन आता है।

वास्तव में इन्द्र का तात्पर्य है 'अधिपति' अर्थात् जो अपने जीवन में पूर्ण सफल होकर मनुष्यों पर ही नहीं, देवताओं पर भी राज्य करता है, वह इन्द्र कहा जाता है। इन्द्र एक व्यक्ति विशेष नहीं होकर क्रिया वाचक शब्द है। जो भी व्यक्ति अपने जीवन में भौतिक दृष्टि से पूर्ण सम्पन्न हो जाता है, वह इन्द्र के समान ही है। इन्द्र का तात्पर्य यह भी है कि जिसने अपनी इन्द्रियों को पूर्ण रूप से वश में कर रखा हो और जीवन में ऐरावत, उच्चेश्रवा इत्यादि रत्नों से विभूषित हो। वास्तव में इन्द्र का तात्पर्य विष्णु से ही है क्योंकि वही देवताओं के पूर्ण अधिपति हैं। जिस प्रकार भगवान शिव की सहयोगी उमा, गौरी, पार्वती, महेश्वरी, अपर्णा इत्यादि हैं, इसी प्रकार भगवान विष्णु का ऐश्वर्य वान स्वरूप इन्द्र है और इन्द्र रूप में सहभागी शक्ति स्वरूप को इन्द्राणी कहा गया है। इसका स्पष्ट अर्थ है कि इन्द्राणी का तात्पर्य इन्द्र की पत्नी नहीं अपितु इन्द्राणी का तात्पर्य है लक्ष्मी क्योंकि इन्द्राणी शब्द संस्कृत के, 'इदि' धातु से बना है और 'इदि' का अर्थ है ऐश्वर्य इसीलिए ऐश्वर्य का शक्ति स्वरूप 'इन्द्राणी' है।

सामान्य रूप में भी जब लक्ष्मी जी की आरती गायी जाती है तो यही कहा जाता है कि,

'तू इन्द्राणी ब्रह्माणी तू ही है कमला रानी।'

अर्थात् इन्द्राणी लक्ष्मी का ही एक स्वरूप है और इसकी साधना गृहस्थ साधकों के लिए विशेष आवश्यक है सामान्य रूप में विद्यार्थी जीवन में बालक को निरंतर सरस्वती साधना, सूर्य साधना सम्पन्न करनी चाहिए वहीं गृहस्थ जीवन में व्यक्ति को भौतिक सुखों की परिपूर्णता के लिए सभी प्रकार की शक्ति साधनाएं, लक्ष्मी साधनाएं, कृष्ण साधना, शिव साधना तथा नवग्रह साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

तीसरे पक्ष के रूप में अपने जीवन को पूर्ण रूप से ब्रह्म बनाने के इच्छुक साधकों को शिव साधना, कौल साधनाएं, श्मशान साधनाएं इत्यादि सम्पन्न करनी चाहिए।

इन्द्राणी के सम्बन्ध में एक कथा पुराणों में विशेष रूप से आती है। उस समय इन्द्राणी का नाम शची था और पृथ्वी लोक पर राजा नहुष अत्यंत प्रतापी राजा थे। उन्होंने पृथ्वीलोक

तथा स्वर्गलोक पर विजय प्राप्त कर ली और शची को देखकर उनके मन में उसे वरण करने का विचार आया। राजा नहुष ने इन्द्र को पराजित कर दिया था और इन्द्राणी विवश थीं, उन्होंने राजा नहुष को कहा कि यदि तुम सप्त ऋषियों को पालकी का कहार बनाकर आओ तो मैं तुम्हें वरण कर सकती हूं। ऋषियों से भी राजा नहुष ने गर्व में एक ऋषि को लात मारकर जल्दी चलने का कहा, इस पर ऋषियों को क्रोध आ गया और उन्होंने पालकी वहीं गिरा दी। ऋषियों ने श्राप दिया कि जीवन में तुम कभी भी सुखी नहीं हो सकोगे, यहां तक कि तुम्हें पत्नी और संतान का सुख भी प्राप्त नहीं हो सकेगा।

आगे कथा अनुसार नहुष का विवाह दैत्य-गुरु शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी से अवश्य हुआ जबकि वे स्वयं दैत्य राजा वृत्ता सुर की पुत्री शर्मिष्ठा से विवाह करना चाहते थे। देवयानी से उत्पन्न पुत्र कमजोर और कायर हुआ। शर्मिष्ठा से उत्पन्न पुत्र ययाति हुआ लेकिन उसका सुख राजा नहुष नहीं प्राप्त कर सके और पूरा जीवन दुःख में ही कटा।

कथा का सारांश यह है कि शक्ति रूप में इन्द्राणी को बल पूर्वक कोई भी वरण नहीं कर सकता है।

इस प्रकार की अनेकों कथाएं इन्द्राणी के सम्बन्ध में अवश्य आती है वास्तव में इन्द्राणी भगवती दुर्गा का सौन्दर्य वान ऐश्वर्य स्वरूप है।

आज के युग में पृथ्वी लोक, देवलोक, पाताल लोक में शक्ति अपने विभिन्न रूपों में विद्यमान है, और जो साधक जिस भावना से शक्ति की साधना करता है उसी रूप में शक्ति की सिद्धि अवश्य ही होती है।

नवरात्रि और उसके पश्चात् अक्षय तृतीया तक का समय विशेष साधनात्मक समय है, और इस काल में भौतिक दृष्टि से पूर्णता, ऐश्वर्य, सौन्दर्य रस, आनन्द, उमंग प्राप्त करने हेतु इन्द्राणी शक्ति साधना अवश्य ही करनी चाहिए।

आगे साधना और इसका विधान स्पष्ट किया जा रहा है। ये साधना नवरात्रि में किसी भी दिन अथवा किसी भी शुक्रवार को प्रारंभ की जा सकती है।

साधना विधान

दाहिने हाथ में जल लेकर विनियोग पढ़ें।

विनियोग -

ॐ अस्य इन्द्राक्षी मंत्रस्य द्रुहिण ऋषि, कृतिच्छन्दः इन्द्राणी देवतामय मनोवांछितं सिद्धये जपेविनियोगेः।

जल भूमि पर छोड़ दें।

ऋष्यादिन्यास -

ॐ द्रुहिण ऋषये नमः शिरसि, कृतिच्छन्दसे नमः मुखे, इन्द्राणी देवता नमो हृदि, विनियोगाय नमः सर्वांगे।

इस संदर्भ को पढ़ते हुए अपने विभिन्न अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करें -

करन्यास -

ॐ ब्रह्मवादिन्यै अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ इन्द्राण्यै तर्जनीभ्या नमः। ॐ नारायण्यै मध्यमाभ्यां नमः। ॐ रुद्राण्यै अनामिकाभ्यां नमः। सहस्राक्ष्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः। स्वाहा करतल कर पृष्ठाभ्यां नमः। हृदयादि षंगन्यास ॐ ब्राह्मवादिन्यै हृदयाय नमः। शिवायै शिरसे स्वाहा। नारायण्ये शिरपायै वषट् रुद्राण्यै कवचाय हुम्। सहस्राक्षयै नेत्र त्रयाय वौषट्। स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यान मंत्र

मालास्य कुश पद्म युग्मकरां साहस्रनेत्रकरां,
मतैरावत पृष्ठमां शशिमुखीं त्रैलोक्य रक्षापरां
दोर्भिगीतरतां सरोजसदृशीं ब्रह्मादिदेवैः स्तुतां
इन्द्राक्षीं जनमातरं हृदि भजे कारुण्य चिद्रूपिणीम्

अर्थः सुन्दर कण्ठ में पुष्पहार पहनी हुई, दो हाथों, में कुश तथा पद्म, मंगलार्थ धारण की हुई, एक हजार आंखों वाली, मदमस्त ऐरावत हाथी के पृष्ठ पर विराजमान स्वच्छ चन्द्रमा के समान मुख वाली, त्रैलोक्य की सुरक्षा में व्यस्त गीतों के ताल में रत हाथों वाली निर्मल कमल समान रूप युक्त, ब्रह्मादि देवताओं से स्तुत, सकल लोक माता, करुणामय चेतना युक्त भगवती इन्द्राणी का अपने हृदय में ध्यान करता हूं।

मंत्र

क्रीं क्रीं हुं हुं ग्लौं ह्रीं श्रीं ऐं इन्द्राक्षि वज्रहस्ते श्रीं ह्रीं ग्लौं हुं हुं क्रीं क्रीं ॐ ऐं फट् स्वाहा।

साधना सामग्री - इस साधना में **प्राण प्रतिष्ठित इन्द्राणी यंत्र, ऐश्वर्य सिद्धि माला, (कमल गट्टे की), साफल्य गुटिका।**

यह रात्रि कालीन साधना है। साधक को यह साधना रात्रि 9 बजे के बाद शुरु करनी चाहिए। साधना शुरु करने से पूर्व स्नानादि करके परिशुद्ध हो लें, धोती पहन कर गुरु चादर ओढ़ लें, इसके बाद अपने साधना कक्ष में पीला या सफेद आसन बिछा लें, पूर्व दिशा की ओर बैठें, सबसे पहले धूप तथा दीप जला लें।

अपने सामने पहले गुरु चित्र स्थापित करें, सभी पूजन सामग्री को अपने पास रखें। पंच पात्र के जल से गुरु चित्र को स्नान करावें, इस तरह तिलक, अक्षत, पुष्प तथा धूप-दीप से गुरु पूजन सम्पन्न करें। फिर अपनी साधना में सफलता के लिए दोनों हाथ जोड़कर गुरुदेव से प्रार्थना करें -

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवेनमः

इसके बाद, गणपति पूजन करें, गणपति विग्रह को किसी प्लेट पर स्थापित कर दें, यदि विग्रह न हो तो एक सुपारी पर मौली लपेट कर स्थापित करें। पूर्ववत् पंचोपचार से गणपति पूजन करें, इसके बाद अपने दाहिने हाथ में अक्षत तथा दूर्वा रख कर अपनी मनोकामना का उच्चारण करके निम्न प्रार्थना के सहित गणपति पर अक्षत आदि चढ़ायें। फिर दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें -

गजाननं भूतगणाधि सेवितं,
कपित्थजम्बू फल चारू भक्षणं
उमासुतं शोक विनाश कारकं
नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम्।

इसके बाद इन्द्राणी यंत्र किसी प्लेट या थाली पर कुंकुम से स्वस्तिक बना कर स्थापित कर दें। फिर निम्न मंत्र बोलते हुए मंत्र को गंगा जल या शुद्ध जल से स्नान करावें -

गंगा सरस्वती रेवा पयोष्णि नर्मदा जलैः
स्नापितोऽसि मया देवि! तथा शान्ति कुरुष्व मे
ॐ भगवति इन्द्राण्यै नमः।

इसके बाद यंत्र के चारों दिशाओं में कुंकुम या केशर से चार तिलक करें।

श्री खण्डचन्दन दिव्य गन्धाढ्यं सुमनोहर
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिग्रहताम।
चंदनं समर्णपयामि ॐ जगदम्बायै नमः।
अक्षतान् समर्णपयामि ॐ जगदम्बायै नमः।

फिर अक्षत समर्पित करें।

इसके बाद निम्न मंत्र पढ़कर माल्यार्पण करें -

ॐ तं पुरुषं व्यदधुः कतिधा विकल्पयन्न
मुखं किमस्यासीत् किम बाहू किमरू पादा उच्येते
माल्यार्पण समर्पयामि ॐ जगदम्बाये नमः
धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि ॐ जगदम्बाये नमः

सुगंधित अगरबत्ती जलावें। फिर यंत्र के चारों ओर चार घी के दीपक जलावें जिससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति

दुख का दूसरा नाम अज्ञान है। अज्ञान के आवरण को दूर करने में भी कष्ट होता है। किन्तु यह कष्ट दुःख का कारण नहीं होना चाहिए। इस परिवर्तन में वही रोमांच है, जो ऋतुओं के परिवर्तन में होता है। दुख एक कड़वी औषधि की तरह है, जिसके द्वारा तुम्हारे अंदर का वैद्य तुम्हारी रुग्ण आत्मा का उपचार करता है। इस वैद्य पर श्रद्धा रखकर उपचार होने देना चाहिए।

अतः दुःखों को भी जीवन का अनिवार्य अंग मानो और उसका स्वागत करो। दुःख प्रायः सुख की भूमिका में आते हैं। अतः उन्हें शांति पूर्वक सहन कर लोगे तो वही सुखों की सृष्टि करेंगे। शांत मन से उन्हें सहन कर लेना ही पुरुषार्थ है और दैनिक जीवन में दोनों का समन्वय व्यावहारिक रूप से करना ही बुद्धिमत्ता है।

हो, पूरे मंत्र जप तक दीपक जलने चाहिए। इसके बाद कोई मिठाई भोग लगावें। इसके बाद, साफल्य गुटिका एवं माला को गोलाकर बनाकर यंत्र के सामने रखकर इनका भी पंचोपचार से पूजन करें। फिर कुंकुम से रंगे हुए चावल तथा दूब लेकर निम्न नामों का उच्चारण करते हुए यंत्र पर चढ़ावें।

ॐ इंद्राण्ये नमः   ॐ महोदर्यैनमः
ॐ इन्द्राक्ष्यै नमः   ॐ शिवायै नमः
ॐ गायत्र्यै नमः   ॐ इन्द्ररूपायैनमः
ॐ सावित्र्यै नमः   ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ शाकम्बर्यै नमः   ॐ अम्बिकायै नमः
ॐ ब्रह्मण्यै नमः

इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर इन्द्राणी शक्ति प्रार्थना करें -

इन्द्राणी इन्द्ररूपा च रूद्रशक्ति - परायणा।
शिव च शिवरूपा च शिवशक्ति परायणा
सदा सं मोहिनी देवी सुन्दरी भुवनेश्वरी
महिषासुर हन्त्री च चामुण्डा सम मातरः।
श्रुतिः स्मृति धृतिर्मेधा विद्या लक्ष्मीः सरस्वती
अनन्ता विजया पूर्ण मानस्तो का पराजिता।

नवरात्रि के किसी भी दिन या शुक्रवार से साधना आरंभ करें, यह ग्यारह दिन की साधना है, इसमें 21 हजार मंत्र जप होना चाहिए। मंत्र जप पूरा होने पर एक या पांच कुमारी कन्याओं को भोजन करावें, अन्त में लाल वस्त्र में सभी सामग्री को बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - 360/-

त्राटक विज्ञान

जिसके द्वारा भविष्य संवारा जा सकता है
जिसे सम्पन्न करने की एक निश्चित प्रक्रिया है
स्वयं जांच सकते है आपकी साधना किस दिशा में जा रही है

जब हम त्राटक करते हैं, तो इसका अर्थ है मस्तिष्क में बनने वाली ऋण और धन विद्युत को स्पार्क के द्वारा खत्म होने से रोकना। 30 से 40 मिनट तक त्राटक करने पर मस्तिष्क में काफी मात्रा में विद्युत इकट्ठी हो जाती है और जब यह विद्युत इच्छित स्थान पर पहुंच कर गुप्त शक्ति केन्द्र विशेष को उत्तेजित करती है, तो अभ्यासी को मनोवांछित सिद्धि मिल जाती है।

पातंजलि योग में वर्णित एक कर्म है त्राटक। वैसे तो षट्कर्मों के करने का मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्ति है और इनके अभ्यास से प्राकृतिक रूप से मिलने वाली विभिन्न सिद्धियों को उपयोग में लाना शास्त्रों के अनुसार वर्जित है, लेकिन वर्तमान समय में रहन-सहन की कठिन परिस्थितियों को देखते हुए और इस संसार को सत्य मानते हुए यदि विचार करें, तो पाएंगे, कि असाधारण सिद्धियों का स्वयं के लाभ के लिये उपयोग में लाना कोई पाप नहीं है। संयोग से पातंजलि योग भी इसका समर्थन करता है।

त्राटक का प्रचलन हजारों साल से संभवतः लगभग सभी देशों में होता आया है। इसका अच्छे लोगों ने उपयोग किया है और बुरे लोगों ने दुरुपयोग भी किया है। आम जनता के मध्य त्राटक की उपलब्धियां हमेशा संदेहास्पद और भ्रमपूर्ण रही हैं और विवादग्रस्त भी। लेकिन प्राचीन ग्रंथों में त्राटक के अभ्यास से प्राप्त होने वाली जिन शक्तियों का उल्लेख मिलता है, उनकी प्राप्ति आज के युग में भी उतनी ही सत्य है।

पहले यह देखें, कि त्राटक क्या है एवं इससे शक्ति प्राप्त होने के क्या सिद्धान्त हैं?

सूर्योदय के पूर्व नित्यकर्मों से निवृत्त होकर सीधे बैठकर आंखों की सीध में लगभग 3 फीट दूर एक काली मिर्च के बराबर काला वृत्त बनाया जाता है सफेद ड्राईंग पेपर की 4"x4" शीट पर और बिना पलक झपकाये इसे देखना प्रारम्भ करते हैं। प्रारम्भ में 3 से 5 मिनट तक अपलक देखने पर आंखों से आंसू आ जाते हैं, तब अभ्यास रोक दिया जाता है। फिर दूसरे दिन ठीक उसी समय फिर से ऐसा ही अभ्यास किया जाता है। इसी तरह 8 से 10 दिन तक लगातार करने पर 8 से 10 मिनट तक अपलक देखने का अभ्यास हो जाता है। लगभग 6 माह तक धैर्यपूर्वक अभ्यास करने पर 10 मिनट तक अपलक देखने की योग्यता आ जाती है।

अधिकांश अभ्यर्थियों को शास्त्रोक्त विधि के अनुसार आशा होती है, कि उनकी आंखों में अब सभी लोगों को सम्मोहित करने की शक्ति आ जायेगी या आंखों में ऐसा तेज आ जायेगा, जो लोगों को इच्छानुसार काम करने पर विवश करेगा; लेकिन ऐसा कुछ न होने पर कुण्ठाग्रस्त होकर उसे छोड़ देते हैं, अधिकतर ऐसा ही होता है। थोड़े से लोग ऐसे भी होते हैं, जिन्हें अपनी इच्छानुसार सफलता मिल ही जाती है। इस

विद्या का आम लोगों के बीच लुप्त प्राय होने का यही सबसे मुख्य कारण है।

लेकिन बहुत ही थोड़े लोगों को इसमें सफलता मिलती है और अधिकतर असफल रहते हैं - ऐसा क्यों होता है?

कारण यह है, कि जब अभ्यास प्रारम्भ किया जाता है, तब उसके साथ कुछ और भी नियम पालन करने होते हैं, जो लगते तो साधारण हैं, पर परिणाम चमत्कारिक ढंग से देते हैं।

पहला नियम - भयमुक्त श्वास - प्रश्वास और अत्यन्त धीमी गति का श्वास प्रश्वास।

दूसरा नियम - त्राटक से एक निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति का दृढ़ संकल्प लेना, जैसे भविष्य दर्शन की क्षमता या दूर श्रवण की क्षमता या इच्छित वस्तु को प्राप्त करना आदि।

अनेक नियमों में से केवल श्वास-प्रश्वास का नियम और दृढ़ संकल्प - ये दो नियम ही 6 से 7 महीने में त्राटक के साथ ऐसे विलक्षण अनुभव देते हैं, कि अभ्यासी का त्राटक में सफलता का दृढ़ विश्वास जम जाता है। फिर यही विश्वास का संबल आगे चल कर त्राटक में पूर्ण सिद्धि प्रदान करता है।

अब देखें त्राटक के बाद शारीरिक और मानसिक परिवर्तन किस प्रकार के हो रहे हैं - अच्छे या बुरे?

अभ्यास गलत होने पर गलत प्रभाव पड़ता है, कारण कि त्राटक का अभ्यास पूर्णतः मस्तिष्क की गुप्त शक्तियों और विचारों की शक्तियों का खेल है। अभ्यासी यदि इस अत्यन्त संवेदनशील खेल में सावधानी रखता है, तो सफल हो जाता है। त्राटक के अभ्यास का अवलोकन अभ्यासी के हाथ में किया जाता है जो पूरे शरीर में एक अद्भुत अंग है, हाथ की लकीरों और आकार को हम पूरे शरीर, मन और बुद्धि का दर्पण मान सकते हैं। अतः हस्त रेखाओं के माध्यम से, त्राटक के अभ्यास से अभ्यासी में आ रहे परिवर्तनों का अध्ययन किया जाए।

जिस व्यक्ति में आत्मविश्वास की कमी होती है, वह किसी भी कार्य को लेकर कभी कोई ठोस निर्णय नहीं कर पाता है, क्योंकि उसका मन संदेह से भरा रहता है। उसे यह विश्वास ही नहीं होता है कि वह जो कार्य करेगा, उसमें उसे सफलता मिलेगी या नहीं। इसी उधेड़बुन में वह कोई काम ही शुरु नहीं कर पाता। इसका नतीजा यही निकलता है कि वह जहां का तहां खड़ा रह जाता है। उसकी प्रगति और विकास के मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं और उसका जीवन इसी प्रकार बीत जाता है।

लेकिन यदि एक बार आपके मन में यह दृढ़ विश्वास पैदा हो जाए कि आप जिस वस्तु को पाना चाहते हैं, उसे बड़ी आसानी से हासिल कर सकते हैं तो आपमें इतनी शक्ति और सामर्थ्य पैदा हो जाता है कि आप उसे प्राप्त कर ही लेते है।

अच्छे परिवर्तन

चित्रानुसार मस्तिष्क रेखा (रेखा 1-1) से ऊपर जाती रेखाएं उर्वरक मस्तिष्क की द्योतक हैं। यदि ये रेखाएं अभ्यास के बाद बन रही हैं, तो इसका अर्थ है, कि अभ्यासी सफलता की ओर बढ़ रहा है और उसमें सृजनात्मक क्षमता का विकास हो रहा है।

दूसरा लक्षण है शनि पर्वत पर त्रिभुज का बनना, यह अभ्यासी में सम्मोहन की क्षमता विकसित होने का लक्षण है। अभ्यासी में यह विद्या या तो आंखों के द्वारा विकसित होगी या फिर बातचीत और हावभाव के द्वारा। लेकिन दोनों ही माध्यम का सिद्धान्त एक ही है - 'सामने वाले की तर्क करने की क्षमता और विचार करने की क्षमता को थोड़े समय के लिए खत्म करना या उस पर पक्षाघात लगाना।'

तीसरा लक्षण, जो बहुत ही जल्द आ जाता है - बुध पर्वत से चन्द्र पर्वत तक तलवार जैसी ढलवां रेखा (2-2) का बनाना। इसका अर्थ होता है, त्राटक के अभ्यासी में पूर्वाभास की क्षमता का विकास हो रहा है, जिससे भविष्य दर्शन, किसी व्यक्ति की आदतों, व्यवहार या आन्तरिक उद्देश्यों को केवल फोटो देखकर पहचान जाना आदि-आदि, यह सब अभ्यासी को दिवास्वप्न की भांति दिखता है। किसी व्यक्ति का फोटो देखते ही उसके भूतकाल, वर्तमान, भविष्य और उसकी आदतों के बारे में अभ्यासी को कैमरे से खींची फोटो जैसे दिखने लगते हैं। यह तो हुए अच्छे परिवर्तन, जो हजारों में से कुछ ही हैं।

गलत परिवर्तन

अब देखना है, कि यदि अभ्यासी कहीं गलती कर रहा है, तो खराब असर तो नहीं हो रहा है। यदि मस्तिष्क रेखा पर बारीक रेखाओं का जाल अंत में बन रहा हो (रेखा 3-3), तो अर्थ हुआ त्राटक का केन्द्रीय तंत्रिका तंत्र पर प्रतिकूल असर पड़ रहा है। परिणाम स्वरूप बेवजह मानसिक तनाव, बेचैनी; घबराहट या पेट की खराबी, कुछ भी हो सकता है, जिसको

हस्तरेखाओं के सूक्ष्म अध्ययन से निश्चित किया जा सकता है।

शनि पर्वत पर आड़ी रेखाएं, जो सूर्य पर्वत के लगभग पास पहुंच रही हों (रेखा 4-4), निर्णय क्षमता का क्षरण बतलाती हैं। साथ ही केन्द्रीय तंत्रिका पर अतिरिक्त दबाव को भी बताती हैं, जो भविष्य में रक्तचाप की अनियमितता दे सकता है।

जीवन रेखा (रेखा 5-5) पर अभ्यासी की वर्तमान आयु निश्चित कर, उस स्थान पर अच्छे-बुरे चिह्न देखकर त्राटक का अंतिम परिणाम निकाला जा सकता है। ये सभी लक्षण 6 महीने या 1 साल बाद ही बनते बिगड़ते देखे जा सकते हैं।

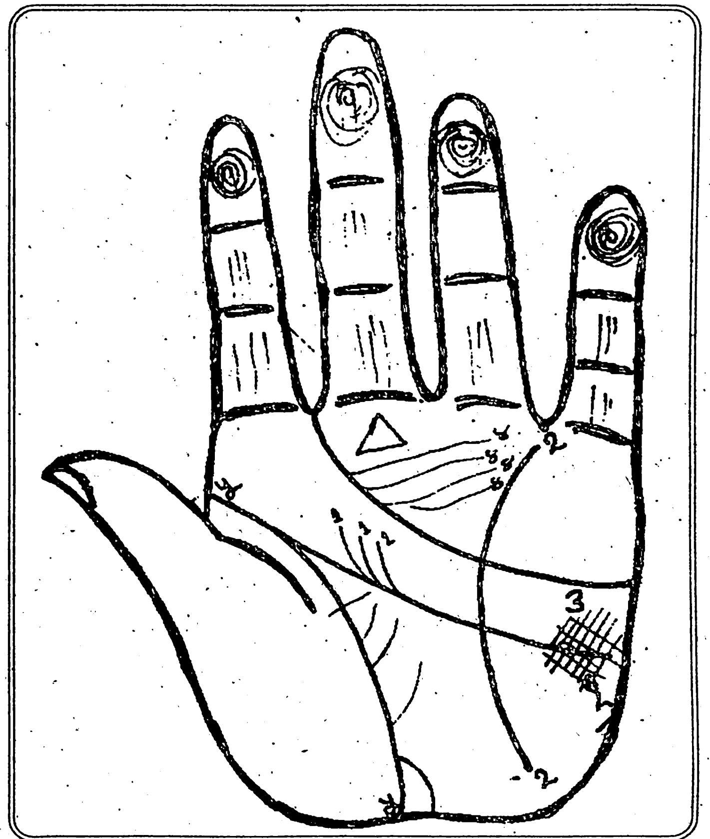
पूर्णता प्राप्ति

30 से 40 मिनट तक सफलतापूर्वक अपलक देखने की क्षमता आ जाने पर अभ्यासी की प्रतिभा उसके संकल्प के अनुसार विकसित होती है, जैसे भविष्य दर्शन की प्रतिभा वाले व्यक्ति को त्राटक के दौरान अनजानी जगहों, अनजाने व्यक्तियों या अजीबो-गरीब घटनाओं के दर्शन, जो भूतकाल या भविष्य से सम्बन्धित हो सकते हैं। लययुक्त श्वास-प्रश्वास और एक निश्चित उद्देश्य रखने पर इन दृश्यों के दिखने न दिखने पर नियन्त्रण आने लगता है और भविष्य की घटनाओं का दर्शन आदि में अभ्यासी दक्ष हो जाता है।

त्राटक से ऐसा क्यों होता है?

मनुष्य का मस्तिष्क सम्भवतः पूरे ब्रह्माण्ड में अति रहस्यमय पदार्थ है। व्यक्ति का मस्तिष्क खोपड़ी के अन्दर दो भागों में बंटा है, ये दोनों गोलार्द्ध आपस में बारीक तंत्रिकाओं द्वारा जुड़े हुए हैं, जिनकी संख्या असंख्य है। विभिन्न देशों में हुए अनुसंधान के अनुसार मस्तिष्क के दोनों गोलार्द्धों में निरन्तर विद्युत निर्माण होता रहता है, यह विद्युत मिलीवोल्ट के हजारों लाखों हिस्से के बराबर होती है और निरन्तर बनती रहती है। जब यह विद्युत एक निश्चित मात्रा के ऊपर पहुंच जाती है; तो मस्तिष्क इससे होने वाले क्षरण से बचने के लिए दोनों गोलार्द्धों के मध्य स्पार्क करता है। इस क्रिया के असर से ही व्यक्ति पलकें झपकाता है, अर्थात् जब भी पलक झपकती है, मस्तिष्क के दोनों गोलार्द्धों के मध्य धन और ऋण विद्युत का स्पार्क होता है।

जब हम त्राटक करते हैं, तो इसका अर्थ है मस्तिष्क में बनने वाली ऋण और धन विद्युत को स्पार्क के द्वारा खत्म होने से रोकना। 30 से 40 मिनट तक त्राटक करने पर मस्तिष्क में काफी मात्रा में विद्युत इकट्ठी हो जाती है, जिसका यदि सृजनात्मक उपयोग न किया गया, तो यह विनाशकारी साबित हो सकती है।



सृजनात्मक उपयोग में काम आते हैं, लय युक्त श्वास-प्रश्वास और एक निश्चित उद्देश्य, अर्थात् 6 माह तक त्राटक का जो अभ्यास है, वह लय युक्त श्वास-प्रश्वास और निश्चित उद्देश्य द्वारा अतिरिक्त विद्युत को मस्तिष्क के सुस्त पड़े गुप्त शक्ति केन्द्रों में प्रवाहित करने का अभ्यास है और जब यह विद्युत इच्छित स्थान पर पहुंच कर गुप्त शक्ति केन्द्र विशेष को उत्तेजित करती है, तो अभ्यासी को मनोवांछित सिद्धि मिल जाती है।

इसके विपरीत यदि मस्तिष्क में त्राटक के इकट्ठे हुए विद्युत ऊर्जा को सही दिशा न दे पाये, तो मस्तिष्क के अन्य केन्द्रों को नुकसान पहुंच सकता है, जिससे असामान्य व्यवहार, शारीरिक अपंगता आदि कुछ भी हो सकता है। इन्हीं बातों को हस्त रेखाओं द्वारा पढ़ कर सावधानी बरती जा सकती है।

अब आपको निश्चिय ही समझ में आ गया होगा, कि हजारों साल पहले भारतीय ऋषियों ने मस्तिष्क की विद्युत का वैज्ञानिक उपयोग कितनी चुतराई से किया और वे ही सिद्धान्त आज भी विज्ञान की अमूल्य धरोहर हैं।

एक त्राटक ही नहीं, सभी षट्कर्मों और इनकी सभी उपलब्धियों की बेहतरीन वैज्ञानिक व्याख्या है, जो कसौटी पर सौ प्रतिशत खरी उतरेंगी। साधक अपनी साधना में सफलता के लिए भी त्राटक का उपयोग कर सकता है।

दैव रक्षा करते हैं, हर विपत्ति में

30 मार्च 2010

दैव साधक को शक्ति देते हैं

जय श्रीराम

प्रकट देव पवन पुत्र

श्री हनुमान आख्यान



एक सिद्ध साधक की गाथा..............................

दैव कृपा किस रूप में आती है, यह सामान्य व्यक्ति नहीं जान पाता, अच्छे कार्य होने पर वह सोचता है कि उसने कर्म, परिश्रम किया है। दुःख आने पर देवताओं को दोष देता है, अपने पूर्व जन्म के कर्मों को दोष देता है, लेकिन सच्चा साधक विपत्ति में भी शांत रहकर अपना कार्य करता है, ईश्वरीय शक्ति को धन्यवाद देता है। ऐसे ही साधक को गुरु दर्शन, देव दर्शन होते है, आप भी विचार करें -

ग्रीष्म की अग्नि वर्षा करती हुई दोपहर में उसका आगमन गांव में सुखद हरियाली का प्रतीक बन गया था। अत्यन्त अल्प समय में ही अपनी उदात्त प्रेम भावना को असहाय ग्रामीणों की सेवा-सुश्रुषा के रूप में लुटाते हुए वह हृदय में छिपी अपनी समष्टिगत करुणा का परिचय दे चुका था। आज वह कितने ही मुरझाये दिलों में प्रेरणा और प्रकाश भरने का अधिकारी है, सब कितना प्यार करते हैं उसे। गांव का एक भी घर उसकी कृपा दृष्टि की अमृत फुहार से अछूता नहीं बचा...

भव्य गौर वर्ण, सिर पर छोटी सी शिखा व मस्तक पर कभी न मिटने वाला रक्त चन्दन का तिलक। ...पर आंखों में असीम वेदना, करुणा और जिज्ञासा थी, नेत्रों में एक निस्तब्धता थी, जिसे देख कर लगता था, मानो अंधकार होने पर भी वह प्रकाश की ओर बढ़ रहा हो। उसके लम्बे व पतले अधरों पर विचित्र स्फुरण था, जैसे किसी अत्यन्त पवित्र शब्द का उद्घोष करने को व्याकुल हो उठे हों।

पर गांव वालों को इससे क्या? वे तो अत्यन्त कौतूहल से उस अल्पवय साधु को देख रहे थे, जो गांव की सीमा पर न जाने कहां से जेठ की तपती धूप में प्रकट हो गया था। पिछले कई मास से ग्रामीणों का जीवन किसी दैवीय आपदा से अस्त-व्यस्त हो चुका था, शैय्या पर झूल रहे थे कई घर तो पूरी तरह से बरबाद हो चुके थे - शव को कंधा देने वाला भी शेष नहीं था। कदाचित इन्हीं कारणों से वे ग्रामीण किसी भी आगन्तुक को अत्यन्त भय की दृष्टि से देखा करते थे।

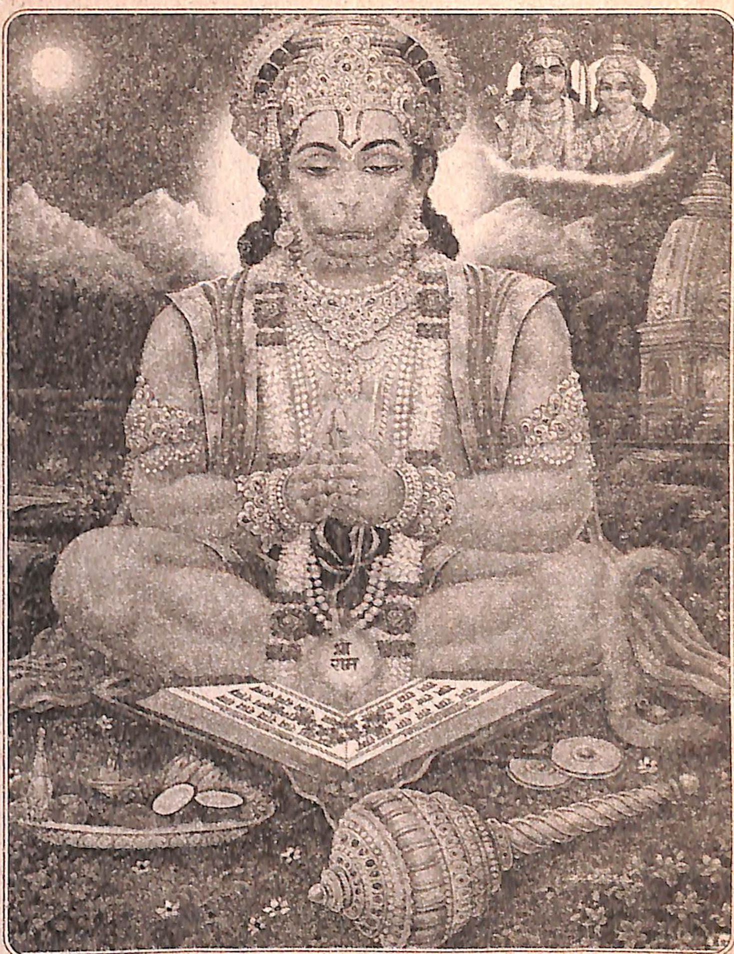
'पर यह तो बिल्कुल अलग सा दिखता है' - पीली धोती पहने, कंधे पर लाल झोली उठाये वह तरुण साधक प्रत्येक को अपनी ओर मानो अपनी ओर खींच रहा था - 'सचमुच ही इसमें तपस्या का तेज दिखाई दे रहा है, क्या मालूम ईश्वर ने हम दुःखी ग्रामीणों के कल्याण का माध्यम बनाकर ही इसे यंत्र स्वरूप भेज दिया हो... कितनी प्रेमभरी आंखों से पूरे गांव को निहार रहा है' - कुछ ग्रामीण यह विचार कर ही रहे थे, कि उस युवा तपस्वी ने उनके पास आकर अत्यन्त विनम्रता पूर्वक पूछा - 'यदि आप संत जन कृपा करें, तो मैं कुछ समय के लिए इस गांव में ठहरना चाहता हूं।'

- 'विश्वास रखिये, मैं हर प्रकार से मंगल ही करूंगा।'

'हां बेटा! तुम इसे अपना ही गांव समझो' - अन्य कोई होता, तो गांव वाले धक्के देकर भगा देते, पर उसकी सम्मोहक वाणी और संत जनों का सम्बोधन सुन वे भोले ग्रामीण प्रसन्न हुए बिना न रह सके - 'पर आजकल इस गांव में मृत्यु ने अपना भयानक पंजा फैला रखा है, कोई परिवार सुखी नहीं है, इसीलिए तुम बाहर हनुमान मंदिर में डेरा डाल सको, तो हमें कोई असुविधा नहीं है।''

'हनुमान मंदिर' - साधु के कान मानो इसी शब्द की प्रतीक्षा कर रहे थे, उसकी आंखों में अपूर्व चमक कौंध उठी। अपना कमण्डल व थैला उठाये वह दूर अमराइयों के बीच स्थित उस पुराने खण्डहरनुमा हनुमान मन्दिर के प्रांगण में प्रवेश कर गया। अपने लाल अंगोछे से मन्दिर की धूल साफ की और पत्तियों को एकत्र कर धूनी में डालने के पश्चात् एक ओर आसन लगा कर बैठ गया।

गांव के दो युवा खटीकों की इहलीला समाप्त होने के कारण यह अमराई और मन्दिर दोनों ही ग्रामीणों की दृष्टि में अभिशप्त साबित हो चुके थे, अतः वे दूर से ही कुछ समय टकटकी लगा कर साधु के क्रिया-कलाप से संतुष्ट हो लौट चले।



मर्मान्तक पीड़ाओं से मुक्ति

तपस्वी की रात्रि व्यतीत होनी थी, कि गांव का कायापलट आरम्भ हो गया। मृत्यु शैय्या पर लेटे गांव के लच्छू महाराज का एकमात्र पुत्र प्रातः ही उठ बैठा और भावविभोर शब्दों में इतना ही कह पाया - 'मां! रात में भूत बगीचे के हनुमान जी मेरे पास आये थे, मुझे छूते रहे और जाते-जाते कहने लगे, कि अब मैं अच्छा हो जाऊंगा, पहले की तरह खेल सकूंगा।'

माता-पिता बालक के शरीर में रोग का कोई लक्षण न देख प्रसन्नता से रो पड़े। कल तक जिसके लिए कोई उपचार शेष नहीं बचा था, वही मरणासन्न पुत्र आज किलकारियां भरते हुए मां की गोद में सिमटा जा रहा था।

तब भी ग्रामीणों को उस तपस्वी की महिमा का पूरा अंदाज नहीं मिल पाया था, अभी भी वे उसके निकट जाने से डरते थे। वह युवा साधु रात्रिपर्यन्त एक ही आसन पर बैठा हुआ मंत्र जप किया करता, सामने रक्तवर्णीय जंगली फूल व गुड़ का नैवेद्य बिखरा होता और वह दीपक के धीमे प्रकाश में किसी प्रखर देवात्मा का आह्वान करता प्रतीत होता, कभी-कभी तो भावावेश में रोने भी लगता।

दिन के तीसरे प्रहर जब गांव का बाल समूह विद्यालय से लौटता, तो अमराइयों में बसे उस साधक का लोभ बरबस ही उन्हें वहां खींच लाता। उस समय वह प्रत्येक से उसके घर का कुशल-क्षेम पूछता और तकलीफ सुनते ही अत्यन्त विश्वास के साथ अगले दिन ठीक हो जाने का आश्वासन भी दे देता। भोले-भाले बालक घर लौट कर माता-पिता को यह समाचार सुनाते और फिर कुछ डांट-फटकार खाकर चुप हो जाते। ग्रामवासी अभी भी जिस साधु को भय से देखते थे, बालकों को वही अपना सबसे परम मित्र प्रतीत होता।

आषाढ़ मास का प्रारम्भ हो चुका था। हल्की-फुल्की रिमझिम वर्षा ने अचानक एक दिन प्रलयंकारी रूप धारण कर लिया। वृद्धजन आश्चर्य से भर उठे, अपने जीवन में इस गांव में वर्षा का इतना भीषण तांडव उन्हें कभी स्मरण नहीं आया था। खेत-खलिहान डूबने लगे, सूरज देवता तो जैसे अदृश्य ही हो गये थे। चारों ओर जलप्लावन का दृश्य उपस्थित हो गया। एक-एक करके मवेशियों की मृत्यु होने लगी।

घर गिर जाने की आशंका से कितने ही परिवार गांव छोड़ कर पलायन कर गये, जो बचे, वे अन्न-जल को तरसने लगे, साथ ही संक्रामक रोगों ने भी सबको अपनी गिरफ्त में ले लिया था, किसी को अब जीवन का भरोसा नहीं रह गया।

इन्हीं दुर्दिन के क्षणों में गांव वालों को उस तपस्वी का वास्तविक देवात्मा स्वरूप दिखाई पड़ा। कष्ट भोगते रोगियों को वह कुछ अभिमंत्रित जल दे देता और उनकी तकलीफ मिटने लगती।

गांव का सूखा तालाब, जो अब एक विशाल झील का रूप ले चुका था, उसमें से उस साधु ने कई बालकों को काल

कवलित होने से बचा लिया। अपने प्राणों का तो जैसे उसे मोह था ही नहीं, मूसलाधार वर्षा में भी वह आराम से तैरते हुए झील में प्रवेश कर डूबते मवेशियों को खींच लाता। पता नहीं, कितनी अद्‌भुत शारीरिक क्षमता भगवान ने उसे प्रदान की थी, कि वह कभी रुग्ण नहीं होता था, अपितु दिवस पर्यन्त दूसरों की सेवा में ही लीन रहता और रात्रि साधना में ही बीत जाती।

प्रबल पराक्रम का रहस्य

अन्ततः प्रकृति का ताण्डव समाप्त हुआ, तपस्वी की रात्रि साधना सफल हो चुकी थी। अब उसके प्रस्थान का समय आ चुका था। गांव की सीमा पर पहुंचे उन ग्रामीणों ने तपस्वी के पुण्य चरणों में प्रणाम कर क्षमा याचना करते हुए कहा – 'भगवन्! अज्ञानवश हमसे जो भी भूल हो गई हो, उन्हें क्षमा कर देना। कभी इधर आगमन हो, तो सेवा का अवसर हमें ही दें, आपके उपकारों से हम कभी उऋण नहीं हो पायेंगे।'

तपस्वी की आंखें छलक उठीं। स्नेह पूर्वक उस ग्रामीण के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा – 'कल्याण करने की सामर्थ्य तो एकमात्र मेरे गुरुदेव में ही है, मैं तो उनका एक निमित्त मात्र ही हूं। पीड़ित मानवता के प्रति उनकी असीम करुणा ही मुझे यहां खींच लाई। सेवा से मिलने वाला आत्मसंतोष ही मेरे लिए सबसे बड़ा वरदान है, वही मेरी प्रसन्नता है।'

'अब इस गांव में कभी कोई संकट या दैवी आपदा आ ही नहीं सकती। मेरी 'हनुमान साधना' यहां पूर्णतः सफल हुई है। गांव की सीमा पर विराजमान बड़े हनुमान जी स्वयं इस गांव की सुरक्षा करते रहेंगे, अपने गुरु की साक्षी में मैंने यही वरदान उनसे प्राप्त किया है।'

विलक्षण साधना प्रक्रिया

गुरुदेव के अत्यन्त प्रियपात्र उस तरुण सिद्ध तपस्वी ने अपनी कठिन तांत्रोक्त बजरंग साधना का जो सरल विधान बताया, वह इस प्रकार है।

सर्वप्रथम प्राण प्रतिष्ठित **'हनुमान यंत्र'** को प्राप्त कर लें, किसी मंगलवार की रात्रि में स्वयं स्नान कर लाल रंग का शुद्ध वस्त्र पहन हनुमान यंत्र को बाजोट पर लाल वस्त्र बिछा कर उस पर सिन्दूर छिड़क कर स्थापित कर दें, दक्षिण दिशा की ओर आपका मुख हो।

पहले गुरु ध्यान कर वीर मुद्रा में बैठ कर घी का दीपक जलायें और सामने स्थापित हनुमान यंत्र को स्नान करा कर उस पर तेल मिश्रित सिन्दूर का लेपन करें, स्वयं भी सिन्दूर का तिलक करें तथा लाल पुष्प और कोई भी फल नैवेद्य रूप में समर्पित करें। तत्पश्चात् मंत्रसिद्ध **'मूंगा माला'** से निम्नलिखित मंत्र का 21 माला मंत्र जप करें –

मंत्र

॥ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय हनुमते नमः॥

जप समाप्ति पर वहीं लाल बिछौने पर शयन करें। यही क्रम 11 दिनों तक नित्य दोहरायें तथा नैवेद्य को स्वयं ग्रहण करें। यथा संभव मौन रहें तथा प्रयोग को भी गोपनीय ही रखें। पूर्ण एकानिष्ठ भाव व विश्वास के साथ साधना सम्पन्न करने पर अंतिम दिन बजरंग बली प्रसन्न होकर दर्शन देते हैं तथा सभी विपदाओं का शमन करते हुए पूर्ण सुरक्षा प्रदान करते हैं।

हनुमान साधना के आवश्यक नियम –

☆ हनुमान साधना में शुद्धता अनिवार्य है

☆ लाल पुष्प यथा कमल, गुड़हल आदि को ही अर्पित करें।

☆ नैवेद्य में प्रातः पूजन में गुड़, लड्डू, दोपहर में गुड़, घी और गेहूं की रोटी का चूरमा तथा रात्रि में आम, अमरूद या केले का नैवेद्य चढ़ायें।

☆ इस साधना में घी की एक या पांच बत्तियों वाला दीपक जलायें।

☆ पूर्ण साधना काल में अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य ही करें।

☆ मंत्र जप करते समय दृष्टि सदैव यंत्र पर ही टिकी रहे।

☆ **'हनुमान दीक्षा'** प्राप्त कर साधना में प्रवृत्त होने पर प्रथम बार में ही इष्ट के साक्षात् जाज्वल्यमान स्वरूप से साक्षात्कार संभव है। साथ ही साथ साधना अवधि में किसी प्रकार की विघ्न-बाधा अथवा भयावह स्थिति उत्पन्न नहीं होती।

☆ साधना काल में एकान्तवास तथा मौन अत्युत्तम है।

☆ शारीरिक अथवा मानिसक रोगों की समाप्ति के लिए उसी प्रकार का संकल्प मंत्र जप से पहले अवश्य ले लेना चाहिए।

मात्र 11 दिनों तक नियम पूर्वक किया गया यह विलक्षण प्रयोग अतुलनीय बल, पराक्रम व निष्काम सेवा भक्ति के भाव से साधक को आप्लावित कर उसे जीवन के उच्चतम सोपान पर प्रतिष्ठित कर देता है।

साधना सामग्री - 300/-



मंत्र जप प्रभाव

जब तक किसी विषय वस्तु के बारे में पूर्ण जानकारी नहीं होती तो व्यक्ति वह कार्य आधे अधूरे मन से करता है और आधे-अधूरे मन से किये कार्य में सफलता नहीं मिल सकती है।

मंत्र के बारे में भी पूर्ण जानकारी होना आवश्यक है, मंत्र केवल शब्द या ध्वनि नहीं है, मंत्र जप में समय, स्थान, दिशा, माला का भी विशिष्ट स्थान है। मंत्र-जप का शारीरिक और मानसिक प्रभाव तीव्र गति से होता है। इन सब प्रश्नों का समाधान आपके लिये -

जिस शब्द में बीजाक्षर है, उसी को 'मंत्र' कहते हैं। किसी मंत्र का बार-बार उच्चारण करना ही 'मंत्र-जप' कहलाता है, लेकिन प्रश्न यह उठता है, कि वास्तव में मंत्र जप क्या है? जप से क्या परिणाम निकलता है?

व्यक्त-अव्यक्त चेतना

हमारे मन को दो भागों में बांटा जा सकता है -

1. **व्यक्त चेतना** (Conscious mind), 2. **अव्यक्त चेतना** (Unconscious mind)।

हमारा जो जाग्रत मन है, उसी को व्यक्त चेतना कहते हैं। अव्यक्त चेतना में हमारी अतृप्त इच्छाएं, गुप्त भावनाएं इत्यादि विद्यमान हैं। व्यक्त चेतना की अपेक्षा अव्यक्त चेतना अत्यन्त शक्तिशाली है। हमारे संस्कार, वासनाएं - ये सब अव्यक्त चेतना में ही स्थित होते हैं।

किसी मंत्र का जब जप होता है, तब अव्यक्त चेतना पर उसका प्रभाव पड़ता है। मंत्र में एक लय (Rythm) होता है, उस मंत्र ध्वनि का प्रभाव अव्यक्त चेतना को स्पन्दित करता है। मंत्र जप से मस्तिष्क की सभी नाड़ियों में चैतन्यता का प्रादुर्भाव होने लगता है और मन की चञ्चलता कम होने लगती है।

मंत्र जप के माध्यम से दो तरह के प्रभाव उत्पन्न होते हैं -

1. **मनोवैज्ञानिक प्रभाव** (Psychological effect) तथा
2. **ध्वनि प्रभाव** (Sound effect)

मनोवैज्ञानिक प्रभाव तथा ध्वनि प्रभाव के समन्वय से एकाग्रता बढ़ती है और एकाग्रता बढ़ने से इष्ट सिद्धि का फल मिलता ही है।

मंत्र जप का मतलब है इच्छा शक्ति को तीव्र बनाना। इच्छा शक्ति की तीव्रता से क्रिया शक्ति भी तीव्र बन जाती है, जिसके परिणाम स्वरूप इष्ट का दर्शन या मनोवांछित फल प्राप्त होता ही है। मंत्र अचूक होते हैं तथा शीघ्र फलदायक भी होते हैं

मंत्र जप और स्वास्थ्य

लगातार मंत्र जप करने से उच्च रक्तचाप, गलत धारणायें, गंदे विचार आदि समाप्त हो जाते हैं। मंत्र जप का साइड

इफेक्ट (Side effect) यही है।

मंत्र में विद्यमान हर एक बीजाक्षर शरीर की नसों को उद्दीप्त करता है, इससे शरीर में रक्त संचार सही ढंग से गतिशील रहता है।

'क्लीं' 'ह्रीं' इत्यादि बीजाक्षरों का एक लयात्मक पद्धति से उच्चारण करने पर हृदय तथा फेफड़ों पर सकरात्मक प्रभाव पड़ता है व उनके विकार नष्ट होते हैं।

जप के लिए ब्रह्म मुहूर्त को सर्वश्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि उस समय पूरा वातावरण शांति पूर्ण रहता है, किसी भी प्रकार का कोलाहल या शोर नहीं होता।

कुछ विशिष्ट साधनाओं के लिए रात्रि का समय अत्यन्त प्रभावी होता है।

गुरु के निर्देशानुसार निर्दिष्ट समय में ही साधक को जप करना चाहिए। सही समय पर सही ढंग से किया हुआ जप अवश्य ही फलप्रद होता है।

अपूर्व आभा

मंत्र जप करने वाले साधक के चेहरे से एक अपूर्व तेज झलकने लगता है, चेहरे पर अपूर्व आभा आ जाती है। आयुर्वेद की दृष्टि से देखा जाय, तो जब शरीर शुद्ध और स्वस्थ होगा, शरीर स्थित सभी संस्थान सुचारू रूप से कार्य करेंगे, तो इसके परिणाम स्वरूप मुखमण्डल में नवीन कांति का प्रादुर्भाव होगा ही।

जप माला

जप करने के लिए माला एक साधन है। शिव या काली के लिए रुद्राक्ष माला, हनुमान के लिए मूंगा माला, लक्ष्मी के लिए कमलगट्टे की माला, गुरु के लिए स्फटिक माला - इस प्रकार विभिन्न मंत्रों के लिए विभिन्न मालाओं का उपयोग करना पड़ता है।

मानव शरीर में हमेशा विद्युत का संञ्चार होता रहता है। यह विद्युत हाथ की उंगलियों में तीव्र होता है। इन उंगलियों के बीच जब माला फेरी जाती है, तो लयात्मक मंत्र ध्वनि (Rythmic sound of the Hymn) तथा उंगलियों में माला का भ्रमण - दोनों के समन्वय से नूतन ऊर्जा का प्रादुर्भाव होता है।

जप माला के स्पर्श (जप के समय में) से कई लाभ हैं -

✶ रुद्राक्ष के स्पर्श से कई प्रकार के रोग नष्ट हो जाते हैं।

✶ कमलगट्टे की माला से शीतलता एवं आनन्द की प्राप्ति होती है।

✶ स्फटिक माला से मन को अपूर्व शांति मिलती है।

दिशा

दिशा को भी मंत्र जप् में अत्यधिक महत्व दिया गया है। प्रत्येक दिशा में एक विशेष प्रकार की तरंगे (Vibrations) प्रवाहित होती रहती है। सही दिशा के चयन से शीघ्र ही सफलता प्राप्त होती है।

जप-तप

जप में जब पूर्णता आ जाती है, पराकाष्ठा की स्थिति आ जाती है, तो उसे 'तप' कहते हैं। जप में एक लय होता है। लय का अर्थ है ध्वनि के खण्ड। दो ध्वनि खण्डों के बीच में निःशब्दता है। इस निःशब्दता पर मन केन्द्रित करने की जो कला है, उसे तप कहते हैं। जब साधक तप की स्थिति को प्राप्त करता है, तो उसके समक्ष सृष्टि के सारे रहस्य अपने आप अभिव्यक्त हो जाते हैं। तपस्या में परिणति प्राप्त करने पर धीरे-धीरे हृदयगत अव्यक्त नाद सुनाई देने लगता है, तब वह साधक उच्चकोटि का योगी बन जाता है। ऐसा साधक गृहस्थ भी हो सकता है और संन्यासी भी।

कर्म विध्वंस

मनुष्य को अपने जीवन में जो दुःख, कष्ट, दारिद्र्य, पीड़ा, समस्याएं आदि भोगनी पड़ती हैं, उसका कारण प्रारब्ध है। जप के माध्यम से प्रारब्ध को नष्ट किया जा सकता है और जीवन में सभी दुःखों का नाश कर, इच्छाओं को पूर्ण किया जा सकता है, इष्ट देवी या देवता का दर्शन प्राप्त किया जा सकता है, भोग एवं मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है।

गुरु उपदेश

मंत्र को सद्गुरु के माध्यम से ही ग्रहण करना उचित होता है। सद्गुरु ही सही रास्ता दिखा सकते हैं, मंत्र का उच्चारण, जप संख्या, बारीकियां समझा सकते हैं और साधना काल में विपरीत परिस्थिति आने पर साधक की रक्षा कर सकते हैं।

साधक की प्राथमिक अवस्था में सफलता व साधना की पूर्णता मात्र सद्गुरु की शक्ति के माध्यम से ही प्राप्त होती है। यदि साधक द्वारा अनेक बार साधना करने पर भी सफलता प्राप्त न हो, तो सद्गुरु विशेष शक्तिपात द्वारा उसे सफलता की मंजिल तक पहुंचा देते हैं।

इस प्रकार मंत्र जप के माध्यम से नर से नारायण बना जा सकता है, जीवन के दुःखों को मिटाया जा सकता है तथा अद्भुत आनन्द, असीम शांति व पूर्णता को प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि मंत्र जप का अर्थ मात्र कुछ शब्दों को रटना नहीं है, अपितु मंत्र जप का अर्थ है - जीवन को पूर्ण बनाना।

चैत्र नवरात्रि १६ मार्च से २४ मार्च

नवरात्रि के नौ दिवस

जीवन में सफलता के १८ प्रयोग

सफलता में सहायक

18 तांत्रोक्त उपकरण

जो सरल हैं पर प्रभाव विरल हैं



प्रत्येक साधक जब साधना के लिए प्रवृत्त होता है तो उसके मन में कोई अभिलाषा अवश्य होती है। साधक यह चाहता है कि साधना के द्वारा उसे जीवन में बाधाओं से मुक्ति मिले और उसके कार्य सफल हों। तांत्रिक निर्भयानन्द जी ने ऐसी ही १८ तांत्रिक वस्तुओं और मंत्रों का चयन किया है जो सरल हैं और नवरात्रि के किसी भी दिन इन प्रयोगों को सम्पन्न किया जा सकता है। ऐसे लघु प्रयोग आप भी नवरात्रि में अवश्य सम्पन्न करें -

नवरात्रि के पर्व पर प्रकृति में समस्त देवी, देवता, यक्ष, किन्नर, गंधर्व, ऋषि-मुनि, उच्चकोटि के साधकगण हर क्षण उल्लास, उमंग और मस्ती में प्रत्येक घड़ी का उपयोग कर उच्चकोटि की साधनाओं में लीन रहते हैं और शक्ति स्वरूपा दुर्गा के सान्निध्य में स्वयं को ऊर्जावान, चैतन्य और शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए चेष्टारत रहते हैं।

इन चैतन्य दिनों को **'शक्ति समागम पर्व'** की संज्ञा दी जा सकती है, क्योंकि इन दिनों शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो, जो शक्ति की आराधना से वंचित रहता हो। यह पर्व तो साधकों के लिए शक्तिपर्व ही कहा जा सकता है, क्योंकि शक्तिमान होने के लिए शक्ति की उपासना ही प्रमुख है। इन्हीं दिनों शक्ति स्वरूपिणी दुर्गा अपने पूर्ण शक्तिमय स्वरूप में विचरण करती हैं।

साधक क्षण-क्षण का उपयोग कर अध्यात्म की उच्चस्थिति को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं तथा अपने जीवन को इन दिनों में समस्त आनन्द रसों से ओतप्रोत कर देना चाहते हैं। ऐसे चेतनामय क्षणों में साधक भगवती के सान्निध्य में स्वयं को अर्पित कर उनसे वह इच्छित प्राप्त कर लेना चाहता है, जिन को वह साधारणतः प्राप्त नहीं कर पाता।

भगवती अपने आराधक को वह सब कुछ प्रदान कर देती हैं, जो उसके हित में होता है, जिनसे वह जीवन के उच्च सोपानों को प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक शिष्य और साधक हर बाधा को पार करने के लिए भगवती की कृपा पाना चाहता है और इन दिनों के पूर्ण सत्व को ग्रहण करना चाहता है।

इन दिनों में तो पूरा ब्रह्माण्ड ही भगवती की कृपा से आच्छादित रहता है। उनकी इस कृपा को हम पूर्ण रूप से ग्रहण कर सकते हैं इन 18 प्रयोगों को सम्पन्न कर, क्योंकि इन्हें लगभग समस्त ऋषियों ने ही सम्पन्न किया है। इन्हें आप नवरात्रि के दिनों में किसी भी समय सम्पन्न कर सकते हैं। ये सारे प्रयोग जीवन में शक्ति प्राप्ति से सम्बन्धित हैं तथा नवरात्रि के नौ दिन **'शक्ति तत्व'** से परिपूर्ण हैं।

1. प्रकीर्तिता - तनाव मुक्ति हेतु

यदि साधक किसी बाह्य तनाव के कारण से दुःखी हैं, तो वे **'प्रकीर्तिता'** के सामने 5 पीपल के पत्तों पर दूध से बनी मिठाई रखें तथा प्रकीर्तिता को अपलक निहारते हुए 15 मिनट तक निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

॥ॐ क्लीं ह्रीं क्लीं ह्रीं फट्॥

प्रयोग समाप्त होने पर उसी दिन मिठाई गाय को खिला दें तथा प्रकीर्तिता को नदी में प्रवाहित कर दें। तनाव समाप्त होगा।

न्यौछावर - 65/-

2. तुलजा - मानसिक एकाग्रता एवं शक्ति हेतु

यदि आप मानसिक शक्ति से सम्पन्न होना चाहते हैं, तो **'तुलजा'** को हाथ में लेकर निम्न मंत्र का 51 बार पूर्ण मानसिक एकाग्रता के साथ जप करें -

मंत्र

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ॐ

आप धीरे-धीरे स्वयं को मानसिक रूप से शक्तिशाली अनुभव करेंगे तथा दृढ़ निश्चय की भावना पनपेगी। तुलजा को 21 दिन बाद किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौछावर - 80/-

3. शुभांश - इष्ट दर्शन हेतु

आप अपने इष्ट का दर्शन करना चाहते हैं, तो **'शुभांश'** पर लाल रंग के फूल चढ़ाते हुए 101 बार निम्न मंत्र का जप करें। इष्ट दर्शन सम्भव होगा -

मंत्र

ॐ ब्रं ब्रह्माण्डं वै प्रचः ॐ

प्रयोग समाप्त होने पर **'शुभांश'** को किसी नदी में प्रवाहित करना अनिवार्य है।

न्यौछावर - 60/-

4. कुंडिका - रोग मुक्ति हेतु

किसी भी प्रकार के रोग से मुक्ति प्राप्त करने के लिए **'कुंडिका'** पर 51 पीले कनेर के पुष्प चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

मंत्र

॥ॐ रं रोगमुक्तये फट्॥

फिर उसे पुष्पों के साथ ही किसी दुर्गा मंदिर में चढ़ा दें। रोग मुक्ति संभव।

न्यौछावर - 90/-

5. महेधा - शत्रु बाधा निवारण हेतु

यदि आप शुत्र-बाधा से पीड़ित हैं, तो किसी लाल कपड़े पर काली स्याही से शत्रु बाधा का कारण लिखें, उसी कपड़े में **'महेधा'** रख कर बांध लें और रात्रि के समय किसी तिराहे पर डाल दें, बाधा की समाप्ति होगी।

न्यौछावर - 50/-

6. चन्द्रालाम्बा - शत्रु स्तम्भन हेतु

एक प्लेट में ***'क्लीं'*** बीज मंत्र केसर से लिख कर **'चन्द्रालाम्बा'** स्थापित करें। उस के सम्मुख मंत्र का 75 बार उच्चारण करें -

मंत्र

ॐ शं शत्रुदमनाय फट्

इसे अगले दिन किसी निर्जन स्थान पर फेंक दें। आपके विरोधी आपके मनोनुकूल हो जायेंगे।

न्यौछावर - 70/-

7. हिंगल - ग्रह बाधा निवारण हेतु

अगर आप ग्रह बाधा से ग्रसित हैं, तो आप एक मिट्टी के पात्र में **'हिंगल'** के साथ 7 नमक की डली और 5 काली मिर्च के दाने रखें, फिर निम्न मंत्र का 60 बार उच्चारण करें -

मंत्र

॥ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ॥

पात्र का मुंह किसी लाल रंग के कपड़े से बांध कर नदी में प्रवाहित कर दें। ग्रहों के कारण आ रही बाधा का निवारण होगा।

न्यौछावर - 125/-

8. पूषण - मनोकामना हेतु

किसी चौकी पर पीला कपड़ा बिछावें, उस पर जौ की 5 ढेरियां बनावें, प्रत्येक ढेरी पर एक-एक **'पूषण'** रखें। क्रमशः एक-एक ढेरी पर दोनों हाथ रखकर 21 बार निम्न मंत्रोच्चारण करें -

मंत्र

ॐ श्रीं श्रीं सर्व कामनायै श्रीं श्रीं नमः

पूषण और जौ उसी कपड़े में बांधकर किसी दान लेने वाले ब्राह्मण को देते समय मनोकामना मन ही मन बोलें। मनोकामना शीघ्र पूर्ण होगी।

न्यौछावर (प्रति पूषण) - 30/-

9. अमर्त्या - भाग्योदय हेतु

रात्रि के समय **'अमर्त्या'** को बायें हाथ में रखकर दायें हाथ से ढकें। लगभग 15 मिनट तक निम्न मंत्र जप करें -

मंत्र

ॐ ह्रीं भाग्योदाय ह्रीं नमः

तत्पश्चात् उसी दिन अमर्त्या को किसी सुनसान स्थान पर फेंक देवें। पीछे मुड़कर न देखें, आश्चर्यजनक रूप से भाग्योदय होगा।

न्यौछावर - 70/-

10. जगदण्ड - राजकीय अनुकूलता हेतु

पूर्ण मंत्र चैतन्य **'जगदण्ड'** को अपने पूजा कक्ष में स्थापित कर लें। उसके सामने 101 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

मंत्र

ॐ क्लीं कार्यसिद्धये क्लीं नमः

अष्टमी के दिन नदी में जगदण्ड विसर्जित कर दें। राजकीय कार्य में रत व्यक्तियों की आश्चर्यजनक रूप से प्रगति होगी।

न्यौछावर - 95/-

11. विधात्री - गृहस्थ जीवन में अनुकूलता हेतु

ब्रह्म मुहूर्त में जमीन पर कुंकुम से त्रिभुज बनायें, त्रिभुज में **'विधात्री'** स्थापित कर दें। 61 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

मंत्र

ॐ क्लेशनाशाय क्लीं नमः

फिर प्रातः काल ही इसे नदी में प्रवाहित कर दें। ऐसा करने से यदि पति-पत्नी के बीच तनाव हो, तो वह समाप्त होता है।

न्यौछावर - 105/-

12. लौहित्य - अकाल मृत्यु बाधा निवारण

'लौहित्य' के सामने हल्दी से रंगे चावलों का एक-एक दाना 51 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ायें -

मंत्र

॥ॐ क्रीं क्लीं फट्॥

लौहित्य और चावलों को किसी निर्जन स्थान पर डाल दें। अकाल मृत्यु-भय समाप्त होगा।

न्यौछावर - 50/-

13. महेशिन्दु - तंत्र प्रयोग से मुक्ति

रात्रि के समय निम्न मंत्र का 71 बार उच्चारण करते हुए काली मिर्च से हवन करें -

मंत्र

ॐ क्रीं व्यापार वृद्धये क्रीं फट्

आखिरी आहुति के साथ **'महेशिन्दु'** को भी आहूत कर दें। व्यापार पर यदि तंत्र प्रयोग है, तो समाप्त होगा।

न्यौछावर - 190/-

14. क्षोणीगुज - यश एवं भोग प्राप्ति

बाजोट पर **'क्षोणीगुज'** को स्थापित कर कुंकुम, गुलाल व सात लाल पुष्प चढ़ायें और **'सफेद हकीक माला'** से 11 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

ह्रीं क्षं नमः

जीवन में पूर्ण यश प्रदायक और भोग प्रदायक है यह प्रयोग। माला और क्षोणिगुज को नदी में विसर्जित करें।

न्यौछावर - क्षोणिगुज - 60/-, सफेद हकीक माला - 150/-

15. बिल्वांग - गृहस्थ सुख में वृद्धि

'बिल्वांग' लेकर उसे सिन्दूर से रंग दें और उसके सामने 75 बार निम्न मंत्र का जप करें -

मंत्र

ॐ दुं दुर्गायै दुं नमः

प्रयोग समाप्ति पर बिल्वांग को नदी में विसर्जित कर दें। पूर्ण रूप से गृहस्थ सुख की प्राप्ति होती है।

न्यौछावर - 80/-

16. सौगल - मनोनुकूल विवाह

आप अपनी इच्छानुसार विवाह करना चाहते हैं, मगर ऐसा संभव नहीं हो पा रहा है, तो एक कागज पर लड़का/लड़की जिससे विवाह करने चाहते है उसका नाम लिखकर उस पर **'सौगल'** रखें तथा उसके सामने 21 बार निम्न मंत्रोच्चारण करें, फिर उस पर एक गुलाब का पुष्प चढ़ायें-

मंत्र

ॐ गं गौर्यै मनोरथ सिद्धिं देहि गं नमः

यह क्रम पांच बार करें। प्रयोग समाप्ति पर पुष्प और सौगल को किसी नदी में प्रवाहित कर दें। इच्छित जगह विवाह सम्पन्न होगा।

न्यौछावर - 180/-

17. शुभंकरी - धनागम हेतु

मधु, घृत और शर्करा से निम्न मंत्रोच्चारण के साथ 100 आहुतियां देवें -

मंत्र

ॐ श्रीं ॐ श्रीं ॐ

फिर **'शुभंकरी'** पर कुंकुम लगाकर मंत्र बोलते हुए उससे आहुति दे दें। धनागम सम्भव होगा।

18. शुभंकरी - दैवी कृपा एवं प्रतिष्ठा हेतु

हल्दी, सफेद चन्दन और केसर को आपस में अच्छी तरह मिलायें तथा एक पात्र में **'शुभंकरी'** स्थापित कर उस पर 51 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ायें -

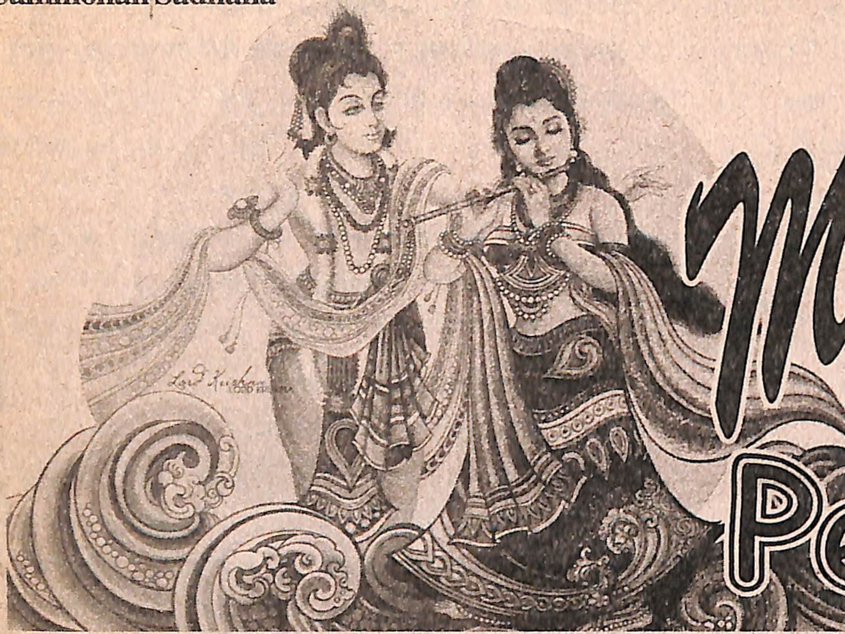
मंत्र

ॐ क्षं ह्रीं क्षं नमः

शुभंकरी को किसी कुंए में डाल दें। दैवी कृपा प्राप्त होती है, जिससे साधक जीवन में समस्त प्रकार से उच्च और प्रतिष्ठित बनता है।

न्यौछावर - 155/-

ये प्रयोग प्रामाणिक और नवरात्रि के दिवसों में इन्हें सम्पन्न करने से सफलता मिलती ही है।



Magnetic Persona

Personality is a strange word. None would debate the point that it is a strong personality that can take one to the highest echelon of success. But what does one mean by a strong personality?

Does it mean being six foot tall? Does it mean being handsome and physically attractive? Or does it mean being rich and affluent? Without doubt beauty, looks and wealth are forces to reckon with but it is also a fact that personality is something more than all these. Mahatma Gandhi was hardly five foot five inches tall and weighed not more than forty five kgs. and yet he had the entire British regime in India on its toes. Napoleon was a pygmy when compared with his generals and yet the authority that he commanded sent shivers through the most brave men.

So it is not necessary to be physically beautiful to possess a strong persona. Lord Krishna was said to be dark complexioned and yet the magnetic attraction that one felt in his presence was something beyond this world.

To succeed in this world it is necessary to possess a magnetic and attractive persona. You might not be born with this virtue but through the power of Mantras you could instil a divinity in yourself that could make others feel overawed in your presence. The divine energy in Mantras could instil a unique confidence and radiance in you making you star of every gathering and the centre of attraction everywhere.

Presented here is a Sadhana based on a very such Mantra that is powerful and unfailing. In fact this Sadhana was devised by Guru Sandeepan and given to Lord Krishna. It was by virtue of this Mantra that Lord Krishna was able to virtually hypnotise and influence everyone who came into his contact. Whatever field you are in, this Sadhana could come in handy for it could fill you with charm and magnetism and endow you with a divine persona that could not just steal young hearts but also overawe all and sundry.

In the night of a Friday after 10 PM. have a bath and wear fresh yellow clothes. Sit facing North on a yellow worship mat. Cover a wooden seat with yellow cloth and on it in a copper plate place a **Sammohan Vashikaran Yantra**. Then worship the Yantra with vermilion, rose petals and rice grains. Light a ghee lamp. There after chant 11 rounds of the following Mantra with **Sammohan rosary**.

Om Sudarshanaay Vidmahe Mahaajwaalaay Dheemahi Tannashchakrah Prachodayaat.

This is a very powerful Sadhana and within three four days its effect would manifest and from the changing attitude of the people around, you could know that the Mantra is working its charm. Repeat this Sadhana for six consecutive Fridays for best results.

Sadhana Articles – 300/-

Dhanada Yakshini Sadhana

Can you imagine life without wealth? Sure the greedy craving for money has been criticised by all ancient texts, but the same texts state that one should have enough to lead a happy contented life. The texts go on to state that poverty is the worst curse and wealth is a boon that makes life happier, comfortable and easier. Earning enough wealth is not suffieient. One should also have the inclination to spend it in a proper manner. If all one's wealth goes waste in useless activities then wealth could prove to be more of a curse than a boon.

Everyone tries his or her best to acquire more and more wealth. But more important than acquiring wealth is making it flow continuously into one's life or giving it a permanence. Our Rishis prescribed that wealth should come from good means otherwise it goes waste in activities like gambling, womanising and drinking. It is easy to take to the wrong path and try to earn as much as one can in a short time but such quickly acquired gains are never permanent.

One should be able to earn in a manner that the work one does also satisfies the soul. One should feel an inner joy. And if you have a feeling of guilt means that you are not getting wealth from the right sourees.

True wealth means being able to get it from a proper source, spend it in a right manner for creative purposes and for beautifying life. If used correctly wealth could make life a paradise and bring to one true joy of living. The very ancient Sadhana of Dhanada Yakshini is a ritual that makes this very thing possible in one's life. The ritual if tried with full faith makes new and righteous sources of wealth open up on their own and also bestows one with wisdom to spend the wealth in the right manner.

This Sadhana must be tried on a **Wednesday**.

Early morning have a bath and wear red clothes. Sit on a red mat facing South. Cover a wooden seat with red cloth. On it place a picture of Sadgurudev and Lord Ganpati. Worship them by offering vermilion, red flowers and rice grains.

On a mound of rice grains in a plate place a ***Rati Priya Dhanada Yantra***. Behind the Yantra or under it place the ***Kamadev Gutika***. Then around the Yantra place ***ten Lakshmi Sayujya Shakti Tantrokt Phals***. Take water in the right palm and speak thus – *I* (speak your name) *am performing this Sadhana for the fulfilment of my wish to have wealth in life and may Gurudev and Lord Ganpati bestow success on me.*

Let the water flow to the floor. Offer rice grains and vermilion on the Yantra and the two Phals. Light a ghee lamp and incense. Then chant one round of Guru Mantra. After this pray to the ten forms of Dhanada Lakshmi chanting thus. While chanting each Mantra offer vermilion and rice grains on a Tantrokt Phal.

Om Lakshmyei Namah, Om Padmaayei Namah, Om Padmaalayaayei Namah, Om Shriyei Namah, Om Hari Priyaayei Namah, Om Taaraayei Namah, Om Kamalaayei Namah, Om Chanchalaayei Namah, Om Abjaayei Namah, Om Lolaayei Namah

Thereafter chant five rounds of this Mantra with a ***Rakta Varnniya rosary***.

Dham Shreem Hreem Rati Priye Swaahaa

Do this daily for twenty one days. After the Sadhana drop the Tantrokt Phals, Yantra and rosary in a river or pond. This is a Sadhana that could bring about a wonderful transformation in your life and make you rich and prosperous beyond your imagination provided that it is done with full faith and devotion.

Sadhana articles – 360/-

प्रत्येक साधना निःशुल्क

गुरुधाम जोधपुर

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि

पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग

समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारंभ हुई है। इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर जोधपुर 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम **6** से **8** बजे के बीच सम्पन्न होती हैं। यदि श्रद्धा व विश्वास हो, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

शनिवार, 20-03-10 **अपराजिता साधना**

मन की दुर्बलताओं के कारण ही व्यक्ति आज इतना अधिक परेशान हो गया है। मन में दृढ़ता न होने के कारण ही व्यक्ति किसी भी संकल्प को ले तो लेता है परन्तु बीच में ही घबरा जाता है, यदि वह मन से बली है तो परिस्थितियों को झुकाकर ही दम लेता है और विजय हासिल करके रहता है। स्वभाव में क्रोध, चिड़चिड़ापन, खीझ, निराशा, भय, असहायपन, लक्ष्यहीनता, उच्चाटन - ये सब मन की निर्बलता ही हैं। हर कार्य आप पर हावी हो जाता है, घर के वातावरण एवं कार्यालय की बातों से आपको तनाव हो जाता है। जीवन में भौतिक रूप से उतार-चढ़ाव आते ही हैं, उथल-पुथल होती ही है, लड़ाई-झगड़े होते ही हैं, लाभ-हानि होती ही है, अमीरी-गरीबी होती है, परन्तु मनुष्य वही है, जो हर स्थिति में सम रहे, प्रसन्न रह सके, आनन्दित रह सके और इसके लिए आवश्यक है, कि वह मनश्चेतना के स्तर पर काफी ऊपर उठा हुआ व्यक्ति हो तभी वह जीवन का आनन्द प्राप्त कर सकता है, अन्यथा सकल सम्पदा होते हुए भी सब व्यर्थ है। मन को पूर्ण चैतन्यता दृढ़ता और अडिगता प्रदान करने की ही यह साधना है, जो आज के युग में प्रत्येक व्यवसायी के लिए अनिवार्य ही है।

रविवार, 21-03-10 **स्वर्णावती अप्सरा साधना**

जिस प्रकार अन्य साधनाएं महत्वपूर्ण हैं, उसी प्रकार साधक के जीवन में सौन्दर्य साधनाओं का भी विशेष महत्व है, क्योंकि जिस मनुष्य में रस नहीं है, प्रेम नहीं है वह अन्य किसी साधना में भी सफल नहीं हो सकता है। इस आपाधापी, तनाव, हताशा, निराशा आदि से भरे हुए युग में व्यक्ति प्रेम और कोमलता को भूल सा गया है....जबकि प्रेम तो जीवन का आवश्यक अंग है....जो प्रेम करना नहीं जानता, वह ईश्वरत्व को भी प्राप्त नहीं कर सकता....और विशुद्ध प्रेम साकार होता है अप्सरा साधना के माध्यम से....स्वर्णावती अप्सरा साधक के जीवन में एक नयी उमंग और यौवन के समान कोमलता ले आती है जिससे कि वह हमेशा ही प्रसन्नतामय दिखता है। आप सभी एक बार इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करें।

सोमवार, 22-03-10 **तीव्र बटुक भैरव प्रयोग**

भैरव को भगवान शिव का ही एक रूप माना गया है। बावन भैरवों में बटुक की साधना सर्वाधिक फलदायी मानी गई है - 1. मुकदमे में विजय प्राप्ति के लिए, 2. पूर्ण पौरुष प्राप्ति के लिए, 3. किसी भी प्रकार की बाधा जैसे राज्य बाधा, प्रमोशन अथवा ट्रांसफर में आ रही बाधा की निवृत्ति हेतु, 4. किसी प्रकार के तांत्रिक प्रयोग या बाधा को समाप्त करने हेतु, 5. शत्रुओं को निष्प्रभावी करने हेतु।

इसके अलावा बटुक भैरव निरन्तर एक रक्षक की भांति साधक की हर आसन्न संकट से रक्षा भी करते रहते हैं, जिसका कि साधक को आभास तक नहीं होता और इस प्रकार यह **'अकाल मृत्यु निवारण प्रयोग'** भी है।

इन तीनों दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

1. आप अपने किन्हीं दो मित्रों अथवा स्वजनों को (जो पत्रिका के सदस्य नहीं हैं) मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका का वार्षिक सदस्य बनाकर जोधपुर, गुरुधाम में सम्पन्न होने वाले किसी एक प्रयोग में भाग ले सकते हैं। पत्रिका की एक सदस्यता का वार्षिक शुल्क रुपये 303/- है, जबकि आपको दो सदस्यों का शुल्क मात्र रुपये 570/- ही जमा करवाना है। प्रयोग से सम्बन्धित विशेष मंत्रसिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित सामग्री (यंत्र गुटिका, आदि) आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

2. यदि आप पत्रिका-सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए पत्रिका की वार्षिक सदस्यता प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

3. पत्रिका-सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार को ऋषि-परम्परा की इस पावन साधनात्मक ज्ञान-धारा से जोड़कर एक पुनीत एवं पुण्यदायी कार्य करते हैं। यदि आपके प्रयास से एक परिवार में अथवा कुछ प्राणियों में ईश्वरीय चिन्तन, साधनात्मक चिंतन आ पाता है तो यह आपके जीवन की सफलता का ही प्रतीक है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क हैं और गुरु-कृपा द्वारा ही वरदान स्वरूप साधक को प्राप्त होते हैं। प्रयोगों की न्यौछावर-राशि को अर्थ के तराजू में नहीं तोल सकते।

गुरुधाम में दीक्षा व साधना का महत्व

शास्त्रों में वर्णन आता है कि मंदिर में मंत्र-जप किया जाए तो अति उत्तम होता है, उससे भी अधिक पुण्यदायी होता है; यदि नदी के किनारे करें, उससे भी अधिक समुद्र तट, और उससे भी अधिक पर्वत में करें तो; और पर्वत में भी यदि हिमालय में किया जाए तो और भी कई गुना श्रेष्ठ होता है। इन सबसे भी श्रेष्ठ होता है, यदि साधक गुरु चरणों में बैठकर साधना सम्पन्न करें; और यदि गुरुदेव अपने आश्रम; अर्थात् गुरुधाम में ही यह साधना प्रदान करें तो इससे बड़ा सौभाग्य तो और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहां दिव्य शक्तियों का वास सदैव रहता ही है। जो सद्गुरु होते हैं, वे सूक्ष्म रूप से अथवा सशरीर, प्रतिपल अपने धाम में अवस्थित रहते हुए प्रत्येक गतिविधि का सूक्ष्म रूप से संचालन करते ही रहते हैं। इसलिए यदि शिष्य गुरुधाम में पहुंच कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु-चरणों का स्पर्श कर उनकी आज्ञा से साधना प्रारम्भ करता है तो उसके सौभाग्य से देवगण भी ईर्ष्या करते हैं।

तीर्थ-स्थल पुण्यप्रद हैं, पर शिष्य अथवा साधक के लिए सभी तीर्थों से भी पावन तीर्थ गुरुधाम होता है। जिस धाम में सद्गुरुदेव का निवास स्थान रहा हो, ऐसे दिव्य स्थान पर गुरु-चरणों में उपस्थित होकर गुरु-मुख से मंत्र प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्पन्न होती है, जब उसके सत्कर्म जाग्रत होते हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए साधकों के लाभार्थ गुरुदेव की व्यस्तता के बावजूद भी जोधपुर गुरुधाम में तीन दिवसों में तीन साधनात्मक प्रयोगों की श्रृंखला निर्धारित की गई है।

योजना केवल इन **3** दिनों के लिये **20-21-22 मार्च 2010**

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका सदस्यता शुल्क 300x5=Rs.1500/- जमा करा के या उपरोक्त राशि का बैंक डाफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपहार स्वरूप ये दीक्षा आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो द्वारा प्राप्त करना चाहें तो निर्धारित तिथियों के पूर्व ही अपना फोटो एवं पांच सदस्यों की सदस्यता शुल्क की राशि का ड्राफ्ट मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर जोधपुर कार्यालय के पते पर भेजें। आपका फोटो, पांच सदस्यों के नाम, पते एवं ड्राफ्ट हमें उपरोक्त तिथि से पूर्व ही प्राप्त हो जाने चाहिए। पत्र विलम्ब से मिलने पर दीक्षा संभव न हो सकेगी। यदि राशि मनीऑर्डर से भेजना चाहें तो फोटो एवं मनीऑर्डर जोधपुर कार्यालय भेजें।

शक्तिपात युक्त दीक्षा

सम्मोहन आकर्षण दीक्षा

किसी भी व्यक्ति का चेहरा उसके व्यक्तित्व का दर्पण होता है। यदि आपके मुख पर तेजस्विता है, आकर्षण है, तो स्वतः सामने वाला व्यक्ति आपसे प्रभावित होगा ही। शरीर यदि दुर्बल भी हो, परंतु यदि मुख पर आभा है, आकर्षण है तो कोई भी आपसे बात करने को लालायित होता है। सम्मोहन आकर्षण दीक्षा द्वारा जहां स्त्रियों के सौन्दर्य में विशेष निखार आने लगता है, काया कंचन हो जाती है, वहीं पुरुषों के मुखमण्डल पर तेजस्विता और रौब आ जाता है। बड़े-बड़े नेताओं, अफसरों, सुन्दरियों में यह गुण प्राकृतिक रूप से व्याप्त होता है। यदि आप व्यापारी या कर्मचारी हैं और सामने वाले से अपनी बात मनवाना चाहते हैं या आप इण्टरव्यू में या अफसर के सामने घबराते हैं, तो इस दीक्षा के माध्यम से स्वयं अपने चेहरे पर आकर्षण और सम्मोहन ला सकते हैं। ऐसे व्यक्ति को हर किसी से अनुकूलता ही प्राप्त होती है, इसके साथ ही आपके व्यक्तित्व में निखार आता है, और सौन्दर्य प्राप्त होता है।

* दीक्षा आज के युग में एक प्रामाणिक उपाय है सफलता की ऊंचाईयों को प्राप्त कर लेने का, जीवन के अभाव को, अधूरेपन को दूर कर देने का, जीवन में अतुलनीय बल, साहस, पौरुष एवं शौर्य प्राप्त कर लेने का, साधना में सिद्धि प्राप्त कर लेने का ...।
* गुरु-प्रदत्त शक्तिपात द्वारा शिष्य जिस कार्य हेतु जो दीक्षा प्राप्त करता है, उसमें निपुणता प्राप्त कर लेता है, क्योंकि वह सफलता और श्रेष्ठता प्राप्त करने का एक लघु उपाय है . . .
* दीक्षा में भाग लेने वाले साधकों को जल से अमृत-अभिषेक करने के उपरान्त विशेष शक्तिपात प्रदान किया जाएगा। यह दीक्षा इन तीनों दिवसों में सांय ७ बजे प्रदान की जाएगी।

सम्पर्क - मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर, फोन-0291-2432209, 2433623 टेलीफैक्स-0291-2432010

नि:शुल्क उपहार

सम्मोहन वशीकरण माला

- क्या ही अच्छा हो, यदि सामने वाला व्यक्ति वही करे जैसा आप चाहते हों!
- क्या ही अच्छा हो, कि आपका बॉस आपके ऊपर हावी न हो!
- क्या ही अच्छा हो, कि आपके स्वजन, मित्र, पड़ौसी, सभी आपका कहना मानते हों!
- क्या ही अच्छा हो, कि घर में सभी आपका कहना मानते हों!
- क्या ही अच्छा हो, कि जिसे आप चाहें वह आपके वशीभूत हो जाए।

... यह सब इस माला द्वारा सम्भव है, जिसे प्राप्त करना ही सौभाग्य है।

धारण विधि - किसी भी अमावस्या से इस माला से *'ॐ ह्रीं जगत् सम्मोहन करि सिद्धे वशंकरी ॐ फट् स्वाहा'* मंत्र की 1 माला नित्य रात्रि में सोने से पूर्व जप करना है। ऐसा दो माह तक करें। इसके बाद जब किसी पर प्रयोग करना हो, तो यह माला पहन कर उसके समक्ष जाएं, और मन में मंत्र का जप करते रहें, उस पर माला द्वारा सम्मोहन प्रभाव अवश्य पड़ेगा।

जीवन का सर्वश्रेष्ठदान-'ज्ञानदान'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, मंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे वंचित हैं। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

क्या करें आप?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पोस्टकार्ड क्रमांक 3) भेज दें, कि "मैं यह अद्वितीय उपहार प्राप्त करना चाहता हूं एवं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूं। आप नि:शुल्क मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित **'सम्मोहन वशीकरण माला'** 492/-(20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 402/-+ डाक व्यय 90/-) को वी. पी. पी. से भिजवा दें, वी. पी. पी. आने पर मैं पोस्टमैन को धन राशि देकर छुड़ा लूंगा। वी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें", आपका पत्र आने पर हम 402/-+ डाक व्यय 90/-=492/- की वी. पी. पी. से मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठित **'सम्मोहन वशीकरण माला'** भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

-: सम्पर्क :-

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर - 342001, (राजस्थान)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 टेलीफैक्स - 0291 - 2432010

11-12 फरवरी 2010

महाशिवरात्रि साधना शिविर, अमरकंटक

शिविर स्थल: नर्मदा उद्गम स्थल, हैलीपेड ग्राउण्ड, अमरकंटक, जिला-अनूपपुर (म.प्र.)

आयोजकः राजनगरः के.के.चन्द्रा - 093031-27059 ○ बल्लभदास बहेती - 093294-75321 ○रविशंकर तिवारी - 094258-98233 ○ए.एन.यादव - 093003-17266 ○रामकुमार देवांगन - 093002-75805 ○सत्यनारायण यादव - 093018-83624 ○नकुल तिवारी - 094258-98232 ○देवेन्द्र यादव - 094254-73225 ○एम.एल.चौरे - 093298-82918 ○शंकर कश्यप - 093000-41888 ○**बिजुरीः** बी.के.गोस्वामी - 093015-62848 ○राजमान सिंह - 07658-264921 ○रमेश अग्रवाल - 093294-15543 ○अशोक वर्मा - 093031-36183 ○मनीष गोयनका - 093103-92400 ○ रामसिंह चंदेल - 094061-59379 ○रामनरेश गौतम - 093294-10804 ○के.एल. पाटिल - 093297-39495 ○ जे.एन.सिंह ○ एस.बी. यादव - 098278-95348 ○मलय कुमार साहा - 093294-53491 ○रामभान यादव - 093031-36183 ○ सी.पी.श्रीवास्तव - 093298-2893 ○**खोंगापानीः** मंगलू धींवर - 094061-32040 ○राममूरत सिंह - 094255-85936 ○जोगिंदर प्रसाद ○राम प्रसाद नारंग - 093291-80854 ○सुंदर लाल - 094063-46694 ○जोगिंदर सिंह - 094242-53170 ○**मनेन्द्रगढः** सुरेश अग्रवाल - 094252-55043 ○प्रदीप अग्रवाल - 093294-03738 ○रामकिशन सोनी - 099775-10888 ○सूरजभान सिंह - 093294-17356 ○मंजीत सिंह - 09300-31564 ○विकेश श्रीवास्तव - 093013-60325 ○**पेण्ड्राः** एस.डी. नामदेव - 094252-26189 ○शंकर मुदलियार - 094252-26204 ○**रायपुरः** के.के.तिवारी - 098279-55731 ○बबला उपाध्याय - 094255-73575 ○**बिलासपुरः** आर.आर. साहू - 094241-60873 ○एस. आर.शिंदे - 093003-12599 ○**जमुना कोतमाः** संजीव कुमार शर्मा - 098939-47754 ○रमेश राठौर - 099934-61195 ○अवधेश खरे - 098938-23196 ○के.के.शर्मा - 098934-34179 ○रामदास केसरी - 097529-74410 ○करण लाल चक्रवर्ती - 098933-50924○ रामराज बिंद - 099937-71801 ○नरेश शर्मा - 098937-98444 ○**अनूपपुरः** विजय पटेल - 098939-58847 ○दिलहरण वस्त्रकार - 099934-91309 ○**शहडोलः** कौशिक श्रीवास्तव - 094251-83471 ○उमाकांत वर्मा - 093298-43290 ○महेन्द्र वर्मा - 098277-85779 ○**रसमोहनीः** कमलेश बडेरिया - 0765-22752412 ○प्रेम कुमार गुप्ता - 097557-31940 ○**पालीः** अशोक तिवारी - 094258-39743 ○गिरिजा शंकर यादव - 092016-71339 ○**चंदिया/उमरियाः** ए.पी.सिंह - 094254-72557 ○विनोद वर्मा - 094251-8267 ○विनोद कर्ण - 099265-20226 ○आनंद श्रीवास्तव - 094257-54670 ○अशोक वर्मा - 094247-76047 ○**मण्डला/डिण्डोरीः** सी.एम.सिंह - 094246-31556 ○ राजेन्द्र उपाध्याय - 094243-84493 ○दिनेश ठाकुर - 094246-76257 ○अनिल उइके - 07644-232299 ○**कटनी/बरहीः** एस.पी.सिंह - 091792-04555 ○विनोद सिंह - 07622-238211 ○डॉ. छत्रपाल सिंह - 099072-31301 ○दुलारे सिंह - 093006-55352 ○पुष्पेन्द्र सिंह - 097554-88366 ○रामअवतार ताम्रकार - 098934-43219 ○छोटेलाल वर्मन ○खज्जू केवट ○**मैहरः** बी.बी.सिंह - 094246-76326 ○विरेन्द्र मैनी - 093005-11716 ○शिवचरण - 092295-73185 ○राकेश शुक्ला - 093265-82108 ○वी.के.चौहान - 099771-99457 ○सुशील विश्वकर्मा - 098276-28085 ○राकेश श्रीवास्तव - 093295-11849 ○अजय उर्मलिया - 093000-78994 ○**रीवाः** शिवेन्द्र सिंह - 098292-31000 ○संतोष वर्मा - 094243-54272 ○अनिरूद्ध मिश्रा - 098722-49932 ○एस.के.मिश्रा - 094243-43858 ○संजय शर्मा - 097554-28776 ○डॉ. अनीता सिंह - 093297-16038 ○एस.एस. सिंह ○**बेलाः** राजबहादुर - 097547-30627 ○अनूप शुक्ला - 098932-08655 ○फूलचन्द गुप्ता - 092298-4452 ○**सतनाः** ए.पी.मिश्रा - 094258-24199 ○पियूष श्रीवास्तव - 098272-41434 ○**पन्ना/महेवाः** सुनील खरे - 090984-12492 ○डॉ. अमृत राजे - 099938-45120 ○संतोष सिंह - 099775-64181 ○राजेश खरे - 097523-7396 ○**गुनौरः** महावीर चौबे - 099934-30764 ○संतोष तिवारी - 099773-48208 ○**चित्रकूटः** श्रीमती गायत्री तिवारी - 099194-34342 ○जगबली सिंह - 094502-21001 ○विश्वम्भर सोनी - 094503-70469 ○औरय्याः गोकरण सिंह - 094127-05845 ○**अंबिकापुरः** जसबीर सिंह - 098261-93522 ○वर्माजी - 095242-61643 ○अनिल ताम्रकार - 098266-02436 ○मुरलीधर पाण्डे - 094063-38203 ○कृष्णप्रसाद गोस्वामी - 094064-52025 ○राजकुमार यादव - 099261-38808 ○**शाहजहांपुरः** प्रमोद मिश्रा - 094504-19596 ○रामबाबु सक्सेना - 092081-78719 ○**सीधीः** गजेन्द्र सिंह - 098937-14947 ○डॉ. रमेश दीक्षित - 097554-48369 ○सी.एम.पाण्डे - 092294-64836 ○

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

27-28 फरवरी 2010

होली महोत्सव, जोधपुर

शिविर स्थल : डॉ. श्रीमाली मार्ग, 1 हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर, राज., फ़ोन: 0291-2433623/2432209

परमपूज्य गुरुदेव डॉ.नारायण दत्त श्रीमाली जी की कृपा तले एव्म् वन्दनीय माता भगवती के चरणारविन्दों तले जोधपुर की दिव्यतम भूमि में आप सभी गुरु भाई बहनों को प्यार भरा आंमत्रण, हम तो केवल अपने हृदय के भावों के द्वारा आपसे निवदेन कर सकते है। आप सभी संद्गुरुदेव के आत्म अंश है। आप अवश्य ही आएंगे। **- समस्त जोधपुर स्टॉफ**

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

7 मार्च 2010

नवग्रह शांति साधना शिविर, मुम्बई

शिविर स्थल: रेल्वे वेलफेयर हॉल, मध्य रेल्वे वर्कशॉप, अम्बेडकर रोड़, वी.आई.पी. शोरूम के सामने, परेल (ईस्ट), मुम्बई

आयोजकः दिलीप शर्मा - 098678-38683 ○तुलसी महतो - 099671-63865 ○पियुष एवं मानवेन्द्र - 093217-88314 ○जयश्री एवं राकेश सोलंकी ○सक्सेना परिवार ○एस.सी.कालरा ○देवेन्द्र एवं अलका पंचाल ○योगेश मिश्रा ○राकेश तिवारी ○बुद्धीराम पाण्डेय ○अमरजीत ○राहुल पाण्डेय ○दीपक तिवारी ○नागसेन ○अजय ○संतलाल पाल ○श्रीराम एवं रमैया ○भासकरन परिवार ○लोबो जी ○अनिल कुंभाटे ○द्विवेदी जी ○सूर्यकांत गुप्ता ○अनिता एवं हंसराज भारद्वाज ○राजकुमार शर्मा ○प्रीतम भारद्वाज ○पुष्पा गोपाल पाण्डेय ○गोपाल पाण्डेय ○कवटे परिवार ○जगदीश पारेख ○मूलचंद जी ○जगदीश भाई ○नटु भाई ○अनिल भंगेरा ○गंगा बेन एवं धनराज ○दयालकर परिवार ○सुशीला बेन एवं परिवार ○धनाजी ○विश्वकर्मा परिवार ○धनाजी ○गुरमीत ○सुजीत ○वृंदावन ○हरे कृष्णा पांडा ○वसंत पुरबिया ○जितेन्द्र ○विलास ○आनंद ○यशवंत ○पाठक परिवार ○राजकुमार मिश्रा ○निशा एवं वंदना बेन ○सुधीर सेठिया ○सुनील भाई ○मंगला एवं एस.एम. चित्ते ○हंसल सागिया ○विरेन्द्र जी ○संतोष तिवारी ○अनुज तिवारी ○सतीश भाई ○तनुज महाशब्दे ○संजीव झा ○रवि साहू ○एस.के. यादव ○विकरांत ○विकास भारद्वाज ○वंदना जी ○लमबेर सिंह एवं परिवार ○पंकज बगुल ○सुनैना ○योगेन्द्र शर्मा ○ध्रुव्र एवं परिवार ○राहुल पाण्डेय ○चंद्रकांत डांडे ○सी. मिश्रा ○शैलेश भाई ○आर.एस. उपाध्याय ○दिनेश भाई ○अशोक ○करिसा बेन ○कलपेश तिवारी ○जैसवाल जी ○जांगले जी ○धुरा परमार ○गोपाल पंडया ○परेश शाह ○अरिवन्द अरोड़ा ○चितरंजन दूबे ○धरणीधर दूबे ○प्रमोद दूबे ○दयालाल जी ○भावेश लाल ○डॉ. शिंदे ○शिव पूजन चौहान ○शैलेश पटेल ○राजेश यादव ○उत्तम भाई ○संतोष मौर्या ○स्मिता ○विजय गिरकट ○संदीप भाई ○जयंत मेहता ○जयेन्द्र मेवाड़ा ○जय भाई ○मांजरेकर बेन ○छाया बेन ○गोपाल अग्रवाल ○राकेश भाई ○रिभुनाथ मिश्रा ○गुडा भाई ○नागेश ○अशोक मास्टर ○भोला शंकर सिंह ○दिलीप कांझले ○दिनेश राठौड़ ○डॉ. पोद्दार ○कुलवंत जी ○मनोज भाई ○मोनिका ○

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧

16-17 मार्च 2010

दस महाविद्या साधना शिविर, गोरखपुर

शिविर स्थल: जी.डी.ए ग्राउण्ड,चम्पा देवी पार्क के पास, रामगढ़ ताल, पैडलेगंज, गोरखपुर (उ.प्र.)

आयोजकः **गोरखपुरः** रामनारायण पटवा - 090059-38326 ○ आनंद तिवारी - 099363-52661 ○हरि नारायण सिंह बिसेन - 094153-18363 ○सुजीत राय - 099567-63778 ○जीतनारायण शुक्ला - 093350-86645 ○राज कुमार राय - 094526-57585 ○ श्रीमती छाया सिंह - 094156-35641 ○अजय राय - 094541-67052 ○मोती चौहान - 099359-08437 ○दुर्गा सिंह - 097949-01349 ○सुशील - 092352-86528 ○विजय मद्धेशिया - 099354-30463 ○पन्नालाल निषाद - 093417-81882 ○दिग्विजय राय - 099363-26205 ○रविशंकर मिश्र - 099567-50969 ○अरविन्द तिवारी - 096515-21454 ○विजय यादव - 098109-87704 ○संजय राय - 094156-55338 ○दुर्गा मौर्य - 094546-18123 ○दिग्विजय नाथ दूबे - 094507-37781 ○राममूरत यादव - 099565-27846 ○ सुरेश श्रीवास्तव - 094158-50928 ○लड्डूलाल यादव - 098385-78472 ○डॉ. एम. के. तिवारी - 098916-04043 ○राजदेव शर्मा -

094533-10437 ○विरेन्द्र शाही - 099368-58949 ○ नित्यानन्द मिश्र - 099567-50969 ○श्रीकृष्ण यादव - 096958-20122 ○ राममनोहर त्रिपाठी - 099366-68250 ○दिलीप तिवारी - 097930-97797 ○परशुराम यादव - 096216-48927 ○आलोक तिवारी - 098180-77732 ○सलिलेश त्रिपाठी - 092122-28473 ○ओम प्रकाश शाही - 099355-43929 ○चौधरी मोदलवाल - 099365-70355 ○रामजीत यादव - 094523-40955 ○अंजन शाही - 090051-48676 ○संतोष राय - 097952-82435 ○रामकेश - 094550-44014 ○राजेन्द्र तिवारी - 094151-65411 ○दया शंकर तिवारी - 096517-93883 ○अश्वनी राय - 094530-58051 ○मुकेश विश्वकर्मा - 099353-15801 ○रविशंकर यादव - 097942-82436 ○अवधेश प्रताप सिंह - 094509-21634 ○महेन्द्र प्रताप सिंह - 094156-94004 ○नागेन्द्र शर्मा ○सुरेश गुप्ता - 099367-19696 ○राकेश कुमार यादव - 094504-41211 ○शक्ति प्रताप सिंह - 098389-25957 ○राजेश सिंह - 096755-01611 ○लक्ष्मी नारायण यादव - 093369-37214 ○ .योगेश श्रीवास्तव - 099198-55755 ○पंकज कुमार सिंह - 094530-02455 ○अंकुर श्रीवास्तव - 097957-96753 ○**सिद्धाश्रम साधक परिवार - वाराणसी, नेपाल, बिहार, झारखण्ड व छत्तीसगढ़** ○**बस्तीः** दिनेश चन्द्र पाण्डेय - 099185-04677 ○सत्य कुमार अग्रहरी - 098395-52852 ○उदय शंकर पाण्डेय - 099180-92278 ○प्रभाकान्त पाण्डेय - 098898-92007 ○गंगाराम वर्मा ○जैनेन्द्र कुमार सिंह - 099352-76138 ○विद्यासागर - 098384-51433 ○**संतकबीर नगरः**डॉ. चन्द्र प्रकाश - 098382-62775 ○अश्वनी कुमार - 090051-11867 ○आर.पी. पाण्डेय - 096510-02288 ○**फैजाबादः** ईश्वर प्रसाद सिंह - 094503-05453 ○रणविजय सिंह - 094157-19092 ○राघवेन्द्र सिंह - 094524-89525 ○श्रीमती इन्दूमती सिंह ○जय प्रकाश पांडे ○आशीष शंकर मौर्य - 093367-05965 ○**रामनगर/अम्बेडकर नगरः** अच्छेलाल यादव - 094505-32131 ○कैलाश सिंह - 099187-96838 ○इन्द्रजीत सिंह - 094514-23304 ○**देवरियाः** अरविन्द कुमार वर्मा - 097947-58265 ○**आजमगढ़ः** फौजदार सिंह - 094507-31922 ○राजेन्द्र सिंह - 094500-28622 ○जोखन यादव - 094523-41592 ○अभय नारायण सिंह - 094507-37543 ○**लखनऊः** राजबीर सिंह - 098380-87024 ○अजय सिंह - 094159-35788 ○उमेश तिवारी - 098380-01375 ○परशुराम चौरसिया ○**औरैयाः** गोकरण सिंह - 094127-05845 ○**मुम्बईः** श्रीमती पुष्पा गोपाल पाण्डेय - 099607-19101 ○गंगा मद्धेशिया - 098678-84328 ○**मुगलसरायः** सुनील सेठ - 094156-22157 ○शिवकुमार जायसवाल - 099352-61012 ○क्षितिज कान्त केशरी - 094156-22121 ○**पटनाः** डॉ.वी.के.आर्या - 093088-91649 ○**हरिद्वारः** संजय मिश्रा - 093193-72844 ○**रायबरेलीः** मोहल लाल वर्मा - 094157-22805 ○जगदम्बा सिंह - 098383-90535 ○श्रीमती उषा सिंह ○**सुल्तानपुरः** प्रकाश यादव - 094533-42189 ○**इलाहाबादः** ओमप्रकाश पाण्डेय - 090053-07769 ○**शाहजहांपुरः** प्रमोद मिश्रा - 094504-19596 ○रामबाबू सक्सेना - 092081-78719 ○श्रीकृष्ण वर्मा - 0584-2650428 ○एस.पी.वर्मा - 093351-69869 ○**लखीमपुरः** अनिल गुप्ता - 093368-47800 ○सुरेश कश्यप ○रामदेश वर्मा ○**सीतापुरः** रामसिंह राठौर - 094517-67370 ○के.के.निखिल - 099356-59468 ○**बरेलीः** एम.पी.सिंह - 094125-10771 ○श्रीमती कमला मलिक - 097619-84527 ○**वीसलपुरः** श्याम कुमार निखिल - 097617-49450 ○रामकृष्ण वर्मा - 094128-70223 ○रमाकान्त शुक्ला ○**पूरनपुरः** मोहन प्रधान - 094124-51424 ○**किच्छाः** अरविन्द अरोरा - 095686-16494 ○**कायमगंजः** प्रदीप भारद्वाज - 094118-48222 ○सुभाष चन्द्र सैनी ○रतन सिंह ○राजेश कुमार शर्मा ○**अलीगढ़ः** सुशील कुमार - 093190-56354 ○**फरूखाबादः** संतोष कुमार भारद्वाज - 098388-89869 ○**काशीराम नगरः** महावीर सिंह शाक्य - 093364-85503 ○**आगराः** जया बहन जी - 094112-06768 ○**एटाः** अनिल अग्निहोत्री - 094574-40155 ○**मैनपुरीः** नरेन्द्र कुमार तिवारी - 099975-87914 ○**फिरोजाबादः** हरिश भारद्वाज ○**गुड़गांवः** प्रद्युम्न शर्मा - 097553-81329 ○बंश बहादुर यादव (बंशी) - 092127-39115 ○

❖❖ ❖❖ ❖ ❖❖ ❖❖❖ ❖❖ ❖ ❖❖ ❖❖❖

20-21 अप्रैल 2010

निखिल जन्मोत्सव एवं साधना शिविर, पटना

शिविर स्थलः गांधी मैदान, पटना, बिहार

आयोजकः पटनाः डॉ. वी.के. आर्य - 092348-88896 ○वीरेन्द्र महतो - 094310-62935 ○चन्द्रिका प्रसाद - 099310-24019 ○कामता प्रसाद - 098354-46374 ○गणेश कुमार - 098354-23161 ○दीपक कुमार - 099340-81273 ○बालाजी सहाय - 099348-78588 ○महेन्द्र पाल सिंह - 093006-36295 ○राकेश वल्लभ - 098352-00701 ○अशोक कुमार सिंह - 093341-14497 ○रुप नारायण सिंह - 095592-57982 ○नागेश्वर प्रसाद - 098354-03420 ○नवल यादव - 099392-07583 ○राजेश कुमार - 098352-73303 ○नीलिमा

कुमारी - 093040-05308 ❍मुरलीधर प्रसाद - 092348-65952 ❍पुनम देवी - 094308-32818 ❍विजय कुमार सिंह - 094310-49232 ❍शैलेन्द्र कुमार सिंह - 094310-04452 ❍जयप्रकाश लाल - 092346-93734 ❍मधु श्रीवास्तव - 093341-64335 ❍संजय सिंह - 099346-82563 ❍अनिल कुमार सिंह - 096574-85882 ❍राधामोहन - 093345-58265 ❍रामचन्द्र पंडित - 090977-70971 ❍अर्चना कुमारी - 093893-42424 ❍विनय कुमार - 093349-76516 ❍सच्चिदानन्द सिंह - 093043-34340 ❍सृष्टिधर झा - 099346-92387 ❍सुरेन्द्र तिवारी - 098388-61093 ❍आभा रानी - 093342-76628 ❍करुणा देवी ❍प्रमिला सिन्हा - 092790-06463 ❍केदार प्रसाद - 093342-49394 ❍कुन्दन कुमार - 099319-18143 ❍नीलम देवी - 099550-26024 ❍शशि भूषण प्रसाद सिंह - 099340-81269 ❍मीना कुमारी - 093342-74952 ❍गोविन्द सिंह - 098352-79251 ❍मन्टु प्रजापति - 094314-94525 ❍रंजीत कुमार - 099052-47169 ❍लक्ष्मी नारायण - 092345-62812 ❍दिलीप शर्मा - 099347-78001 ❍अशोक कुमार पाण्डेय - 099399-91651 ❍निर्मल कुमार 'पंकज' ❍सुमन सेनगुप्ता - 093130-04523 ❍**अंतर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, पटना** ❍**खगड़िया:** राम मनोहर प्रसाद ❍डॉ. सी.डी. सिंह ❍डॉ. अशोक कुमार ❍अनिरूद्ध झा ❍मुखिया, मुन्नी देवी ❍दिवाकर मिश्र ❍नीतेश कुमार सिंह ❍शिवनाथ चौधरी ❍महेन्द्र चौधरी ❍विजय कासरी ❍नबोध यादव ❍प्रकाश चौधरी ❍कुशव सिंह ❍वेदानन्द सिंह ❍दिनेश गुप्ता ❍प्राण वल्लभ सिंह ❍अजीत सिंह ❍मनोहर सिंह ❍देवेन्द्र गुप्ता ❍रामानन्द शर्मा ❍विजय राय ❍विरेन्द्र चौधरी ❍शंभू चौधरी ❍आशीष यादव ❍बलराम पंडित ❍राजेश दास ❍अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, खगड़िया ❍**मानसी:** भूषण शर्मा ❍**बेगूसराय:** गिरीश कुमार ❍आशा देवी ❍पप्पु कुमार ❍रतन कुमार 'दिनकर' ❍श्रवण चौधरी ❍भोला सिन्हा ❍वाल्मिकी प्रसाद दास ❍उषा किरण ❍नंदलाल ❍रामशरण दास ❍रोचक सिंह ❍संतोष कुमार ❍शैल कुमारी वर्मा ❍मनोज कुमार ताँति ❍मुकेश कुमार निखिल ❍**फतुहाँ:** रजनीश कुमार ❍अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, फतुहां ❍**मोकामा:** योगेन्द्र - 093081-89682 ❍अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, मोकामा ❍**हाजीपुर:** अन्तर्राष्ट्रीय सिद्धाश्रम साधक परिवार, हाजीपुर ❍**विद्दुपुर:** डॉ. उमाशंकर ❍**कोढ़ा:** नरेश कुमार - 06457-260413 ❍डॉ. ललीत अग्रवाल - 093085-53680 ❍**पूर्णियां:** जटा शंकर ❍**शेखपुरा:** संतोष कुमार - 092434-25629 ❍**समस्तीपुर:** शैलेन्द्र दास - 099399-89400 ❍आनन्द गौतम - 099318-65289 ❍**दरभंगा:** प्रभाश कुमार वर्मा - 094316-91440 ❍**गया:** डॉ. उमाशंकर - 094312-24256 ❍**बिहार शरीफ:** विपीन कुमार - 099346-16523 ❍**छपरा:** धनंजय कुमार - 094313-56415 ❍**सुपौल:** श्रीप्रसाद विश्वास - 094310-68425 ❍**बक्सर:** अमरेन्द्र कुमार सिंह - 091621-55183 ❍**लगनियां (मधुबनी):** अरूण सिंह - 099310-41192 ❍**रुन्नी सैदपुर:** हरिकिशोर मंडल - 094312-75415 ❍**शिवहर:** प्रमोद कुमार गुप्ता ❍**मुजफरपुर:** प्रवेश कुमार श्रीवास्तव - 097717-18333 ❍प्रियरंजन राज - 095762-76599 ❍अनीता श्रीवास्तव - 094718-84878 ❍सुरेश कुमार दिवाकर - 093343-03554 ❍सुरेश चौधरी ❍**रांची:** बालमुकुन्द साह देव - 094315-88358 ❍मोहन शर्मा - 094311-75892 ❍इन्द्रजीत राय - 097981-42521 ❍**बुन्दु:** डॉ. राजेन्द्र कुमार हाजरा - 099055-52281 ❍**गुमला:** विरबल भगत ❍**फुसरो:** भगवान दास - 099341-17533 ❍**बोकारो:** पी.एन.पाण्डे - 094311-27345 ❍ए.के.सिंह - 094703-56313 ❍विजय कुमार झा - 094313-79234 ❍दिलीप कुमार सिन्हा - 090317-12191 ❍**धनबाद:** यु.पी.सिंह - 097085-18798 ❍अरुण सिंह - 094317-31522 ❍**टाटानगर:** वाई.एम. मूर्ति - 093047-90006 ❍**घाटशिला:** बी.एन.पाठक ❍**हंटरगंज:** विकास कुमार सिन्हा - 094709-66147 ❍**कतरास:** जे.पी.सिंह - 092347-94944 ❍**सीजुआ:** आर.के.राय - 094319-54268 ❍**नागपुर:** राजेन्द्र सिंह सिंगर - 098230-19750 ❍बासुदेव ठाकरे - 094209-22749 ❍**छत्तीसगढ़:** के.के. तिवारी - 098279-55731 ❍**लखनऊ:** अजय कुमार सिंह - 094159-35788 ❍**कानपुर:** डॉ. नलिनी शुक्ला - 093361-07234 ❍

❖❖ ❖❖ ❖ ❖❖ ❖❖❖ ❖❖ ❖ ❖❖ ❖❖❖

25 अप्रैल 2010

श्रीयंत्र साधना शिविर, वलसाड

शिविर स्थल: राजपूत समाज हॉल, कस्तूरबा अस्पताल के पास, वलसाड, गुजरात

आयोजक: देवेन्द्र पंचाल - 099988-74612/093762-25004 ❍जयेश पंचाला - 094274-79275 ❍शंकर भाई - 099781-96517 ❍जया बेन भंडारी - 099748-63338 ❍सुमन भाई भंडारी - 098241-97278 ❍गोपाल पांडे - 098920-15494 ❍डॉ. चौधरी - 098927-61967 ❍ए.के.झा - 093717-20968 ❍विनोद सिंह - 093231-74363 ❍अखिलेश सिंह - 097235-50835 ❍संजय शर्मा - 098241-31909 ❍पी.जे.पटेल - 098247-33420 ❍चंद्रप्रभा कापडी - 098247-34230 ❍जगदीश भाई - 098980-57455 ❍

८. विं - यह **सम्मान, प्रसिद्धि, उच्चता, श्रेष्ठता और सफलता का बीज मंत्र** है।

९. च्चे - यह **सम्पूर्णता का बीज** है। स्वास्थ्य, धन, परिवार, यश, सुख, सौभाग्य, सन्तान, भाग्योदय और सफलता युक्त इसे **बीज राज** कहा गया है।

नवार्ण मंत्र

इस प्रकार प्रत्येक बीज का अध्ययन करने से नवार्ण मंत्र इस प्रकार से बनता है -

॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे॥

शास्त्रों में कहा गया है, कि नवार्ण मंत्र का जप करते समय इसके प्रारम्भ में "ॐ" या प्रणव नहीं लगाना चाहिए।

नवार्ण मंत्र की सिद्धि हेतु नौ दिन में **सवा लाख मंत्र जप** करने से सफलता मिलती है। सवा लाख मंत्र का तात्पर्य, 1250 **मालाएं जप** से सवा लाख मंत्र जप हो जाता है।

इस साधना को किसी भी महीने की त्रयोदशी अथवा नवरात्रि से प्रारम्भ कर अगले नौ दिनों में यह **नर्वाण मंत्र** सिद्ध किया जा सकता है। साधना के प्रथम दिन साधना काल में साधक पीली धोती पहन, उत्तर की ओर मुंह कर, सामने **भगवती महाकाली** का चित्र एवं **नवार्ण यंत्र** स्थापित कर, **काली हकीक माला** से मंत्र जप करें। साधना के समय तेल का दीपक अखण्ड होना चाहिए।

नवार्ण मंत्र विनियोग

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग का उच्चारण करें और जल को सामने रखे हुए पात्र में छोड़ दें -

ॐ अस्य श्री नवार्ण मन्त्रस्य ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र ऋषयः गायत्र्यण्णिनुष्टुप्छन्दांसि, श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वत्यो देवताः ऐं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास

निम्न उच्चारण करते हुए बताये हुए शरीर के अंगों को दाहिने हाथ से स्पर्श करना चाहिए -

ब्रह्मा-विष्णु-रुद्र ऋषिभ्यो नमः।	(सिर)
गायत्र्युष्णिगनुष्टुप छन्देभ्यो नमः।	(मुख)
महाकालीमहालक्ष्मी-महासरस्वती-देवताभ्यो नमः।	(हृदय)
ऐं बीजाय नमः।	(गुह्य)
ह्रीं शक्तये नमः।	(पैर)
क्लीं कीलकाय नमः।	(नाभि)

इसके बाद न्यास सम्पन्न करें।

न्यास

ऐं नमः।	(शिखायां)	***ह्रीं नमः।***	(दक्षिण नेत्रे)
क्लीं नमः।	(वाम नेत्रे)	***चां नमः।***	(दक्षिण कर्णे)
मुं नमः।	(वाम कर्णे)	***डां नमः।***	(दक्षिण नासा पुटे)
यैं नमः।	(वाम नासा पुटे)	***विं नमः।***	(मुखे)
च्चे नमः।	(गुह्ये)		

नवार्ण मंत्र

॥ ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे॥

इस प्रकार नवार्ण मंत्र भोग और मोक्ष दोनों ही प्रदान करने वाला अपने नाम के ही अनुरूप नौ वर्णों - **ऐं ह्रीं क्लीं चा मुं डा यै वि च्चे** से मिलकर बना यह तेजस्वी मंत्र गुप्त चामुण्डा तंत्र के अनुसार विहित विधि से नवरात्रि के अवसर पर सवा लाख जप किये जाने से पूर्णरूप से सिद्ध होता है। इनमें से प्रत्येक बीज की एक विशिष्ट साधना और विशिष्ट अर्थ है, किन्तु इस विस्तार में न जाते हुए भी यथोचित विधि से यह मंत्र जपे जाने पर पूर्ण भौतिक समृद्धि के साथ-साथ देवी के जाज्वल्यमान दर्शन का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

नवार्ण मंत्र सिद्धि जीवन की श्रेष्ठ सिद्धि है, स्थूल रूप से नवार्ण मंत्र का अर्थ है - **हे चित्त स्वरूपिणी महाकाली! हे आनन्दरूपिणी महालक्ष्मी! पूर्णत्व प्रदान करने वाली हे महा सरस्वती! ब्रह्म-विद्या प्राप्त करने के लिए हम साधक तुम्हारा ध्यान करते हैं। हे महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती स्वरूपिणी चण्डिके! आपको नमस्कार है। आप मेरे अन्दर अविद्या रूपी रज्जु की दृढ़ गांठ को खोल कर मुझे सभी दृष्टियों से पूर्ण मुक्त कर दें।**

इस प्रकार न्यास, प्रार्थना, ध्यान सम्पन्न कर साधक नवार्ण यंत्र का पंचोपचार पूजन सम्पन्न करें। पूजन में नवार्ण यंत्र को कुंकुम एवं सिन्दूर अवश्य लगायें, तत्पश्चात् चामुण्डा का आह्वान कर सीधे बैठकर महाकाली के चित्र के सामने निरन्तर देखते हुए मंत्र प्रारम्भ करें। एक बार मंत्र जप प्रारम्भ करने के बाद अपना स्थान नहीं छोड़े। जितनी माला मंत्र जप का संकल्प लिया है उतनी माला मंत्र जप अवश्य करें। नित्य साधना समाप्ति के पश्चात् निम्न श्लोक का उच्चारण करें।

देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

साधना सामग्री - 340/-

दिल्ली कार्यालय - सिद्धाश्रम 306, कोहाट एन्क्लेव पीतमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27352248, टेली फैक्स 11-27356700

रजिस्ट्रेशन नं. 55791 / 93
With Registrar Newspapers of India
Posting Date 06-07 FEB 2010

A.H.W

डी. एल. नं. 19070/96
Licence to post Without pre payment
Licence No. RJ/WR/PP04/2009-11

माह : मार्च में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगें व दीक्षा प्रदान करेंगें। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
05-06-07 मार्च

स्थान
गुरुधाम (जोधपुर)
20-21-22 मार्च

प्रेषक -
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342031 (राजस्थान)
फोन : 0291-2432209,2433623,
टेलीफैक्स - 0291-2432010

वर्ष - 30

अंक - 02